जन भगत कहे

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै

* * * * *

जन भगत कहे सुण भगवान, निरगुण आपणा ध्यान लगाईआ। हउँ बाली बुध अञाण, मूर्ख मुगध नज़री आईआ। किस बिध सानूं बख़्शें माण, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। कवण वस्त देवें दान, अमोलक इक्क वरताईआ। जगत नैण तैनूं ना सके पहचान, मन मत समझ ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ।

जन भगत कहण प्रभ दस्सीए की, समझ विच्च कुछ ना आईआ। किस सहारे रहे जी, जीवत जीवण जन्म तेरे लेखे पाईआ। पूरब जन्म की बीजिआ बी, फल कवण रिहा वरवाईआ। किस बिध नाता जुड़िआ साढ्डे तिन्न हत्थ काया सीं, घर मन्दर सोभा पाईआ। कवण प्रेम प्याला लिआ पी, मधुर रस इक्क चरवाईआ। कवण प्रीती गए थी, आपणा आप लुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच दे समझाईआ।

सच दस्स पुरख अकाल, तेरे अग्गे अरज़ोईआ। किस बिध बणे तेरे लाल, नाता सच जुड़ाईआ। जगत ग़रीबी दिसीए कंगाल, वस्त हत्थ ना कोई रखाईआ। दौलत ख़ज़ाना ना धन माल, महल्ल अट्टल ना कोई वडयाईआ। माला तसबी ना कोई मिरगछाल, आसण सिंघासण ना कोई सुहाईआ। पूजा पाठ हवन ना कोई विचार, तिलक ललाट ना कोई लगाईआ। संख नाद ना कोई आवाज़, आरती रूप ना कोई वरवाईआ। गेरू कपड़े ना कोई सन्त साध, मिट्टी ख़ाक ना कोई रमाईआ। सुबह शाम ना तेरी याद, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त ना कोई सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किस बिध लहणा रिहा चुकाईआ।

जन भगत कहण प्रभ होई हैरानी, सोच समझ रही ना राईआ। घर घर दिसे कूड़ शैतानी, शरअ करे लड़ाईआ। सुरत सवाणी बाल नादानी, तेरी समझ ना पाईआ। अमृत मिल्या ना ठंडा पाणी, निझर रस ना कोई चखाईआ। भेव चुक्कया ना चारे खाणी, बाणी समझ ना कोई समझाईआ। एसे कारन होई परेशानी, पसचाताप रिहा सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक्क वर, किस बिध मेला रिहा मिलाईआ।

श्री भगवन्त हो खुशहाल, खुशीआं नाल जणाइंदा। सुण मेरे लाडले लाल, हरि लालन दया कमाइंदा। जिस उप्पर होवां आप किरपाल, मेहर नज़र उठाइंदा। आपणी बख़्श देवां दौलत नाम सच्चा धन माल, प्रेम ख़ज़ीना इक्क भराइंदा। साची घालण लवां घाल, घोल घुमाई आपणा भेट चढ़ाइंदा। अन्दर वड़ के वसां नाल, हरदम आपणा रंग रंगाइंदा। एहो मेरी अवल्लड़ी चाल, जन भगतां दया कमाइंदा। अठ्ठ सठ तीर्थ ना देवां नुहाल, जोग अभिआस ना कोई कराइंदा। रसना जिह्वा ना पूजा पाठ, तसबी माला ना गल लटकाइंदा। आलस निंदरा ना देवां रात, दिवस वंड ना कोई वंडाइंदा। जिस वल मेहर नज़र कर के लवां झाक, अगली पिछली झाकी आप जणाइंदा। बन्द किवाड़ा खोल्ह के ताक, पड़दा दूई द्वैत उठाइंदा। बातन दस्सां आपणी बात, बीती कहाणी आप समझाइंदा। चरन प्रीती बख़्श के दात, वड्डी भगती आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खवाइंदा।

साची भगती सतिगुर चरन, आदि जुगादि समझाईआ। साची विद्या गुरमुख पढ़न, इक्को नाम धिआईआ। साची मंज़ल सन्त सुहेले चढ़न, आपणा पन्ध मुकाईआ। जन भगतां किरपा कर के पुरख अकाल लोकमात आवे खड़न, निरगुण निरवैर वेस वटाईआ। नाता तोड़ ज़ात पात वरन बरन, साची सरन इक्क समझाईआ। जो गुरसिख सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान ढोला पढ़न, तिन्नां मंज़ल पन्ध दो जहानां लिआ मुकाईआ। (१८ जेठ २०२१ बि बसो देवी दे गृह)

* * * * *

भगत कहे प्रभ दित्ता प्यार, अन्तर धार दित्ती प्रगटाईआ। साचा मन्दर सुज्झया घर बार, गृह आपणा वेख वखाईआ। दीआ बाती होया उजिआर, अन्ध अन्धेर रिहा ना राईआ। साची सखीआं सुणिआ मंगलाचार, गीत गोबिन्द इक्क अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहणा रिहा चुकाईआ।

भगत कहे प्रभ दस्सया प्रेम, परम पुरख दया कमाईआ। मेल मिलाया जिस तपस्या कीती हेम, कुण्ट इक्को खोज खुजाईआ। उस दे नाल मिल के पक्का होया नेम, नाता सके ना कोई तुड़ाईआ। दर्शन कर बिगसाए नैण, नेत्र खुशी मनाईआ। जिह्वा सिफ्त आई

कहण, साची सेवक बण के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रीती दित्ती समझाईआ।

जन भगत कहे प्रभ दिता प्रेम रस, वड रसीए दया कमाईआ। मेरी पूरी कीती आस, आशा आपणे नाल रखाईआ। निज आत्म कर के वास, वसल सच्चा दित्ता वखाईआ। दूई द्वैती कर के नास, नालश कूड़ी दित्ती मिटाईआ। सच नूर कर प्रकाश, दीपक दीआ डगमगाईआ। अट्ठे पहर बख्शी परभात, संध्या नज़र कोई ना आईआ। साचे सन्तां बख्शी जमात, गुरमुखां संग रखाईआ। लेखा लिखा के नाल कलम दवात, बिन भगतीउँ भगत दित्ते बणाईआ। एहो जेही अग्गे किसे ना दस्सी जाच, याचक आपणे गले लगाईआ। इक्को ढोला पढ़ा के धुर दी गाथ, दर घर साचे मेल मिलाया सैहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरसन दे के साख्यात, सज्जण सुहेले लए तराईआ।

जन भगत कहे प्रभ बख्शया नाता, आत्म परमात्म संग रखाईआ। निरगुण हो के बणया राखा, सरगुण देवे माण वडयाईआ। जिन्नां इक्को मन्नया शब्दी रूप आखा, आखर चोटी दए चढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा दाता, घाटा आपणे घर ना कोई वखाईआ। (१८ जेठ २०२१ बि बेलू राम दे गृह)

* * * * *

भगत कहे तेरे नाम मुंदरा, नैण मूंद नज़री आइंदा। पड़दा चुकावे गहरा धुंदला, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। उलटी उलझी खोल्हे गुंझला, अनडिठड़ी कार कमाइंदा। भेव खुलावे आदि मुढुला, परदा परे हटाइंदा। देवे इशारा बिन हत्थां उंगलां, सैनत अक्ख ना कोई लगाइंदा। लेख चुकाए गार डूंघला, साची तरनी इक्क तराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मंतर इक्क दृढ़ांइंदा।

भगत कहे तेरा नाम भबूती, भावनी पूर कराईआ। प्रेम प्यार सच आहुती, भगवन दए समझाईआ। करे प्रकाश काया कूटी, दह दिशा होवे रुशनाईआ। क्रिया चुक्के अंदरों झूठी, सच मिले वडयाईआ। चेत बसन्ती मौले रुत्ती, फुल्ल फुलवाड़ महकाईआ। सुरत सवाणी उठे सुत्ती, आपनड़े घर लए अंगढ़ाईआ। जगत जहान रहे ना रुठी, मिल पिर सतिगुर खुशी मनाईआ। आत्म बदल जाए ना रुची, परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर रखणा हत्थ टिकाईआ।

भगत कहे तेरा नाम गहणा, गहर गम्भीर नज़री आईआ। तेरा प्रेम प्यार वसे नेत्र नैणां, निज लोचण सोभा पाईआ। होए वसेरा चरनां बहणा, कँवल मिले वडयाईआ। नाम ढोला धुर दा कहणा, कह कह खुशी मनाईआ। समरथ स्वामी तूं भगतां देणा, दर दर घर घर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन्दर सुहञ्जणा देणा वखाईआ।

भगत कहे तेरा नाम सोहणा, स्वच्छ सरूपी नज़री आइंदा। आदि जुगादि जगत जग मोहणा, मोहणी रूप वटाइंदा। करे प्रकाश नेत्र लोइणा, लोचण अक्ख खुल्हाइंदा। दुरमत दाग़ फड़ फड़ धोणा, पापां मैल मिटाइंदा। बीज अगम्मी धुर दा बोणा, खेतर हल चलाइंदा। अमृत मेघ इक्क बरसौणा, पवण सुगन्धी नाल मिलाइंदा। पत्त डाल्ही घर महकौणा, मेहर मुहब्बत दया कमाइंदा। जगत विछुन्नी जोड़ जुड़ौणा, फड़ बाहों गले लगाइंदा। साची कुल्ली भाग लगौंणा, छप्पर छन्न डेरा लाइंदा। अनमुली वस्त आप वरतौणा, नाम निधाना झोली पाइंदा। सच निशाना तीर लगौणा, अणयाला हत्थ उठाइंदा। कर्म कांड दा डेरा ढौंणा, ब्रह्मांड खोज खुजाइंदा। राग नाद पन्ध मुकौंणा, धुन आत्मक आप समझाइंदा। मार आवाज़ भगत उठौंणा, चोबदार सेवक सेवक हो के सेव कमाइंदा। साचे मन्दर आप बहौंणा, जगत दवारा पन्ध चुकाइंदा। भेव अभेदा आप खुलौंणा, दूई द्वैती पड़दा लाहिंदा। दीआ बाती डगमगौंणा, जोती जोत नूर रुशनाइंदा। सेज सुहञ्जणी सोभा पौणा, सच सिंघासण बह बह खुशी मनाइंदा। नार कन्त इक्को रंग वखौंणा, आत्म परमात्म परमात्म आत्म संग निभाइंदा। दरस दीदार घर साचे इक्क दरसौंणा, दीद ईद चन्द रुशनाइंदा। अगला पिछला मंज़ल पन्ध मुकौंणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, धुर मस्तक लेख लिखाइंदा।

जन भगत कहे तेरा नाम संग, धुर दा संग बणाईआ। लोड़ रहे ना नहावण गंग, तीर्थ तट्ट ना कोई चतराईआ। ताल वज्जे ना कोई मरदँग, ढोलक छैणा ना कोई खड़काईआ। रसना जिह्वा ना कोई डण्ड, बत्ती दन्द ना राग अलाईआ। अन्तर आत्म गा के छन्द, सोहँ रूप समाईआ। तूं मेरा मैं तेरे नाल जावां हंड, हरि कन्त तेरी सरनाईआ। जगत विछोड़ा ना होवे रंड, बण सुहागण खुशी मनाईआ। अंगीकार लौणा अंग, जिउँ अञ्जण दित्ती वडयाईआ। तेरा भगत तेरा चन्द, तेरा नूर करे रुशनाईआ। तेरा दवारा तैथों लैणा मंग, दूजे दर मंगण ना जाईआ। तेरा प्रेम तेरा अनन्द, तेरा तेरे विच्चों प्रगटाईआ। तेरा सोहला तेरा ढोला तेरा छन्द, तेरा गीत बेपरवाहीआ। तेरी सेज तेरा पलँघ, तेरा मीत इक्क हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आसा मनसा आपणे नाल रखाईआ।

जन भगत कहे तेरा नामा मिट्ठा, विख नज़र कोई ना आईआ। चरन लग्ग के घर साचे डिट्ठा, जगत वणजारा हट्ट ना कोई विकाईआ। जिस दे नाल परम पुरख अकाल मिल्या पिता, पतिपरमेशवर बेपरवाहीआ। कोई समझ ना सके वार थिता, घड़ी पल सार कोई ना आईआ। बिन अक्खां नेत्र नैण अन्दरे अन्दर दिसा, दिशा आपणी पड़दा लाहीआ। वस्त अमोलक दे के हिस्सा, हिस्सेदार लिआ बणाईआ। लोड़ रही ना पढ़न दी चिट्ठी, अक्खर वक्खर दित्ता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मार्ग दस्स के निक्का, निक्यों वड्डे रिहा बणाईआ।

भगत कहे प्रभू तेरा नाम निक्का, नीकन नीका नज़री आइंदा। जिन्हां लावें धुर दा टिक्का, मस्तक जोत जगाइंदा। एथे कदे ना देवें पिच्छा, अग्गे आपणा संग निभाइंदा।

जुग चौकड़ी करे रिछा, रच्छक हो के वेख वखाइंदा। नाम पदार्थ पा के भिच्छा, ख़ाली झोली आप भराइंदा। अन्तम मरन तों पहलों जन्म दा कढ्ढें सिट्टा, सिखर चोटी आप चढ़ाइंदा। एहो खेल नित नवित्ता, जुग जुग कार कमाइंदा। जिस दा लेख अलेख कर के गुर अवतारां लिखा, लेख लेखणी नैण शरमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दे इक्क वर, दर तेरा तेरे विच्चों नज़री आइंदा।

जन भगत कहे तेरा नाम गूढ़ा, लालन इक्को रंग रंगाईआ। चतर सुघड़ बणा के मूढ़ा, मूरख मुगध लए तराईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी साचा दस्स इक्क दस्तूरा, दोस्त सज्जण लए बणाईआ। प्रेम प्यार दा रंगला दो बाहवां चाढ़ के चूड़ा, चूड़ी कंगण इक्को इक्क पहनाईआ। नाता तोड़ के क्रिया कूड़ा, किरकट परे देवें हटाईआ। ममता तोड़ माण ग़रूरा, ग़ुरबत दएं मुकाईआ। भगत मिलण लई हो मजबूरा, मुफ़लस हो के फेरा पाईआ। मेल मिला के ना दिसें दूरा, दूर दुराडा नेरन नेरा नज़री आईआ। एसे कारन तेरा तेरे भगतां कीता नाम मशहूरा, मशवरा तेरे नाल पकाईआ। तूं साहिब प्रेम प्यार दा दे पंघूड़ा, दो जहानां हुलारा इक्क लगाईआ। जिस वेले सहज सुभाओ काया मन्दर अंदर वड़ें मारें इक्क खंघूरा, ओस वेले अनहद वज्जे चाईं चाईंआ। बिन राग ताल सतार उपजे तूरा, तुरीआ मुख शरमाईआ। ओथे भगत कहे मेरी मनसा पूरा, भगवन मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, जुगा जुगन्तर जन भगतां नाम सुणावे आपणा मन्त्र, मतलब पिछला हल कराईआ। (२५ हाढ़ २०२१ बि गुरमीत सिंघ दे गृह)

* * * * *

हरि भगतां दे आदी मित्र, प्रभ आपणी लै अंगढ़ाईआ। साची धारों आपे निक्कल, तुध जन्मे कोई ना पिता माईआ। राह तक्कदे तेरा इतल बितल सितल, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। चौदां चौदां करके ज़िकर, ज़ाहर करन वडयाईआ। जगत अन्धेरे सभ नूं पिआ फ़िकर, फ़िकरां विच्च ध्यान लगाईआ। भगत कहण क्यों गिआ विछड़, सद विछड़यां मेल मिलाईआ। तेरा प्रेम सदा निरइच्छक, इच्छया जगत ना कोई वखाईआ। खड़े सवाली दर ते भिक्खक, भिच्छया दे वरताईआ। तत्तां वाला छड्ड के इष्ट, तेरा नाम सालाहीआ। किरपा निधान खोल्ह दे दृष्ट, दर्दी दर्द वंडाईआ। तेरे प्रेम प्यार दा साचा गृहसत, आत्म सेजा मिल के लईए हंढाईआ। चरना हेठां दब के स्वर्ग बहिश्त, उप्पर तेरा राह तकाईआ। की तैनूं आदत सदा कराउण दी मिन्नत, खुशामदां विच्च खुशी मनाईआ। तेरे विच्च अगम्मी हिम्मत, हम साजन हो के गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पड़दा दे उठाईआ।

पड़दा खोल्ह ठाकर स्वामी, जन भगत रहे जणाईआ। हर घट बैठा अन्तरजामी, अन्तश्करन वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी सिफ्तां वाली दस्सदा रिहों बाणी, अक्खरां नाम

वडयाईआ। सुरती काया मन्दर विच्च बणा के राणी, करदा रिहों सदा कुड़माईआ। अमृत बख्शदा रिहों ठंडा पाणी, निझर धार वहाईआ। शब्द मिलाउँदा रिहों हाणी, सोहणी सेज सुहाईआ। हुण भगत सुहेला सखी रिहा नहीं बाल अंञाणी, बाली बुध ना कोई वखाईआ। साड्डे ते आई तरल जुआनी, तरा तरा रहे समझाईआ। तेरी रसना वाली छड्डणी कहाणी, बत्ती दन्द ना कोई पढ़ाईआ। तूं मालक धुर दा साचा दिलजानी, रहबर इक्क अखवाईआ। तेरा मेला विच्च पेशानी, चशम तेरी रुशनाईआ। तेरा घर इक्क नुरानी, जोती जोत डगमगाईआ। तेरा नाउँ शहनशाह सुल्तानी, भूपत भूप भूप अखवाईआ। तेरा खेल सदा करनी मेहरवानी, क्यों बैठा देर लगाईआ। नेत्र तक्के अष्टभुज आदि भवानी, अक्ख अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लए मिलाईआ।

जन भगत कहे क्यों बैठा लुक, आपणा आप छुपाईआ। जे तेरा नाता पिउ पुत्त, पिता पूत लै बणाईआ। आपणे अञ्जण ओस गोदी चुक्क, जिथ्थे भार लग्गे ना राईआ। झिड़क झम्ब के परे देवीं ना सुट्ट, गुस्से नाल ना कदे डराईआ। साड्डे नाल कदी ना बहीं चुप्प, भेव खुल्हाउँणा चाईं चाईंआ। तेरे मिलण दी लग्गी भुक्ख, अमृत जाम देणा पिआईआ। जे प्रभू तेरे कोल नहीं है कुछ, क्यों श्री भगवान नाम धराईआ। सचखण्ड दवारिउँ जाह उठ, तेरी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे दे वडयाईआ।

जन भगत कहे जे तूं भुक्खा नंगा, क्यों आपणी रीत चलाईआ। जे तूं मंदिउँ बणा नहीं सकदा चंगा, चंगी की तेरी वडयाईआ। जे तूं बिना बन्दगीउँ तार नहीं सकदा आपणा बन्दा, बन्धन ना सके तुड़ाईआ। फेर तूं आदि जुगादि रहो रंडा, तेरा सुहाग सोभा कोई ना पाईआ। जे तूं दे नहीं सकदा अन्तर आत्म अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा दे जणाईआ।

जन भगत कहे वेख सचखण्ड निवासी, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। साड्डे उत्ते आई उदासी, धीरज धीर ना कोई धराईआ। मिल्या कोई ना पंडत काशी, कछैहरयां वाला पन्ध पार ना कोई कराईआ। मंज़ल चढ़े कोई ना घाटी, वाटी पन्ध ना कोई मुकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान पढ़ पढ़ थक्के गाथी, गायत्री मन्त्र नाल मिलाईआ। बावन अखशर बणांदे रहे स्वार्थी, सवाधान ना कोई कराईआ। धूप दीप घृत वाली करदे रहे आरती, पवणा हवण जणाईआ। तेरी सिफ्त सुणदे रहे हिन्दी उरदू अंग्रेज़ी फारसी, गुरमुखी जोड़ जुड़ाईआ। मुल्ला शेख़ मुसाइक तेरे बणे वेखे आड़्ती, धड़त वट्टयां रहे लगाईआ। तेरी सिफ्त सुणी लिखी इबारती, अक्खरां नाल रलाईआ। गुर चेले तरदे वेखे सफ़ारशी, जुग जुग कार कमाईआ। एह खेल अगम्मी धार दी, जो भगतां मंग मंगाईआ। इक्क सिक तेरे दीदार दी, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। सानूं प्रीत चाहीए उस यार दी, याराना ला ना मुख भवाईआ। मुहब्बत मिल जाए उस ग़मख़्वार दी, जो ग़मी खुशी विच्च बदलाईआ। वस्त मिल जाए उस प्यार दी, जिस प्यार विच्चों मुहब्बत लई प्रगटाईआ। तेरी गुरमुख सवाणी आपणा आप सवारदी,

सोहणा रूप धराईआ। मैं सेज सुहाउणी उस कन्त भतार दी, जिस दा झूला नज़र किसे ना आईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द तैनूं वाजां मारदी, तरा तरा जणाईआ। एह गल्ल नहीं विचार दी, बुध्धी समझ ना सके राईआ । जे मिलणी होवे निरँकार दी, नाते सारे दईए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाईआ।

जन भगत कहे मैं तेरा बच्चा, बचपन तेरी झोली पाईआ। जे तूं पिता पुरख अकाल मेरा सच्चा, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। आ के चुक्क आपणे हत्थां, सोहणा प्रेम वधाईआ। फेर तैनूं आपणा दुखड़ा हाल दस्सां, दर्दीआं दर्द दिआं जणाईआ। मैं रोवां बिन अक्खां, बिन मुखों हस्स वखाईआ। तेरे भगत सदा रुले विच्च कक्खां, गोदड़ीआं डेरा लाईआ। फिर वी तेरा गाउँदे रहे जसा, सिफ्ती सिफ्त तेरी वडयाईआ। तूं हो के लापता, पतिपरमेशवर आपणा मुख छुपाईआ। जगत खुआरी देंदा रिहों धक्का, धक्के नाल आपणी कार कमाईआ। अगला बचन सुणाऐ सच्चा, सच दईए दृढ़ाईआ। जे तूं हैं पुरख समरथा, क्यों कच्चआं नाल रलाईआ। मन्दर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ छड्ड के तैनूं इक्को टेकया मथ्था, मस्तक भाग दे बदलाईआ।जेहड़ा खज़ाना चार जुग दा ढका, कुंजी आपणे हत्थ रखाईआ। सानूं सदा पिआ विष्नूं उत्ते शक़ा, सच दईए दृढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

जन भगत कहण प्रभ दे दे कुंजी, क़ुफ़ल आपणा दे खुल्हाईआ। सति सच दी बख्श पूंजी, क्यों बैठा आप दबाईआ। तैनूं तरस नहीं आउँदा असीं थक्क गए खा खा दाल मूंगी, जगत जुग तेरा ध्यान लगाईआ। हुण रसना साड्डी रहणी नहीं गुंगी, गहर गवर दईए जणाईआ। साथों साभीं नहीं जांदी मिरचां वाली कूंडी, तेरे अग्गे दईए टिकाईआ। सानूं नहीं कोई लोड़ स्वाद लैण दी बूंदी, मिट्ठे रस ना कोई लुभाईआ। असां वस्त लैणी उह जेहड़ी हत्थ किसे ना आए ढूंडी, चार कुण्ट दह दिशा लक्ख चुरासी ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा झोली पाईआ।

जन भगत कहण प्रभ खोल्ह खज़ाना, खुशीआं नाल वरताईआ । नहीं ते तैनूं किसे नहीं कहणा दाना बीना, ढोला सिफ्त ना कोई सुणाईआ। हउँ बालक खालक तेरे मस्कीना, मुशकल हल्ल दे कराईआ। छड्ड के मक्का मदीना, काअबा तेरा वेख वखाईआ। रहमत करके ठांडा करदे सीना, सीतल धार वहाईआ। साथों खाधा ना जाए चीना, चिन्न तेरा इक्को नज़री आईआ। नाम खुमारी रंग चाढ़ दे भीन्ना, भिन्नड़ी रैण मिले वडयाईआ। नाता तुट्ट जाए लोक तीना, त्रैगुण लेखा दे मुकाईआ। सभ तों वड्डा जाण के तेरा वसीला, वास्ता तेरे नाल रखाईआ। तेरे दवारे हो अधीना, अदने हो के रहे जणाईआ। लभ्भदिआं लभ्भदिआं साड्डा अजे ना सुक्कया पसीना, ठंडा सीत ना कोई रखाईआ। सानूं दे दे अगम्मी उह नगीना, जिस दी ज़ौहरी क़ीमत कोई ना पाईआ। तूं साहिब स्वामी ना नर ना मदीना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ।

भगत कहण असीं हो गए वड्डे, रीती निक्कयां वाली भुलाईआ। प्रेम प्यार निशाने गड्डे, तेरे दवार झुलाईआ। प्रभू क्यों प्यार असाडे छड्डे, प्रीती परत ना क्यों लगाईआ। असीं तेरे हुक्मे अंदर बद्धे, बन्दना करके सीस झुकाईआ। जे नहीं आपणे भण्डार दे खोल्हणे जिंदे, फिर की जम जंदार तों लएं बचाईआ। तेरे नालों वक्खरे चंगे, जे आसा ना पूर कराईआ। जे तेरे नाल मिलके रहणा भुक्खे नंगे, फिर की तेरी कुड़माईआ। असीं बन्देआं वरगे बन्दे, बन्धन सारे जाईए तुड़ाईआ। जे किरपा करके टुट्टी गंढें, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। फिर शौह बण के नाल हंढें, शोहर इक्को इक्क अखवाईआ। घर दे के परमानंदे, परमार्थ आपणा दएं समझाईआ। पाटे चीथड़ जावण रंगे, रंग मजीठी इक्क चढ़ाईआ। साचे पौड़े चाढ़के डण्डे, डण्ड दूतां दएं तजाईआ। गोदी चुक्क के आपणे कंधे, मंज़ल अगली पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साड्डा लहणा झोली पाईआ।

लहणा दे दे धुर दे ठाकर, क्यों ठोकरां नाल ठुकराइंदा। बेशक तूं गहर गम्भीर वड्डा गुण सागर, बिन भगतां कम्म किसे ना आइंदा। बेशक तूं जोधा सूरबीर बहादर, बिन भगतां तेरा निशाना सीने विच्च ना कोई लगाइंदा। बेशक तूं वणज वपारी बड़ा सौदागर, बिन भगतां तेरा हट्ट ना कोई चलाइंदा। बेशक तूं करता करीम क़ादर, बिन भगतां तेरी क़ुदरत भेव ना कोई खुल्हाइंदा। बेशक तूं आदि जुगादी धुर दा आदल, बिन भगतां तेरी कचहिरी भुगतण कोई ना आइंदा। बेशक तेरा खेल अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर बातन, बिन भगतां तेरे नाल नाता ना कोई जुड़ाइंदा। असीं सारे रलके तैनूं आए आखण, अक्ख नैण ना कोई शरमाइंदा। जे वड्डिआई देवें कर कर भाषण, सिफ्तां नाल सालाहिंदा। जिंन्हां चिर आपणा देवें ना साचा राशन, रच्छया सच ना मात कराइंदा। असीं नहीं कहणा तैनूं पुरख अबिनाशन, अबिनाशी तेरा संग ना कोई निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर तेरा सच्चा नज़री आइंदा।

जन भगत कहण प्रभ अक्ख उघाड़, बिन नैणां नैण खुल्हाईआ । असीं मंगीए दिन दिहाढ़े, रैण अन्धेरी ना कोई रलाईआ। साड्डा तेरे अग्गे हाढ़े, हाढ़ा कढ्ढके रहे सुणाईआ। जे जग नालों वक्खरे करके सानूं दित्ता उजाड़, जग उजड़यां घर आपणे लए वसाईआ। बिन भगतां तैनूं कदी कोई ना करे ज़ाहर, तेरा नाम ना कोई ध्याईआ। क्यों बैठा बण के कायर, सूरबीर ना अक्ख खुल्हाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा संग लए निभाईआ।

जन भगत कहे प्रभ आदत छड्ड दे पुट्ठी, निर्भय हो रिहा जणाईआ। हुण क्यों लुक के बैठा गुट्ठी, यारी भगतां नाल लगाईआ। जिन्हां दी तेरे विच्च रुची, उह रो रो देण दुहाईआ। उहनां दी आत्म तेरे प्यार दी भुक्खी, परमात्म हो सहाईआ। विछोड़े अंदर हो के दुखी, बेबल होए नैणां नीर वहाईआ। बिरहों विछोड़े प्रेमण सुरती कुट्ठी, अगम्मी सट्ट लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सज्जण वेख वखाईआ।

जन भगत कहण आ के तक्क, ताकतवर फेरा पाईआ। झोली पा गरीबां हक़, हक़ीक़त वेख वखाईआ। पिछला लहणा पिच्छे छड्ड, अग्गे दे वडयाईआ। तैनूं रहण नहीं देणा अड्ड, वक्खरा घर ना कोई बणाईआ। तैनूं आपणे दवारे रहे सद्द, सद्दा प्रेम जणाईआ। जे ला के यारी जाए भज्ज, भगवन आपणा मुख भवाईआ। फिर तेरी अग्गे वधे ना कोई यद्द, बंस सरबंस ना कोई बणाईआ। तेरी सृष्टी दी ओथे हो जाए हद्द, ब्रह्मण्ड ना कोई शनवाईआ। जे भगतां जावें छड्ड, पल्लू गड्ड खुल्हाईआ। फिर तेरी करनी सारी हो जाए रद्द, क़ीमत कोई नज़र ना आईआ। तैनूं असीं कहीए गज्ज, जन भगत रहे जणाईआ। जे ना रक्खें साड्डी लज, मेहर नज़र उठाईआ। तैनूं छज्जीए पा के विच्च छज्ज, हत्थां नाल फटकारा दईए लगाईआ। फिर किथ्थे जावें भज्ज, प्रभ आपणा आप छुपाईआ। सच सच दईए दस्स, बिन दस्सयां रहण ना पाईआ। साड्डे बिरहों दी हो गई बस, बस्ते सारे दित्ते बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मिलणा चाईं चाईंआ।

जन भगत कहे तूं देंदा रिहों धोखे, जुग जुग वेस वटाईआ। असीं सारे तैथों औखे, बोलण विच्च कोई ना आईआ। धन्न भाग जे दित्ते मौके, धुर दा हुक्म सुणाईआ। भगत सुहेले वेख के रोंदे, दुखीआं दर्द वंडाईआ। तूं आया मुड़ के उहनां पैरीं भौंदे, भवजल विच्चों लए तराईआ। जो आपणी नींदे सौंदे, उहनां ग़फ़लत विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

जन भगत कहण तैनूं दईए अलामा, सिध्धे सादे रहे जणाईआ। असीं की जाणीए तूं धुर दा रामा, रामा जगत सीता लए परनाईआ। असीं की जाणीए तूं कृष्ना काहना, गोपीआं रास रचाईआ। असीं की जाणीए तूं वड बलवाना, चिल्लयां तीर चलाईआ। असीं की जाणीए तूं वड विदवाना, शास्त्र सिमरत वेद पुरान करें लिखाईआ। असीं की जाणीए तूं वड अमामा, ईसा मूसा मुहम्मद बणत बणाईआ। असीं की जाणीए तूं श्री भगवाना, नानक गोबिन्द धार चलाईआ। असीं की जाणीए तेरा झुलदा सदा निशाना, दो जहानां वज्जे वधाईआ। असीं की जाणीए तूं मर्द मरदाना, बेपरवाह अखवाईआ। असीं की जाणीए तूं आदि जुगादी मेहरवाना, मेहर नज़र उठाईआ। जिंनां चिर भगत गोदी ना चुक्कें बाल निधाना, अंञाणा आपणी उंगली लाईआ। मूर्ख मुग्ध बणा दे सुघड़ सिआणा, इक्को पट्टी नाम पढ़ाईआ। फिर तैनूं कहीए महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवाना, जिस सुरत दित्ती बदलाईआ। सन्मुख नज़री आएं तां जाणां, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तूं करनहार सर्ब कल्याणा, कला तेरी कलिजुग विच्च बिन कलमिउँ पार कराईआ।

जन भगत कहण की करीए तेरा कलमा, पढ़ पढ़ थक्की जगत लुकाईआ। जन भगत कहण की करीए तेरा कर्मां, कर्म कांड दी सार किसे ना पाईआ। जन भगत कहण की करीए तेरे धरमा, जगत धरमां करी लड़ाईआ। जन भगत कहण की करीए तेरे वरना, वरनां विच्चों तेरी प्रीत ना नज़री आईआ। जन भगत कहण की करीए गुरूआं चरनां, जेहड़े गुरू

तेरे चरनां ध्यान लगाईआ। जन भगत कहण की करीए उहनां नेत्रां हरनां फरनां, जिन्हां नेत्रां विच्चों तेरी निक्की धार इक्क चमकाईआ। सेज सुहञ्जणी ते सिध्धे तैनूं मिलणा, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। तेरे दवारे तों खाली कदी ना मुड़ना, ख़ाह मख़ाह करीए लड़ाईआ। जे तूं मालक ते तेरे नाल जुड़ना, क्यों कट्टीए मात जुदाईआ। साड्डे नहीं एह वस एह तेरा फुरना, जेहड़ा फुरनिआं विच्च उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला लए मिलाईआ।

जन भगत कहे सुत्ता उठ, वेला गिआ आईआ। सानूं नविआं नूं आ के पुच्छ, जो रो रो देण दुहाईआ। खाली हत्थ कोल नहीं कुछ, कछहिरा लंगोटी तेड़ ना कोई बंधाईआ। जगत नालों असीं गए रुस्स, जे तूं रुस्सया सानूं थां लभ्भे ना राईआ। जां कह दे नहीं तुसीं मेरे पुत्त, पिता पुरख अकाल ना मैं अखवाईआ। फिर काहनूं तेरे अग्गे जाईए झुक, आपणा सीस तेरी भेट चढ़ाईआ। असीं भवा के आपणा मुख, तैनूं आपणी पिठ दईए वखाईआ। तैनूं कितों नहीं मिलणा साड्डे वाला सुख, श्री भगवान तेरा ज्ञान सुणन कोई ना आईआ। पहलों जम्म के मां दी कुक्ख, हुण तेरी गोदी बैठे सुख मनाईआ। आपणा तेरी झोली पा के दुख, भार तेरे उत्ते चुकाईआ । वखांगे किस तरां साथों जावें छुट्ट, आपणा पल्लू छुड़ाईआ। असां दामन फड़या उह घुट्ट, जेहड़ा कमरकसे वेले गोबिन्द आपणे नाल जुड़ाईआ। जिस दे अगले हिस्से दोवें ढाई ढाई फुट्ट, गोबिन्द गोडयां हेठां ताईं रखाईआ। ओस वेले इक्क दिन अजीत वड्डे पुत्त लिआ पुच्छ, साहिब की एहदी वडयाईआ। गोबिन्द किहा आ लाडले सुत, तैनूं हौली हौली दिआं समझाईआ। जिहड़ा गुरसिख मेरे कमरकसे तों नीचे जावे झुक, मुख वेखण तों पहलों चरनां सीस निवाईआ। चरन डिगदे नूं पुरख अकाल लए चुक, आपणी गोद लए बठाईआ । मैं वेखां गुरमुखां दा साचा सुख, जिस सुख नाल तेरी भेटा रिहा चढ़ाईआ। अजीत किहा मैं वेखां उह अबिनाशी अचुत, जो अचन अचेत आपणी खेल खलाईआ। गोबिन्द किहा उह शब्दी मौले रुत्त, तत्तां वाली छड्डे लड़ाईआ। खण्डा खड़ग चिल्ला तीर कमान सारे देवे सुट , सोटा डांग हत्थ ना कोई उठाईआ। हौली जही गुरमुखां दे अंदर वड़ जाए चुप्प, पड़दा आपे लाहीआ। प्रेम प्यार नाल कहे तुसीं गोबिन्द दे सच्चे पुत्त, पोतरे मेरे दो जहान अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेटणहारा सदा दुःख, दरदीआं दर्द वंडाईआ।

अजीत किहा साहिब उह है कौण, जिन्हां दी करें वडयाईआ । गोबिन्द किहा उह मेरे पुरख अकाल नाल औण, आ के लोकमात खुशी मनाईआ। इक्को धुर दा ढोला गौण, दूजी करन ना कोई पढ़ाईआ । उह आत्म सेजा सौण, जगत लेफ तलाई कम्म किसे ना आईआ। वैरागाँ अंदर गौण, खुशीआं अंदर भौण, पकवान दी पका के तौण, कद्दे लैण खाईआ। उन्हां दा मुक्क जाए अवण गवण, मन हँकारी कोल ना रहे रौण, सेवा करे उणंजा पौण, दो जहान निउँ निउँ सीस झुकाईआ। उन्हां दे दुखड़े आप आए मिटौण, दरगाह साची सच बहौण, सचखण्ड दवार वखौण, वक्खरा राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वाधा आपे आए वधौण, वधीआ आपणा खेल कराईआ।

खेल कराए आपणा वधीआ, वाहवा वड्डी वडयाईआ। जिस दा राह तकदिआं बीतीआं पिछलीआं सदीआं, सद्दे, दे दे दो जहान सदाईआ। होके देंदीआं रहीआं वदीआं सुदीआं, सुखला किशना पक्ख गाईआ। जिस दे वेंहदिआं कोटन कोट रैणां रातां लंघीआं, आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस दे पिच्छ `कोटन कोट सवाणीआं पट्टीआं वाहीआं कंघीआं, नेत्र नैणा कज्जल धार बणाईआ। जिस दे पिच्छेसाड़ीआं पहन के लाईआ अंगीआं, तणी नाल तणी दित्ती गंढाईआ। जिस दे वेखण नूं प्यार अंदर सुहागणां होईआं रंडीआं, जगत कन्त हंढाईआ। एहो जिहीआं मंगाँ गुरमुखां मंगीआं, कबीर जुलाहा दए गवाहीआ। उह सुहागण जिन्हां दे कन्नी पईआं धुर दीआं डण्डीआं, माणक मोती नाल मिलाईआ। उह मंदीआं होईआं चंगीआं, जिन्हां नूं आपणे नाल मिलाईआ। उह सच सेज सुहंदीआं, सोभावन्त करी कुड़माईआ। उह प्रीतम दे रंग रंगीआं, जिस दा रंग उतर कदे ना जाईआ। उह आदि जुगादि कदे ना होवण नंगीआं, ओढन इक्को दिता पाईआ। उह छड्ड जाण सुणना राग सुरंगीआं, तबलिआं विच्च ना मन लगाईआ। उह करके पार हद्दां लंघीआं, आर पार आपणा डेरा लाईआ। साचे मन्दर बहि के गौंदीआं छन्दीआं, शहनशाह तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां बणे धुर दा संगीआ।

जे संगी बणे ना सगला, भगत भगवान तैनूं कोई ना गाईआ। जे लेखा ना चुकावे अगला, ख़बर अगम्म सुणाईआ। फिर तैनूं सारे कहीए पगला, साहमणे हो के दईए जणाईआ। जे तूं रखें गंधला, गुंझलां विच्च फिराईआ। की तेरा गौणा चार मंगला, धुनीआं विच्च शनवाईआ। तेरे किसे कम्म नहीं औणा प्रभू बंगला, जिंन्हां चिर भगत मिलण ना आईआ। क्यों लभ्भें विच्चों जा के जंगलां, जंगली फिरदे चोपाए पंखेरू भज्जण वाहो दाहीआ। बिना भगतां तैनूं किसे नहीं करनी बन्दना, किहदे कोलों आपणी कराएं वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगत रहे सुणाईआ। (३ मध्घर २०२१ बि हरि भगत दवार जेठूवाल)

* * * * *

जन भगत कहे चंगा अस्थान, हरि चरन मिले वडयाईआ । जन भगत कहे चंगा मकान, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। जन भगत कहे चंगा निशान, निरगुण निरवैर इक्क झुलाईआ। जन भगत कहे चंगा हुक्मरान, नर हरि बैठा सोभा पाईआ। जन भगत कहे चंगा दीप महान, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ। जन भगत कहे चंगा इक्क मैदान, जन भगत भज्जण वाहो दाहीआ। जन भगत कहे चंगा श्री भगवान, बिन भागाँ भाग रखाईआ। जन भगत कहे चंगा राम, सच सिँघासण दए सुहाईआ। जन भगत कहे चंगा निज़ाम, सिर सके ना कोई उठाईआ। जन भगत कहे चंगा जवान, सूरबीर आप अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे दए वडयाईआ।

जन भगत कहे चंगा दवारा, इक्को नज़री आईआ। जन भगत कहे चंगा घर बारा,

पुरख अबिनाशी बणत बणाईआ। जन भगत कहे उच्चा मनारा, महल्ल अट्टल वेख वखाईआ। जन भगत कहे जलवा नूर परवरदिगारा, मुशर्द बैठा बेपरवाहीआ। जन भगत कहे होवे उजाला, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। जन भगत कहे चंगा धर्मसाला, सोहणी बणत बणाईआ। जन भगत कहे चंगा हवाला, बिआनां नाल ना कोई समझाईआ। जन भगत कहे चंगा प्रितपाला, प्रितपालक हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप खिलाईआ।

जन भगत कहे चंगा राज, राजन इक्क अखवाईआ। जन भगत कहे चंगा ताज, पंचम मुख सुहाईआ। जन भगत कहे चंगा नवाब, नौबत इक्क वजाईआ। जन भगत कहे चंगा रिवाज, भगतां मेल मिलाईआ। जन भगत कहे चंगा अहिबाब, मुहब्बत विच्च समाईआ। जन भगत कहे चंगा आदाब, प्रीती अंदर सीस झुकाईआ। जन भगत कहे चंगा महाराज, महिंमा अकथ्थ कथाईआ। जन भगत कहे चंगा महिताब, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ।

जन भगत कहे चंगा महल्ला, महिफ़ल इक्क लगाइंदा। जन भगत कहे चंगा एह कल्ला, अकल कलधारी सोभा पाइंदा। जन भगत कहे चंगा सच सिँघासण मल्ला, सति दवारे डेरा लाइंदा। जन भगत कहे अछल अछला, वल छल धारी खेल खिलाइंदा। जन भगत कहे जोती दीपक बल्ला, नूर इक्को डगमगाइंदा। जन भगत कहे फड़ावे पल्ला, पल्लू आपणे नाल बंधाइंदा। जन भगत कहे बल्ला बल्ला, वाहवा सिफ्त सलाहिंदा। जन भगत कहे मीआं उह अल्ला, जो अलैहदगी विच्च डेरा लाइंदा। जन भगत कहे उह धुर दा धना, धनाड इक्को इक्क अखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाइंदा।

जन भगत कहे चंगा महिबूब, मुहब्बत विच्च समाईआ। जन भगत कहे चंगा अरूज, सोहणी बणत बणाईआ। जन भगत कहे चंगा महिफ़ूज़, ढाह सके कोई ना राईआ। जन भगत कहे चंगा मक़सूद, मंज़ल इक्क दरसाईआ। जन भगत कहे चंगा हदूद, हद्दां विच्च ना कोई वंडाईआ। जन भगत कहे चंगा मौजूद, सच दवारे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ।

जन भगत कहे चंगा गहर गम्भीर, गवर नज़री आइंदा। जन भगत कहे चंगा बिन सरीर, सति सरूपी हरि अखवाइंदा। जन भगत कहे चंगा चोटी चढ़ बैठा अख़ीर, आख़र आपणा डेरा लाइंदा। जन भगत कहे चंगा बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र कोई ना पाइंदा। जन भगत कहे चंगा लातस्वीर, रूप रंग रेख ना कोई बणाइंदा। जन भगत कहे चंगा मशीर, मशवरा आपणे नाल जुड़ाइंदा। जन भगत कहे चंगा मुनीर, जोती नूर डगमगाइंदा। जन भगत कहे चंगा मदद्गीर, मुद्दा सभ दा वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे सोभा पाइंदा।

जन भगत कहे चंगा शहनशाह, शाहां सिर अखवाईआ। जन भगत कहे चंगा पावे राह, रहबर इक्क समझाईआ। जन भगत कहे चंगा इक्क मलाह, बेड़ा कंध उठाईआ। जन भगत कहे चंगा देवे इक्क सलाह, साची सिख्या सच समझाईआ। जन भगत कहे चंगा इक्को नां, नाउँ निरँकारा दए दृढ़ाईआ। जन भगत कहे चंगा इक्को पिउ मां, आदि जुगादि ना मरे ना जाईआ। जन भगत कहे चंगा पकड़े बांह, फड़ बाहों गले लगाईआ। जन भगत कहे चंगा निथाविआं देवे थां, सच दवारा आप सुहाईआ। जन भगत कहे हँस बणाए कां, कागों हँस बणाईआ। जन भगत कहे चंगा सिर देवे ठंडी छाँ, छहिबर नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल आपणी आप प्रगटाईआ।

जन भगत कहे चंगा चंगेरा, चंगी तरां जणाईआ। जन भगत कहे चंगा नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जन भगत कहे चंगा खेड़ा, सोहणा घर वखाईआ। जन भगत कहे चंगा करे निबेड़ा, फ़ैसला हक़ो हक़ सुणाईआ। जन भगत कहे चंगा बन्ने बेड़ा, डुबदे पार लंघाईआ। जन भगत कहे नाता जोड़े तेरा मेरा, इक्को घर वसाईआ। जन भगत कहे चंगा सभ तों वड्डा रक्खे जेरा, गम्भीर गहर गवर अखवाईआ। जन भगत कहे चंगा मेटे अन्धेरा, अन्ध कूप दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वडयाईआ।

जन भगत कहे चंगा अबिनाशी, जो आपणयां लए मिलाईआ। जिस दी जोत इक्क प्रकाशी, प्रकाशवान अखवाईआ। जो मेटणहारा अन्तर उदासी, धीरज धीर बंधाईआ। आदि जुगादि करे राखी, रक्खक हो के सेव कमाईआ। जन भगतां चुका के लहणा बाकी, देणा झोली पाईआ। घर मन्दर खोल्ह के ताकी, तकवा आपणा दए जणाईआ। साहिब संगी साथी देवे दाती, दाता हो के दए वरताईआ। धर्म दवार दी खोल्ह के हाटी, बण बणजारा दए लुटाईआ। पन्ध मुका के पिछली वाटी, अगले मार्ग लाईआ। मेल मिला के कमलापाती, कँवल नैण रंग रंगाईआ। धुर दा सज्जण बणके साथी, सगला संग रखवाईआ। बण सहारा नाथ अनाथी, अनाथां दए वडयाईआ। जन भगतां सदा पुच्छे वाती, वतनां वाले वेख वखाईआ। सच सुनेहड़ा दे के पाती, पतरका आपणी दए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे खुशी मनाईआ।

जन भगत कहे चंगा उह गृह, जिस घर डेरा लाइंदा। सदा स्वामी इक्को रहे, रहबर इक्क अखवाइंदा। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सृष्टी करदा लै, उत्पत आप उपाइंदा। सो सच संदेशा धुर दा कहे, हरिजन आप जणाइंदा। सच दवारे जाणा बहि, स्वर्ग बहिश्त नाता दोहां तुड़ाइंदा। जिथ्थे परलो कदे करे ना लै, महांपरलो धार ना कोई रुढ़ाइंदा। उह दवारा जन भगतां दए, दूसर हत्थ ना किसे फड़ाइंदा। जन भगत क्यों करे हाए हाए, जिसदा हासल ज़रबां नाल वधाइंदा। साहिब स्वामी बेपरवाहे, बेपरवाही विच्च रखवाइंदा। धुर दा नाता तोड़ निभाए, अद्ध विचकार ना कोई तुड़ाइंदा। साचे मन्दर लै के जाए, मंज़ल पन्ध चुकाइंदा। धर्म दवारे लए टिकाए, टिक्का मस्तक नाम लगाइंदा। सत पदार्थ गुरमुख खाए,

चार पदारथ पन्ध मुकाइंदा। परमार्थ पिच्छे स्वार्थ रखाए, स्वार्थ विच्च सफ़ारश अगे ना कोई कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा।

हरि भगत कहे चंगा भगवन्त, भावी मेट मिटाईआ। मेल मिलाए बण के कन्त, कन्तूहल खुशी वखाईआ। सो गुरमुख कहीए सच्चा सन्त, जिस सति मिली वडयाईआ। सतिगुर घर बणाई बणत, घड़न भन्नणहार वेख वखाईआ। नाम दस के आपणा मंत, मतलब सभ दे वेख वखाईआ। दे वड्डिआई विच्चों जीव जंत, जंता विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म समझाईआ। जे कोई प्रभ दा पाउणा चाहे अन्त, अन्त विच्च किसे ना आईआ। सो तरया जो करे मिन्नत, मिन्नत विच्च सरनाईआ। बिन भगतां प्रभ मिलण दी किसे कोल नहीं कोई हिम्मत, हौसला सके ना कोई वधाईआ। चारे कुण्टां वेख लउ सिम्मत, समेरू वरगे रोंदे मारन धाईंआ। कोटन कोट लभ्भदे अणगिणत, गिणतीआं विच्च ना कोई गिणाईआ। प्रभ सभ नाल करके थोड़ी थोड़ी इल्लत, आलृणिउँ बोट भुंजे देवे सुटाईआ। जे किसे नूं धार बख्श देवे किणक, किणका विच्च टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ।

जन भगत कहे चंगा जग मोहण, मोहणी नज़री आइंदा। जिस नूं वेख के आवे रोण, रोन्दयां गले लगाइंदा। जेहड़ा दुरमत मैल आया धोण, धोबी बण के सेव कमाइंदा। जेहड़ा टुट्टयां मज्जयां उत्ते आया सौण, पलँग रंगीले परां हटाइंदा। जेहड़ा भगतां ढोला आया गौण, आपणा राग ना कोई अलाइंदा। जेहड़ा आपणा वाधा आया वधौण, वेल भगतां झोली पाइंदा। जेहड़ा गुरमुख नारी आया परनौण, परौहणा दो जहानां इक्को नज़री आइंदा। जेहड़ा कोझी कमली घर आया वसौण, वास्ता आपणे नाल रखाइंदा। जेहड़ा आपणे भगतां दी भेटे चढ़ौण आया धौण, तत्त ना कोई रखाईआ। जेहड़ा उजड़े आया वसौण, साचे मन्दर दए बहाईआ। ओस दा खेल जाणे कौण, कवण सके समझाईआ। लक्ख चुरासी नाल दग़ा आया कमौण, दाग़ी करे थाउँ थाईंआ। जन भगतां मज़ा आया चखौण, मज़हबां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। कूड़ी क्रिया आया दुरकौण, नाम खण्डा हत्थ उठाईआ। विछड़यां आया मिलौण, मिल मिल खुशी मनाईआ। नाद अगम्मी आया वजौण, धुर दा ताल सुणाईआ। जगत ग़रीबी आया गवौण, गवाह शहादत गुर अवतार पैगम्बर दए भुगताईआ। आपणा दरस आया दखौण, पड़दा आप उठाईआ। रुलदे बाले लाले आया परचौण, लालच आपणा नाम झोली पाईआ। भगतां दे अंदरों कूड़ी क्रिया आया डरौण, भैड़ी निकम्मी बाहर कढ्ढाईआ। साची तरनी आया तरौण, चप्पू आपणा नाम इक्क लगाईआ। आपणा नाम पूरा पूरन हो के आया अखवौण, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान वज्जे वधाईआ। जन भगतां सचखण्ड दवारे आया बहौण, बैठा सोहण सिँघ खुशी मनाईआ। पिछला उलृामा आया लौहण, राम रमईया बेपरवाहीआ। जन भगतां सुत्यां आया जगौण, जुग विछड़यां रिहा उठाईआ। पिछले लेखे आया कढौण, वही खाता नाल बंधाईआ। रुस्सयां आया मनौण, रस्ते रिहा पाईआ। गुस्सयां आया गवौण, गिले रिहा चुकाईआ। डिग्गयां आया उठौण, ढठ्ठयां दए तकड़ाईआ। आपणी गोद विच्च जगत ठरयां निध्धे आया करौण, कूड़ी वा ना लागे राईआ। प्रेम प्रीती अंदर

आया हसौण, हस्ती विच्च समाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणा दरस आया दरसौण, दरस नाल हरस दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बच्चयां बाल्यां नन्नआं आया परचौण, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। (३ मध्घर २०२१ बि अमर सिँघ दे घर)

* * * * *

हरि सज्जण स्वामी ठाकर मेरे, जन भगत रहे जणाईआ। अबिनाशी करते आ वस नेड़े, शाह पातशाह शहनशाह तेरी इक्क सरनाईआ। सच दवारे काया मन्दर अंदर ला के डेरे, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जुग चौकड़ी कोटन काल बीते बथेरे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणा पन्ध मुकाईआ। चार कुण्ट दह दिशा ब्रह्मण्ड खण्ड मारके वेखे गेड़े, पुरी लोअ आकाश ध्यान लगाईआ। आदि जुगादि तेरा खेल कोई ना जाणे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, साहिब तेरी सरनाईआ।

जन भगत कहे प्रभ साहिब सच्चे, सच तेरी वडयाईआ। लोकमात जगत नेत्र पंज तत्त किसे ना लभ्भे, लक्ख चुरासी सार कोई ना पाईआ। जगत वैरागी खोजण शिवदवाले मट्ठे, मन्दर मसीत ध्यान लगाईआ। गुरूदवारे फिरन नट्ठे, तीर्थ अठसठे वाहो दाहीआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान पढ़ पढ़ थक्के, जगत विद्या कर पढ़ाईआ। नेत्र खोल्ह वेखण मक्के, काअबिआं वल्ल नैण उठाईआ। जगत दवारे पार करन हद्दे, पान्धी आपणा पन्ध मुकाईआ। ढोल नगारे मरदंग जगत दवारे वज्जे, राग रागणीआं नाल मिलाईआ। साध सन्त फिरन नंगे, तन धूढ़ी खाक रमाईआ। अगनीआं कोल बह बह मघे, तत्तव तत्त जलाईआ। चारों कुण्ट वेख अन्धेरी मस्से, जन भगत देण दुहाईआ। अबिनाशी करते श्री भगवान तेरा मार्ग कोई ना दस्से, पड़दा सच ना कोई खुल्हाईआ। चार वरन अठारां बरन कोई ना वेखे इक्को अक्खे, आखर मेल ना कोई मिलाईआ। नाता तुट्टया भैण भाई सके, पिता पूत ना कोई वडयाईआ। कूड़ी क्रिया घर घर जूठ झूठ पाए रट्टे, रसना नाम ना कोई धिआईआ। जगत मिसाल धन्ने मिल्या वट्टे, बजर कपाटी फट्टे परे ना कोई हटाईआ। जन भगत कहण प्रभ तुध बिन पत कोई ना रक्खे, सिर हत्थ ना कोई टिकाईआ। चारों कुण्ट मिलण धक्के, गुर अवतार पीर पैगम्बर पल्लू गए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, श्री भगवान हो सहाईआ।

जन भगत कहे मेरे भगवन्त, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। तूं मालक खालक धुर दा कन्त, कन्तूहल तेरी सरनाईआ। तेरी महिंमा सदा बेअन्त, कथनी कथ ना कोई जणाईआ। तूं आदि जुगादी पंडत, विष्न ब्रह्मा शिव करें पढ़ाईआ। सच दवारे तेरे गुर अवतार सदा मंगत, भिक्खक झोलीआं रहे भराईआ। तेरा लेखा जेरज अंडज, उत्भुज सेतज तेरी धार नजरी आईआ। तेरे दवारे इक्को मिन्नत, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जन भगतां अन्तर वेख आपणी सिम्मत, साहिब सतिगुर फेरा पाईआ। जगत खुआरी मेट ज़िलत, बेनज़ीर हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

जन भगत कहण प्रभ तेरी ओट, ओट अकाल रखाईआ। शब्द अगम्मी ला चोट, सोई सुरत उठाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर गवाईआ। आपणे मिलण दी बख्श सोच, दूजी समझ रहे ना राईआ। लहणा चुका दे चौदां लोक, चौदां तबक चरनां हेठ दबाईआ। सच सुणा दे इक्क सलोक, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। तेरा दर्शन करीए रोज़, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। रंग चढ़ादे काया माटी पोश, तन ख़ाकी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तर आत्म जोड़ जुड़ाईआ।

जन भगत कहण प्रभ अन्तर पेख, बाहरों नज़र कोई ना आईआ। सच महल्ला तेरा देस, रविदास चमारा गिआ समझाईआ। साढे तिन्न हत्थ अंदर अव्वलड़ा भेस, बिन रंग रूपी सोभा पाईआ। सेजा छड्डके बाशक सेज, लेख करें बेपरवाहीआ। सच सुनेहड़ा धुर दा भेज, शब्द अगम्मी राग अलाईआ। जोती जलवा दे तेज, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात छड्ड के गए देस, थिर रहण कोई ना पाईआ। कोई मूंड मुंडाया किसे रखाए केस, केशव तेरा भेद कोई ना आईआ। सच संदेशा नर नरेशा दे के गिआ गुर दस्मेश, दह दिशा कर पढ़ाईआ। पतिपरमेशवर बदल के आपणा भेस, पुरख अकाला फेरा पाईआ। वेख वखावे मुसाइक मुल्ला शेख़, पंडत पांधे पड़दा लाहीआ। जन भगतां खोहले आपणा भेत, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लहणा दे मुकाईआ।

जन भगत कहण प्रभ उठ सुत्ते, आपणी लै अंगढ़ाईआ। तेरा वेखीए खेल अबिनाशी अचुते, पतिपरमेशवर तेरी की वडयाईआ। जुग चौकड़ी जन भगतां वात पुच्छें, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। कलिजुग अन्तम किहड़ी गल्लों रुस्सें, नेत्र अक्ख बदलाईआ। केहड़े मन्दर लुकें, सचखण्ड आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव दे खुल्हाईआ।

जन भगत कहण प्रभ तैनूं लभ्भदे, दो जहान ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन सजदे, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जन भगत कहण लेख मुका दीन मज़्हब दे, कलिजुग अन्तम फेरा पाईआ। भेव खुल्हा आपणे अदद दे, अदालत इक्को इक्क लगाईआ। हुक्म दे अगम्मी मदद दे, मालक सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। वेख खेल मातलोक जगत दे, कलिजुग जीव तैनूं बैठे भुलाईआ। तेरे भाण्डे बूंद रक्त दे, पंज तत्त काया चोले रहे हंढाईआ। एह भरे कूड़ कुड़िआरी शरकत दे, लाशरीक तेरी समझ कोई ना आईआ। जन भगत तेरे दरस नूं तरसदे, निज नेत्र अक्ख उठाईआ। अमृत मेघ अनोखा बरस दे, झिरना इक्क झिराईआ। आपणे मिलण दा सोहणा सुहञ्जणा वक्त दे, घड़ी पल राह तकाईआ। पड़दे लाह के अर्श फर्श दे, सनमुख हो के सोभा पाईआ। बिरहों विछोड़े अंदर बण वैरागी तड़फदे, मीन जल मिसाल ना कोई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा वेख वखाईआ।

जन भगत कहण प्रभ कर निबेड़े हक़ दे, हकीकत वेख वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो गए दस्सदे, चारे जुग फ़रमाण सुणाईआ। तेरे मिलण दीआं आसां आए रक्खदे, भरवासा दे धराईआ। बिन तेरी किरपा साडे काया खेड़े मूल ना वसदे, घर वज्जे ना नाम वधाईआ। प्रेम प्रीती अंदर चोली रंगदे, काया चोला दे बदलाईआ। वस्त अमोलक इक्को मंगदे, दर ठांडे झोली डाहीआ। नाम पदार्थ धुर दा वंड दे, अतोट तोट रहे ना राईआ। भेव खुल्हा दे हँ ब्रह्म दे, सो पुरख निरञ्जण तेरी सरनाईआ। बेशक असीं पुतले माटी चम्मदे, हड्ड नाड़ी जोड़ जुड़ाईआ। असीं सहारे पवण दम दे, साह साह तेरा रूप नज़री आईआ। भेव खुल्हादे आपणे अगम्म दे, अलक्ख अगोचर तेरी ओट रखाईआ। कोटन कोट जीव जंत जननी हो के जन जणदे, बच्चे गोदीआं विच्च टिकाईआ। बिन तेरी किरपा तैनूं कोई ना मन्नदे, मनसा पूर ना कोई कराईआ। कलिजुग खेल अन्धेरे अन्ध दे, साचा नूर ना कोई रुशनाईआ। गुरमुखां मेले होण ना गुजरी चन्द दे, चारों कुण्ट जगत हलकाईआ। नाते जुड़े नार दुहागण रंडदे, नर हरि कन्त ना कोई मिलाईआ। करन इशनान अठसठ तीर्थ गंग दे, दुरमत मैल ना कोई धुआईआ। रस जाणे ना कोई आत्म अनन्द दे, रसना जिह्वा जगत हलकाईआ। वेख झगढ़े भेख पखण्ड दे, जन भगत देण दुहाईआ। तेरा नाम कोटन कोट फिरन वंडदे, मालक नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां हो सहाईआ।

जन भगत कहण प्रभ सच्ची अरदास, अरज़ोई इक्क सुणाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी वसणा पास, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। दीवा बाती कमलापाती सच घर कर प्रकाश, जोती नूर ज़हूर कर रुशनाईआ। तूं मालक ख़ालक दाता सतिगुण तास, गहर गम्भीर तेरी वडयाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण पावें रास, गोपी काहन नाच नचाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत खेलें खेल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल आपणी धार वखाईआ। बोध अगाध शब्द नाद वजावें आप, जाप धुर दा दएं समझाईआ। परवरदिगार सांझे यार बणाके पाक, पतित पापी दएं तराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करके दासी दास, सेवा सच सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दे वडयाईआ।

जन भगत कहे प्रभ मेरे गुसाईं, सति सच तेरी ओट तकाईआ। आ जा बण के पान्धी राही, रहबर नूर खुदाईआ। कलिजुग मेट अन्धेरा छाही, चार कुण्ट होवे रुशनाईआ। ग़रीब निमाणयां पकड़ बांहीं, कोझे कमलयां गले लगाईआ। माण दवा दे छींबे नाई, झीवर रंग रंगाईआ। दरस दिखा जा धुर दे माही, शाह सवारे फेरा पाईआ। तेरे पिच्छे गोबिन्द बूटा पुट्टया इक्को काही, कायर समझ कोई ना पाईआ। नानक गाया दाया दाई, दो जहानां इक्क अखवाईआ। पीर पैगम्बरां किहा तेरी सरनाई, वाहिद इक्को ओट तकाईआ। देवत सुर किहा आदि शक्त माई, शख्सीअत समझ कोई ना पाईआ। गुर अवतार पुरख अकाल कह के रहे सुणाएं, ढोले सोहले छन्दा बन्दां विच्च गाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहे कुरलाई, उच्ची कूक कूक जणाईआ। चार वेद देण दुहाई, अठ्ठ दस ध्यान लगाईआ।

अञ्जील कुरान रही सुणाए, तीस बतीस वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेशवर तेरी समझ किसे ना आई, मन मत बुध चले ना कोई चतुराईआ। कर किरपा जन भगतां रमज़ इक्क लगाई, जिस दी लग मातर जग नज़र कोई ना आईआ। बण सुहेला देवीं ठंडीआं छाईं, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

जन भगत कहण प्रभ कलिजुग आया, काली रैण अन्धेरी छाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा छाया, छहिबर आपणी इक्क लगाईआ । बंधन पाया त्रैगुण माया, ज़ंजीर सके ना कोई तुड़ाईआ। पंच विकारा दए दुहाया, काम क्रोध लोभ मोह हलकाईआ। मन मत करे लड़ाया, बुद्धी धीर ना कोई धराईआ। हरि का नाउँ सर्ब भुलाया, हिरदे हरि ना कोई वसाईआ। मस्तक सीस ना कोई झुकाया, नास्तिक दिसे लोकाईआ। साचा शस्त्र ना किसे उठाया, शत्रु सके कोई ना घाईआ। गुर का मन्त्र ना किसे कमाया, काम कामनी वज्जी वधाईआ। गगन गगनंतर चढ़ के दरस किसे ना पाया, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। जन्म कर्म दी हरस ना कोई मिटाया, हवस सके ना कोई बुझाईआ। अर्श फर्श तेरा राह तकाया, दह दिशा अक्ख खुल्हाईआ। श्री भगवान तूं ही तरस कमाया, जन भगत रहे कुरलाईआ। सम्मत सम्मती बीत गए सम्मत इक्कीसा आया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, धुर मस्तक लेख लखाईआ।

जन भगत नाल कहण गुस्से, प्रभू इक्क जणाईआ। साडे कोलों काहनूं लुकें, करें आप जुदाईआ। गुरमुखां पैंडे पिछले मुक्के, अगला राह लखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वडयाईआ।

सच वड्डिआई देवे आप प्रभ, सो पुरख निरञ्जण दया कमाईआ। भगत भगवान साचे लभ्भ, हरि पुरख निरञ्जण मेल मिलाईआ। सन्त सुहेले बणा के आपणी यद, एकँकार करे कुड़माईआ । गुरमुख लक्ख चुरासी नालों करके अड्ड, आदि निरञ्जण जोती नूर करे रुशनाईआ। गुरसिखां पार कराके कूड़ी हद्द, अबिनाशी करता भेव चुकाईआ। मुरीद मुर्शद लए सद्द, श्री भगवान साहिब गुसाईंआ। पारब्रह्म ब्रह्म वजाए नद, धुर दा राग अलाईआ। कूड़ कुड़िआरा जगत विहारा देवे छड्ड, सच दवारा इक्क दरसाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, हरिजन साचे लेख लखाईआ। धुर दा मार्ग इक्को दस्स, आत्म अन्तर करे पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरे वस, सोहँ इक्को रूप समाईआ। अमृत झिरना दे के रस, बूंद स्वांती इक्क टपकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा जणाईआ।

जन भगत सुणो सच, हरि साचा सच जणाईआ। करे खेल पुरख समरथ, शाह पातशाह वड्डी वडयाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों लए लभ्भ, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। चरन दवारे लए सद्द, सद्दा नाम सुणाईआ। कूड़ कुड़ावे देवे छड्ड, हबों साक वंजाईआ। सन्त

सुहेले प्रेम प्रीती लए बंध, बंधन नाम रखवाईआ। निज आत्म दे के परमानंद, सुख सागर विच्च समाईआ। सीतल धार पाए ठंड, अगनी तत्त बुझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक्को छन्द, सोहँ ढोला राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा जणाईआ।

जन भगत कर ध्यान, सो पुरख निरञ्जण आप जणाइंदा। हरि पुरख निंरजण मेहरवान, महिबूब आपणी अक्ख खुल्हाइंदा। एकंकार देवे दान, दाता दान आप वरताइंदा। आदि निरञ्जण नूर महान, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता वड बलवान, जोधा सूरबीर अखवाइंदा। श्री भगवान सच निशान, निरगुण सरगुण आप झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ वेखे मार ध्यान, ब्रह्म पड़दा आप उठाइंदा। शब्द संदेशा धुर फ़रमाण, सति सतिवादी आप सुणाइंदा। तख्त निवासी मर्द मरदान, मददगीर इक्क हो जाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाण, करोड़ तेतीसा अक्ख ना कोई खुल्हाइंदा। त्रैगुण माया पंज तत्त रोवण कुरलाण, सिर हत्थ ना कोई रखवाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग करे ना कोई पहचान, बेपहचान आपणी खेल खिलाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर होए हैरान, सचखण्ड दवारे हरि का अन्त कोई ना आइंदा। अबिनाशी करता आपे जाणी जाण, जानणहारा आपे दया कमाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बीते विच्च जहान, पिछली कहाणी वेख वखाइंदा। जो सन्त सुहेले गुर चेले मंगदे रहे दान, दाता दानी धुर दी भिच्छया झोली पाइंदा। जो सखीआं बण के राह तक्कदे रहे काहन, तिन्हां बंसरी नाम सुणाइंदा। जो जंगलां विच्च विछोड़ा कट्टदे रहे खेल कीता सीता राम, सईआ इक्को वेस वटाइंदा। जो ईसा मूसा मुहम्मद मुहब्बत विच्च देंदा रिहा पैग़ाम, धुर संदेशा राग सुणाइंदा। जो नानक निरगुण दस्सदा रिहा सतिनाम, मंतर सच सच समझाइंदा। जो गोबिन्द पिआउँदा रिहा अमृत जाम, रस रसक रसक टपकाइंदा। सो खेल करे श्री भगवान, जन भगतां आप उठाइंदा। पन्ध मुका ज़िमीं असमान, गुरमुखां माण रखवाइंदा। बाल अंञाणे वेखे आण, बाली बुध दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रंग रंगाइंदा।

जन भगतां रंग रंगौंदा ए। दीन दयाल दया कमौंदा ए। कलिजुग अन्तम वेस वटौदा ए। निहकलंका नाउँ रखौंदा ए। शब्दी डंका इक्क वजौंदा ए। दवार बंका इक्क सहौंदा ए। राओ रंकां आप समझौंदा ए। सोहणा खेल करे आदिन अन्ता, अन्तश्करन सभ दा वेख वखौंदा ए। नाम जणावे धुर दा मंता, सोहँ राग इक्क अलौंदा ए। पकड़ उठाए साचे सन्ता, सुरती शब्द नाल मिलौंदा ए। भेव खुल्हा के पूरन भगतां, भाग सभ दी झोली पौंदा ए। गढ़ तोड़ के हउमे हंगता, हँ ब्रह्म समझौंदा ए। कर प्रकाश नूरी चन्द दा, दीवा बाती इक्को डगमगौंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखौंदा ए।

जन भगतां वेख वखावांगा। कलिजुग सोए आप उठावांगा। दुरमत मैल धोए, उजल आप करावांगा। पूरब जन्म दा दे के ढोए, वस्त अमोलक झोली पावांगा। लक्ख चुरासी कूड़ी रोए, नेत्र नैणां नीर सर्ब वहावांगा। फिरे दरोही त्रैलोए, चौदां लोक चौंदा तबक धुर

दा हुक्म सुणावांगा। जन भगत सुहेले जींदे मोए, जिन्नां दा जीवण आपणी झोली पावांगा। हरि का भेव समझ सके ना कोई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां वेख वखावांगा।

जन भगत कहण प्रभ वेख झट्ट, क्यों आपणी देरी लाईआ। राह तक्कदे तक्कदे गए थक्क, सदी वीहवीं दए गवाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल वक्खरा निराला खोल्ह हट्ट, वस्त इक्को इक्क वरताईआ। कूड़ी क्रिया खेल चुक्के बाजीगर नट, सवांगी स्वांग ना कोई वखाईआ। इक्को तेरा नाम लक्ख चुरासी लए जप, तूं मेरा मैं तेरा नाता जुड़िआ एका थाईंआ। लहणा मुका दे सींआ साढ़े तिन्न हत्थ, रविदास चमारा दए गवाहीआ। आपणे मिलण दी इक्को दे दे अक्ख, दोए लोचण कम्म किसे ना आईआ। हिरदे अंदर आ के वस, वसल महिबूब सच कराईआ। प्रेम प्यार दा दे दे रस, रस्ते कूड़े बन्द कराईआ। असां सुणयां तूं वसें घट घट, लक्ख चुरासी डेरा लाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान अञ्जील कुरान रहे दस्स, खाणी बाणी नाल रलाईआ। अक्खरां वाला गाउँदे तेरा जस, अलफ ये सिफ्त सालाहीआ। साहिब स्वामी ठाकर धुर दे तूं किसे ना आइउँ हत्थ, बिन भगतां तेरा संग ना कोई रखाईआ। कलिजुग अन्तम तेरा सहारा बैठे तक्क, ओट तेरे उत्ते तकाईआ। आ के लहणा दे हक़, हाकम बण के नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फड़ बाहों बाहर कढ्ढाईआ।

श्री भगवान कहे नाल प्यार, जन भगतां आप जणाईआ। जुग जन्म दा पूरब उधार, लहणा दिआं मुकाईआ। जन्म जन्म दे विछड़े यार, घर साचे लवां मिलाईआ। भगत उधारन मेरा अख्त्यार, दूजा संग ना कोई वखाईआ। मेरी महिंमा बेअन्त बेशुमार, शमा दीप गुरू अवतार जुग जुग दित्ते जगाईआ। उच्च अगम्म अथाह अट्टल मेरा मनार, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। जिथ्थे कोई ना पहुंचणहार, गुरू गुर करन निमस्कार, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए वडयाईआ।

जन भगत कहे प्रभ तेरा वेखणा उह मुकाम, जिस नूं मुकामे हक़ कहि सुणाईआ। सचखण्ड तेरा की निज़ाम, शाह पातशाह हुक्म की जणाईआ। शहनशाह झुल्ले तेरा की निशान, हुक्म की सुणाईआ। कवण नूर प्रकाश होवे भान, कवण सच करे रुशनाईआ। कवण मंगे दान, दानी झोली अग्गे डाहीआ। कवण तैनूं कहे भगवान, धुर दा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर दे वखाईआ।

जन भगत कहे प्रभ तेरा घर लईए वेख, सच दवारा नज़री आईआ। जिथ्थे ना कोई रूप रंग रेख, चिन्न सके ना कोई समझाईआ। ना कोई खटीआ निहाली लेफ़, तकीआ संग ना कोई निभाईआ। ना कोई बाल बिरध जवान, रिहा खेड, गोदी गोद ना कोई सुहाईआ। ना कोई बाशक माणे सेज, विष्नूं सांगो पांग ना कोई हंढाईआ। ना कोई गुरू परवरदिगार कहे आदेस, सजदा सीस ना कोई निवाईआ। ना कोई ब्रह्मा विष्न महेश,

गणपत गणेश ना कोई वडयाईआ। ना कोई पुरी लोअ आकार दिसे देस, ज़िमीं आसमान ना कोई वखाईआ। ना कोई गुरू चेला करे हेत, मुरीद मुशर्द वेखण कोई ना पाईआ। ना कोई रुत्त मौले बसन्ती चेत, फुल फुलवाड़ी ना कोई लगाईआ। ना कोई जाणे नेतन नेत, दूर दुराडा ना कोई समझाईआ। ना कोई मोढ्ढे धरे आपणा खेस, खूंडी हत्थ ना कोई फड़ाईआ। ना कोई तत्तां वाला पंज तत्त ख़ाकी दिसे दस दस्मेश, दह दिशां वंड ना कोई वंडाईआ। ना कोई शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान देवे संदेस, अञ्जील कुराना तीस बतीसा हदीस ना कोई पढ़ाईआ। ना कोई गुरू ग्रन्थ उपदेश, चारे खाणी चारे बाणी चार कुण्ट चार जुग चार वरन ना कोई समझाईआ। जिस घर साहिब स्वामी तूं वसे इक्को एक, एकंकार डेरा लाईआ। तेरे भगत कलिजुग अन्तम तेरी रक्ख के टेक, टिक्के पिछले रहे धवाईआ। कर किरपा बुध कर बिबेक, दुरमत मैल रहण ना पाईआ। त्रैगुण माया ना लग्गे सेक, अगनी तत्त ना कोई जलाईआ। तेरा दवारा लईए वेख, बिन अक्खां दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखौणा आपणा घर, जिस घर बह के सोभा पाईआ।

जन भगतां साचा घर वखावांगा। दर इक्को इक्क खुल्हावांगा। नर नरायण नज़री आवांगा। नाता तोड़ के भाई भैण, सज्जण इक्को इक्क अखवावांगा। जुग जन्म दा दे के लहणा देण, वस्त अमोलक झोली पावांगा। भगत भगवान इक्को घर इक्ठे रहण, सचखण्ड दवार सुहावांगा। भय चुका के लाड़ी मौत डैण, लक्ख चुरासी विच्चों पार करावांगा। राए धर्म अक्ख ना तक्के नैण, चित्रगुप्त पन्ध मुकावांगा। धुर दा बण के सैण, सगली चिन्त गवावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां वेख वखावांगा।

जन भगत कहण की करें तरस, दरदी दर्द वंडाईआ। जन्म कर्म दे रहे भटक, बिरहों रोग सताईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया चढ़या कटक, चारों कुण्ट लड़ाईआ। माया ममता देवे कोई ना झटक, खण्डा नाम ना हत्थ उठाईआ। प्रभू तेरे मिलण दा जेहड़ा लभ्भदे रहे वक्त, घड़ी पल खोज खुजाईआ। हो सहाई विच्च जगत, जुग चौकड़ी दए गवाहीआ। तैनूं लभ्भदे तेरे भगत, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। नेत्र रोवे धरनी धरत, धवल रही कुरलाईआ। गोबिन्द नाल तेरी शर्त, कलिजुग अन्तम शरअ देणी बदलाईआ। बण के आवां जोधा सूरबीर मरद, मर्द मरदाना इक्क अखवाईआ। जन भगतां सुण के अर्ज़, आरज़ू आपणी झोली पाईआ। राग सुणावां अगम्मी तर्ज़, सोहँ ढोला इक्क जणाईआ। जन्म जन्म दी मेट के मरज़, मर्ज़ी आपणे नाल रलाईआ। एहो खेल सदा असचरज, जिसदी समझ किसे ना आईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दर्द, दुखीआं दुःख वंडाईआ। छुरी कसाई फड़े कोई ना करद, कत्लगाह ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाईआ।

जन भगत वेखे दिवस रैण, घड़ी पल ध्यान लगाईआ। रसना सके कोई ना कहण, जिह्वा ज़बान ना कोई वडयाईआ। किस बिध आवे देणा देण, दाता बेपरवाहीआ। गुरमुख विरले हिस्सा लैण, हस्ती आपणी आप मिटाईआ। कूड़ी क्रिया मूल ना वहण, वहिम झूठा

देण गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरस दिखाए साचे नैण, नैण मतवाले दए बणाईआ।

जन भगत कहण नहीं होया मतवाला, मुतलाशी हो के वेख वखाईआ। जिस नूं कहन्दे हरि गोपाला, गोबिन्द रूप समाईआ । जिस दी सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुगा जुगन्तर नूर उजाला, जोती जोत डगमगाईआ। जिस दा नित नवित्त खेल निराला, निरवैर पुरख अखवाईआ। जिस दा मार्ग सदा सुखाला, जन भगतां दए समझाईआ। जिस दा फल अगम्मी डाल्हा, पत्त टहणी आप महकाईआ। जिस दा गुरू अवतार देंदे गए अहिवाला, पीर पैगम्बर इशारयां नाल गए जणाईआ। जिस दे हत्थ काल महांकाला, मालक इक्क अखवाईआ। जिस दा जलवा नूर जलाला, जोबन इक्क हंढाईआ। सो जन भगतां देवे आपणे नाम दी माला, मन का मणका दए भवाईआ। तूं ब्राह्मण तेरा सभ तों मार्ग इक्क सुखाला, साची धुर दी करें पढ़ाईआ। त्रैगुण नाता तोड़ जंजाला, हरि दाता होए सहाईआ। जिस दा गुर अवतार दे के गए बयाना, अन्तम लेखा दए मुकाईआ। प्रगट हो के नौजवाना, जोबन रत्ता बिनां तत्तां आवे सच्चा माहीआ। सति झुलाए इक्क निशाना, वेख वखाए दो जहानां, ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ दबाईआ। जो आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी विष्नूं भगवाना, भगत भगवन्त भगौती भगवन इक्क जणाईआ। जोधा सूरबीर वड मर्द मरदाना, नैण मतवाला इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लए जगाईआ।

जन भगत जगाए आपणे वेला, भेव जगदीश खुल्हाईआ। भेव चुकाए गुरू गुर चेला, चेला गुरू दए समझाईआ। धाम वखा के इक्क नवेला, विछड़े राम दए मिलाईआ। काया मन्दर जंगल जूह उजाड़ भयानक बेला, ठग्ग चोर यार अंदर बैठे डेरा लाईआ । जिन्हां मिल्या प्रभ सज्जण सुहेला, साहिब सतिगुर सहज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले चाईं चाईंआ।

हरिजन तेरा मेल अपार, जगत नैण वेखण ना पाईआ। आत्म अन्तर इक्क प्यार, प्रेमी प्रेम दए समझाईआ। बिन रसना जिह्वा कर गुफ्तार, गुफ़त शनीद वेख वखाईआ। साचे मन्दर लए उठाल, अंदरे अंदर जोड़ जुड़ाईआ। साची सुरती लए संभाल, मेहर नज़र उठाईआ। लेखा जाण शाह कंगाल, कंगालों शाह बणाईआ। आपे वेखे मुरीदां हाल, मुशर्द फेरा पाईआ। भगत भगवन्त देवे माण, अभिमान दए चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरी करां पहिचाण, सच संदेशा दए सुणाईआ। इक्को अक्खर दे ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर खुशी मनाण, तालीआं ताल वजाईआ। जन भगतां हरि जू मिल्या आण, हालत सभ दी वेख वखाईआ। लेखे ला के बिरध जवान, बुढ्ढे नढ्ढे दए तराईआ। जिन्हां गोबिन्द सेवा कीती महान, उच्च दा पीर कंधे उत्ते रखाईआ। तिन्हां दा लेखा विच्च जहान, ज़ाहर हो के रिहा चुकाईआ। आसा मनसा पूरी करे आण, तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए वडयाईआ।

जन भगत तेरी मिटे तृस्ना तृखा, सांतक सति दए कराईआ। तूं आत्म परमात्म बणया सिखा, सिखी सच सच दृढ़ाईआ। जिस दा तीर निराला तिक्खा, अणयाला आप चलाईआ । जिस दा अमृत सभ तों मिट्ठा, अनडिठा रस चखाईआ। सो साहिब करे हित्ता, प्रेम प्रीती इक्क वधाईआ। रूप रखा के आपणा अनडिठा, चेतन्न सुरती रिहा कराईआ। जन भगतां दी सेजे सुत्ता , आत्म अन्तर डेरा लाईआ। गुरमुख कोई ना रहे रुस्सा, रुस्सयां रिहा मनाईआ। भगत भगवान दा काहदा गुस्सा, खुशीआं रंग रखाईआ। प्यार नाल कहे प्रभ उठ मेरे लाडले पुत्ता, पतिपरमेशवर दया कमाईआ। उन्हां दा आवण जावण मुक्का, जिन्हां मुकम्मल मिली सरनाईआ। जन्म कर्म दा मिटे दुक्खा, दलिद्दर रोग रहे ना राईआ। जनणी करा के सफ़ल कुक्खा, धन्न जणेंदी माईआ। जन भगत दवारे खा के टुक्कर रुक्खा, श्री भगवान खुशी मनाईआ। शाह पातशाह राज राजानां कदे ना पुच्छा, पुशत पनाह हत्थ ना कोई टिकाईआ। सभ तों उत्तम श्रेशट सति सरूप गुरमुखां, जो मुख विच्चों सोहँ नाम धिआईआ। प्रभ दा खेल नहीं कोई लुका, पड़दा उत्ते ना कोई टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले रिहा तराईआ।

भगत कहण प्रभ कल डूंघा सागर, नईआ नज़र कोई ना आईआ। भवर होई काया गागर, पार ना कोई कराईआ। साचा वणज ना करे कोई सौदागर, हट्ट सति ना कोई खुल्हाईआ। निर्मल कर्म ना होए उजागर, दुरमत मैल ना कोई धवाईआ। सच दवारे देवे कोई ना आदर, अन्तर दृष्ट ना कोई खुल्हाईआ। पिआ विछोड़ा करते क़ादर, करीम रहीम ना कोई मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरस देणा आपणा बातन, बैतल धाम देणा वखाईआ।

जन भगत कहण प्रभ खोल्ह ताकी, तुख्म तासीर दे जणाईआ । तेरी वेखीए चाल बांकी, निरगुण बेपरवाहीआ। तूं आदि जुगादी साथी, सगला संग निभाईआ। तूं धुर दा मंतर पाठी, तेरे पाठ दा भोग कोई ना पाईआ। तूं सभ दा कमलापाती, लक्ख चुरासी नार रिहा हंढाईआ। तूं सदा सदा पुरख अबिनाशी, जीवण मरन विच्च ना आईआ। तेरा नाम संदेशा धुर दी पाती, जन भगत सुनेहड़ा दे समझाईआ। कलिजुग मेट अन्धेरी राती, सतिजुग सच्चा चन्द चमकाईआ। लहणा देणा मुक्के ज़ात पाती, शत्तरी ब्राह्मण शूद्र वैश नजर कोई ना आईआ। जन भगतां बदल दे हयाती, हाज़र हो के दया कमाईआ। मेरे नाम दी वज्जे इक्क रबाबी, रब्बी नूर दे दरसाईआ। आवण जावण दी मिले आज़ादी, अद्ध विचकार ना कोई अटकाईआ। तेरे दवारे होईए पाकी, भाग हिस्सा झोली देणा पाईआ। भगत उधारना तेरी धुर दी वादी, वाधा अग्गे दे कराईआ । तेरे सचखण्ड दी सोहे सुहञ्जणी आबादी, अबादत तेरा इक्को नाम धिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत साचे सन्त गुरमुख गुरसिख तेरी मंगण इक्क सरनाईआ। (५ मध्घर २०२१ बि जरनैल सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभ दस्स घराना, गृह आपणा दे जणाईआ। जिस घर निरगुण जोत जगे महाना, दीवा बाती ना कोई टिकाईआ। शब्द अगम्म वज्जे तराना, अनरागी राग सुणाईआ। अमृत रस मिले पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख ना कोई रखाईआ। चरन कँवल रहे ध्याना, दूजी ओट ना कोई तकाईआ। सति धर्म दिसे निशाना, शहनशाह तेरा नज़री आईआ। भाग लगा दे काया साढ़े तिन्न हत्थ मकाना, पड़दा उहला आप चुकाईआ। हर घट स्वामी जाणी जाणा, बेअन्त तेरी सरनाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे उत्ते माणा, अभिमान सभ दा दे गवाईआ। हउँ बाली बुध गुरमुख बाल अंञाणा, लोकमात ना कोई वडयाईआ। तूं शाह पातशाह सच्चा सुल्ताना, शहनशाह अखवाईआ। सचखण्ड निवासी राज राजाना, भूपत भूप बेपरवाहीआ। सूरबीर मर्द मरदाना, जोधा इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणा दे बुझाईआ।

जन भगत कहे प्रभ दस्स दे झुग्गी, जिस अंदर डेरा लाईआ। जिस दी जोत कदे ना बुझी, अन्ध अन्धेर ना कोई वखाईआ। जिस दी शान सभ तों उच्ची, आलीशान नज़री आईआ। जिथ्थे भगतां लगदी रुची, आत्म मिले वडयाईआ। जिथ्थे सुरती हुंदी सुच्ची, दुरमत मैल धवाईआ। जिथ्थे नज़र हुंदी उपठी, उलटी लट्ठ गिड़ाईआ। माण दवावे आपणी हत्थीं, गुरमुख गोद उठाईआ। जन भगत कहण प्रभ तेरा घर वेखीए अक्खीं, सुत्यां शांत कोई ना आईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां जो कथा दस्सी, लेखा लिख के कलम शाहीआ। तेरी वेखीए उह निराली हट्टी, जिस विच्च वस्त आप टिकाईआ। माणस जन्म दी खट्टीए खट्टी, अग्गे खटका रहे ना राईआ। तेरे प्रेम दी पढ़ीए पटी, शास्त्र सिमरत वेद पुरान कम्म किसे ना आईआ। नाम पदार्थ दे दे रती, रतन अमोलक हीरे लाल जवाहर लै बणाईआ। लेखा चुक्क जाए राग छत्ती, बत्ती दन्द ना सिफ्त सालाहीआ। जोत निरञ्जण तेरी निक्की बत्ती, आदि निरञ्जण आपणे विच्च लै मिलाईआ। तूं धुर दा कमलापती, पतिपरमेशवर तेरी वड वडयाईआ। गुरमुख आत्म परमात्म तेरे अग्गे ढठ्ठी, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। साड्डी आसा तृस्ना इच्छया पूरब कर इक्ठी, बंधन इक्को देणा पाईआ। माया ममता हउमे हंगता पंच विकार सुटौणा भट्ठी, त्रैगुण अगनी तत्त तपाईआ। चरन प्रीती साची रीती नाता जोड़ना पुरख समरथी, दूजा अञ्जण अंग ना कोई लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सच देणा वखाईआ।

जन भगत कहण प्रभ तेरा घर केहड़ा, निरगुण सच दे समझाईआ। जिस दा ब्रह्मण्डां खण्डां नालों खुल्ला वेहड़ा, पूरी लोअ समझ कोई ना आईआ। जिथ्थे आवण जावण चुक्के झेड़ा, लक्ख चुरासी ना कोई भवाईआ। जिथ्थे नगर ग्राम सोहणा वसे खेड़ा, महिफ़ल तेरा नाम खुदाईआ। जिथ्थे डुब्बदा तरदा बेड़ा, शौह दरया ना कोई रुड़ाईआ। जिथ्थे नज़री आवें नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जिथ्थे गुरमुख सखीआं पाया घेरा, सोहणा धुर दा राग अलाईआ। जिथ्थे वसें हरि जू सिँघ शेरा, शहनशाह आपणा डेरा लाईआ। जिथ्थे हकीकत होए निबेड़ा, हक़ो हक़ दए समझाईआ। जिथ्थे ग़रीब निमाणयां उत्ते करें मेहरां, मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पा के गए फेरा, सतिजुग त्रेता द्वापर

कलिजुग पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर दे वखाईआ।

जन भगत कहण प्रभ घर दस्स दे उह, जिस विच्च तेरी वडयाईआ। तेरे नाल जाईए छोह, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ । तेरे वरगे जाईए हो, दूजा तत्त ना कोई हंढाईआ। जगत नालों कर निर्मोह, मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ। सच प्रकाश दे लोअ, जोती जोत डगमगाईआ। दुरमत मैल दे धो, पतित पापी पुनीत आप वखाईआ। आपणे नाम दी सुणा साची सो, सोहँ ढोला इक्क दृढ़ाईआ। अमृत रस निझर चो, झिरना इक्क झिराईआ। कूड़ी क्रिया लै खोह, तन मन्दर रहण ना पाईआ। धुर दा ढोआ देणा ढो, नाम पदार्थ इक्क वरताईआ। सति धर्म दा बीज देणा बो, पत डाली फुल्ल आप महकाईआ। तेरे चरन दवारे सदा सद जाईए खलो, सनमुख हो के दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग इक्को दे समझाईआ।

जन भगत कहण दस्स निरँकार, की घर तेरे वडयाईआ। जिथ्थे दीवा बले अगम्म अपार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। छप्पर छन्न दिसे ना चार दीवार, मण्डल मंडप माड़ी नज़र कोई ना आईआ । सूरज चन्द ना कोई उजिआर, दिवस रैण ना कोई वखाईआ। घड़ी पल ना कोई विचार, मास बरख़ ना कोई समझाईआ। ज़िमीं आसमान ना कोई पहाड़, जंगल जूह ना कोई वडयाईआ। करें खेल आप करतार, क़ुदरत मालक इक्क अखवाईआ। शाहो भूप बण सिकदार, तख़्त निवासी साचे तख़्त डेरा लाईआ। दो जहानां बण के हुक्मरान, नाम संदेसा इक्क सुणाईआ। जुग चौकड़ी कर फ़रमाण, फ़ुरने सभ दे आप खुल्हाईआ। गुर अवतार बरखुरदार, पीर पैगम्बर बच्चे नन्ने लएं प्रगटाईआ। जन भगतां दएं दीदार, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। असीं वेंहदे रहे सदा जुग चार, चौकड़ी तेरा ध्यान लगाईआ। राह तक्कदे तक्कदे गए हार, थक्क थक्क तेरी मंज़ल पन्ध मुकाईआ। हक़ दे सच्ची सरकार, आदल अदल इक्क कमाईआ। दर ठांडा वेख दरबार, अलक्ख अगोचर इक्को अलख जगाईआ। साचा मन्दर दे वखाल, जिस घर बह के खुशी मनाईआ। एह गुरमुख तेरे लाल, लालन तेरी ओट तकाईआ। तूं शहनशाहां दा शाह हउँ कंगालां दे कंगाल, कंगले हो के तेरे अग्गे करी अर्ज़ोईआ। तूं धुर दा बण दलाल, ज़ामनी इक्को इक्क रखाईआ। सचखण्ड दवारा वेखीए तेरी धरमसाल, जिस घर बह बह डेरा लाईआ। जिथ्थे वज्जे अगम्मी ताल, ढोलक छैणा ना कोई खड़काईआ। साडा मन्न लै इक्क सवाल, सवाली हो के रहे जणाईआ। तूं आदि जुगादी श्री भगवान, भगवन तेरे हत्थ वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, गृह मन्दर देणा समझाईआ।

जन भगत कहण प्रभू दस्स दे मन्दर, मंज़ल आपणा पन्ध मुकाईआ। सारे वसीए ओसे अंदर, जिथ्थे दुःख ना लागे राईआ। इक्को नाम जपीए तेरा मन्त्र, दूजी अवर ना कोई पढ़ाईआ। लेखा चुक्क जाए गगन गगनन्तर, ज़िमीं असमानां चरनां हेठ दबाईआ। तेरे नाल मिल के तेरी बण जाए बणतर, घड़न भन्नण समरथ स्वामी तेरा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दरवाज़ा देणा खुल्हाईआ।

भगत कहण प्रभ तेरा घर अव्वला, अवल्लड़ी धार चलाईआ । आदि जुगादी रहें इकल्ला, बैठा बेपरवाहीआ। तेरा वसदा रहे महल्ला, मुहब्बत विच्च समाईआ। जुग चौकड़ी तैनूं राम रहीम वाहिगुरू मन्नदे रहे अल्ला, आलमीन अखवाईआ। तेरा नाम निधाना अगम्मी भल्ला, दो जहानां रिहा डराईआ। तूं साहिब स्वामी अछल अछल्ला, वल छल धारी खेल खिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर घल्ला, भगतां हुक्म सुणाईआ। सन्तां अंदर रला, गुरमुखां दएं वडयाईआ। गुरसिख फड़ा के पल्ला, आपणी गंढु बंधाईआ। दो जहान फिरें हो के झल्ला, झलक नुरानी इक्क चमकाईआ। समझ ना आई गोबिन्द डल्ला, बेपरवाह तेरी वडयाईआ। जन भगत कहण तेरा चरन दवारा इक्को मल्ला, घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे दे वडयाईआ।

जन भगत कहण प्रभ खोल्ह दे खिड़की, पड़दा आप उठाईआ । तेरे चरनां लग्गे साची बिरती, बिरथा जन्म ना कोई गवाईआ। नज़री आवें सुरती निरती, निरवैर तेरी वडयाईआ। दवारे आई फिरदी फिरदी, गुरमुख आसा रही जणाईआ। मैं ढूंडदी रही पिच्छे चिरदी, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। किसे समझ ना दस्सी घर थिरदी, थिर घर भेव ना कोई खुल्हाईआ। कलिजुग अन्तम वेखवां लड्ड गिड़दी, उलटा गेड़ा देणा दवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मन्दर देणा वखाईआ।

जन भगत कहण तेरा घर अनोखा, वक्खरी धार जणाईआ। जिथ्थे होवे कदे ना धोखा, कूड़ा रूप ना कोई वटाईआ। मिलणा होवे सौखा, अद्धविचकार ना कोई अटकाईआ। मिले अगम्मी नईआ नौका, नाम लए तराईआ। जिस ने छड्डुया पटणा पौंटा, पाटल होके वेख वखाईआ। गुरमुख मिलण दा रक्ख के शौंका, शहनशाह आपणा फेरा पाईआ। सच दवारे आपे पहुंचा, मंज़ल पन्ध चुकाईआ। दे वड्डिआई विच्चों चौदां लोकां, लोक परलोक दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए समझाईआ।

जन भगत मेरा घर सोहणा, सो पुरख निरञ्जण आप जणाईआ । ना हस्सणा ना कोई रोणा, खुशी ग़म ना कोई वडयाईआ। ना उजल ना मैला धोणा, इक्को रंग चढ़ाईआ। ना जागणा ना कोई सौंणा, आलस निंदरा ना कोई वखाईआ। ना घड़िआ ना कोई ढौणा, अचरज लील्हा इक्क रचाईआ। ना उजड़या ना कोई वसौणा, सद खुशीआं वेख वखाईआ। ना मैल ना तीर्थ नहौणा, जल धार ना कोई वहाईआ। ना मन्दर ना दीवा बाती जगौंणा, इक्को जोत जोत रुशनाईआ। ना गुरू अवतार पीर पैगम्बर मनौणा, पुरख अकाल इक्को इष्ट समझाईआ। ना कोई ख़ाकी तन हंडौणा, पंज तत्त सोभा कोई ना पाईआ। निरगुण जोत निरगुण विच्च समौणा, धुर दा मेला मेल मिलाईआ। गुरमुख विरला दर ते औणा, जिस सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। कलिजुग अन्तम वक्त सुहौणा, जन भगतां अक्ख खुल्हाईआ। साचा मन्दर इक्क वखौणा, उतर पूरब पच्छिम दक्खण चारे कुण्टां नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बूझ बुझाईआ।

जन भगतो हरि मन्दर अच्छा, हरि करता आप जणाईआ। ओथे धन्ने वाला बन्नृणा पए कोई ना वच्छा, नाले गऊ ना कोई चवाईआ । तेड़ पौणा पए ना कच्छा, बोदी सीस ना कोई टिकाईआ। भाईआं नाल करनां पए ना मता, नार कन्त ना कोई हंडाईआ। दर्शन करना पए ना लोचण अक्खां, हत्थां नाल ना सेव कमाईआ। रसना नाल गौणा पए ना जसा, बत्ती दन्द ना सिफ्त सालाहीआ। अगनी वाला तौणा पए ना भट्ठा, भठिआला रूप ना कोई वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा घर दए वखाईआ।

जन भगतो घर सोहणा चंगा, नर हरि नरायण बणत बणाईआ। जिथ्थे ना कोई सूर्या ना कोई चन्दा, जोती नूर नूर रुशनाईआ। ना कोई तन खाकी दिसे बन्दा, बन्दगी विच्च ध्यान ना कोई लगाईआ। ना कोई ब्रह्मण्ड खण्ड दिसे वरभंडा, जेरज अंड ना वणज कराईआ। ना कोई सन्त साजण दिसे संगा, मजलस रूप ना कोई वटाईआ। ना कोई वैंहदी दिसे धार गंगा, जल थल महीअल नज़र कोई ना आईआ। ना कोई नगर खेड़ा ग्राम दिसे पुरी अनन्दा, मक्का काअबा रूप ना कोई वटाईआ। ना कोई ढोला ना कोई छन्दा, ना कोई रागी राग सुणाईआ। ना कोई दीन ना बख्शंदा, ना कोई आजज़ नज़री आईआ। जिस दवारे प्रभ भगतां मेल करंदा, सो दवारा सोभा पाईआ। ओथे ना कोई साज ताल वजे सरँगा, ना कोई सरँगी किँग हिलाईआ। ना कोई हत्थ दिसे मरदँगा, नौबत नाम ना कोई जणाईआ। प्रभ साहिब दा वक्खरा अनौखा सभ तों ढँगा, जिस दी समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा दृढ़ाईआ।

जन भगतां सच दृढ़ावांगा। धुर दा मन्दर इक्क वखावांगा । डूंघी कंदर भेव चुकावांगा। घर साचे तोड़ के जंदर, जींवदिआं जगत वड्डिआवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां घर वखावांगा।

जन भगतां घर वखाएगा। प्रभू आपणी दया कमाएगा। निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाएगा। लग्गी प्रीती तोड़ निभाएगा। मेट अन्धेरा घोर, चन्द चमकाएगा। मार के पंजे चोर, होर का होर रंग वखाएगा। सुरती बन्नृ के शब्दी डोर, तन्द इक्को इक्क प्रगटाएगा। जन भगतां प्रभ दी सदा लोड़, बिन भगतां प्रभू कम्म किसे ना आएगा। जुगा जुगन्तर जाए बौहड़, कलिजुग अन्तम वेख वखाएगा। आपणे अग्गे लए तोर, तुरत आपणा हुक्म सुणाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दया कमाएगा।

जन भगतां दया कमावेगा। फड़ बाहों आप उठावेगा। साचे राहे आपे पावेगा। तन माटी साथ छुडावेगा। साची हाटी तन विकावेगा। मंज़ल घाटी आप चढ़ावेगा। दूर दुराडा पन्ध मुकावेगा। गुरमुखां संग निभावेगा। अगम्मी रंग रंगावेगा। मार्ग धुर दे आप लावेगा। अद्ध विचकार ना कोई अटकावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकावेगा। गुर अवतार पैगम्बर जस ढोला राग अलावेगा। भगत भगवान मेला करे हस्स हस्स, सचखण्ड साचे सोभा पावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां माण दवावेगा।

जन भगत खुशी मनौंदे ने। इक्क दूजे नूं आख सुणौंदे ने। कोट जन्म दे लथ्थे पाप, प्रभ दी झोली पौंदे ने। रल मिल गाया इक्को जाप, तूं मैं तेरा राग अलौंदे ने। रूह बुत्त दोवें हो गए पाक, पतित पापी भेव चुकौंदे ने। हरि चरन जुड़िआ नात, नाता इक्को नाल रखौंदे ने। जिस दे विच्चों उपजी साड्डी ज़ात, अन्तम ओसे विच्च मिलौंदे ने। सचखण्ड दवारे जा के दर्शन पाईए अगम्मी बाप, पिता पुरख अकाल सीस निवौंदे ने। साडा खेहड़ा छुट्ट जाए जाप, तीर्थ तट्ट नहावण ना कोई नहौंदे ने। जे प्रभ जू मिल जाए आप, दूसर राह ना कोई तकौंदे ने। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचा वेख वखौंदे ने।

जन भगतो साचा घर वखावांगा। मंज़ल पौड़ी आप चढ़ावागा । राग गौड़ी ना कोई पढ़ावांगा। अग्गे गली जो दिसे भीड़ी, फड़ बाहों पार करावांगा। जिउँ नर सिँघ रूप धार के कीड़ी, प्रहिलाद आपणी गोद उठावांगा। जिस दे हत्थ विच्च मीरी पीरी, दो जहानां वेख वखावांगा। तुहाड्ढे गलों कट्ट के शरअ ज़ंजीरी, अशाइत इक्को इक्क समझावांगा। चोटी चाढ़ के ओस अख़ीरी, आख़र आपणा मेल मिलावांगा। लक्ख चुरासी विच्चों मेल होया तक़दीरी, तदबीर आपणी आप समझावांगा। बिन भगत प्रभ दी चले कदे ना पीढ़ी, वाधा भगतां नाल रखावांगा। तुहाड्ढी जन्म जन्म दी कट्ट दिलगीरी, कूड़ा दलिद्दर परे हटांवांगा। महल्ल वखा बेनज़ीरी, नज़र आपणे नाल मिलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमावांगा।

जन भगत ध्यान लगौंदे ने। नेत्र अक्ख उठौंदे ने। प्रभ साचे राह तकौंदे ने। वेला वक्त सुहौंदे ने। अन्तर अन्तर गीटीआं गिण गिण, आपणा हाल सुणौंदे ने। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलौंणा साचे घर, घर इक्को वेख वखौंदे ने।

घर साचे मेल मिलावांगा। जगत विछड़े जोड़ जुड़ावांगा। निरगुण हो के जावां बौहड़, सरगुण पड़दा लाहवांगा। सति सरूपी चाढ़ के घोड़, शब्दी वांग फड़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख आपणे घर वसावांगा।

गुरमुख कहण घर साचे वसांगे। खुशीआं नाल बह बह हस्सांगे। प्रीतम ताईं आपणा हाल दस्सांगे। चरन सरनाई साची ढठ्ठांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पिछली करनी उहदे अग्गे रक्खांगे।

पिछली करनी जब अग्गे मेरे टिकाओगे। नेत्र हरन फरन आप खुल्ल्हाओगे। जग मरन मात चुकाओगे। वरन बरन डेरा ढाओगे। पट्टी इक्को पढ़न, ढोला इक्को राग गाओगे। साची पौड़ी चढ़न, मुड़ दे फेर मात ना आओगे। प्रभ दरस दीद दीदार नेत्र लोचण करन, कर्मी काडां पन्ध मुकाओगे। किरपा निधान ठाकर स्वामी आपणी किरपा करन, मुहब्बत प्यार विच्च मिलाओगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, घर इक्को दर्शन पाओगे।

गुरमुख कहण घर सच्चा तक्कया, तकवा इक्क जणाईआ। लेखा मुक्का मदीने मक्कया, मकबरयां सीस ना कोई झुकाईआ। लहणा चुक्का तीर्थ तट्टया, अठसठ ना उठ उठ धाईआ। पतिपरमेशवर स्वामी मिल्या सच्चया, सच दित्ती वडयाईआ। लेखे ला के भाण्डा कच्चया, काया कंचन दित्ती बणाईआ। मनुआ वासना विच्च ना नच्चया, दह दिशा ना उठ उठ धाईआ। सिर हत्थ स्वामी रक्खया, अन्तरजामी दया कमाईआ। जन भगत उठ मेरे बच्चया, सचखण्ड तैनूं दिआं वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ।

जन भगत कहे मैं वेख्या सचखण्ड, बिन अक्खां नज़री आईआ। ओथे वसे सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ । दीन दयाल हो बख्शंद, रहमत आप कमाईआ। भगत सुहेले ला के अंग, आपणी गोद उठाईआ। अन्तर पावे इक्को ठंड, अगनी तत्त ना लागे राईआ। भगत भगवान इक्को पै जाए गंढ, बध्धी गंढ ना कोई खुल्हाईआ। आसा मनसा पूरी होई मंग, मंगता आपणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच अनन्द, जिस अनन्द विच्चों गुर अवतार चन्द चमकाईआ। (७ मध्घर २०२१ बि करतार सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभ कर किरपा, किरपा निधान तेरी ओट तकाईआ। तुध बिन अवर ना दूजा दिसदा, नेत्र नैण ना दर्शन पाईआ। तीजे उत्ते कदे ना विसदा, आसा अवर ना कोई वखाईआ। मेहरवान हो के कट्ट दे बिप्पता, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ।

जन भगत कहे मेरा वंड दर्द, दर्द दुःख भय भंजन नज़री आइंदा। तेरे अग्गे अरजोई अर्ज़, नमों करके सीस झुकाइंदा। तेरा कुझ ना होवे हर्ज, जुग चौकड़ी जन भगतां सदा तराइंदा। तूं मर्द मरदाना मरद, मदद तेरी इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाइंदा।

जन भगत कहे कट्ट दे बंधन, फांसी रहण कोई ना पाईआ। मस्तक टिक्का ला दे चन्दन, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। दूजे दर ना जाए मंगण, घर इक्को बेपरवाहीआ। तेरा साहिब साचा संगण, सगला नाता दे निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, चरन कँवल बख्श सरनाईआ।

जन भगत कहे मेरा कट्ट ज़ंजीर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ । बिन तेरे वंडे कोई ना पीड़, दरदी नज़र कोई ना आईआ। तेरे अग्गे बेनन्ती इक्क अख़ीर, आख़र रिहा सुणाईआ। तूं ज़ाहर ज़हूर सच्चा पीर, पैगम्बर इक्क अखवाईआ। प्रभ बदल दे तक़दीर, तदबीर आपणी

आप समझाईआ। कर्मां उत्ते मार लकीर, शाह हकीर पार लंघाईआ। इक्को तेरी नज़री आवे तस्वीर, तालब हो के मंग मंगाईआ। तूं दाता गुणी गहर, गहर गवर अखवाईआ। तेरे हत्थ नाम शमशीर, खण्डा इक्क चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे बख्श साची धीर, धीरज आपणे चरन बंधाईआ। (८ मध्घर २०२१ बि माधो सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभ खोल्ह दे पड़दा, उहला रहण कोई ना पाईआ। भेव खुल्हा दे आपणे घर दा, गृह मन्दर खुशी मनाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त तैनूं लभ्भदा, दूजी आस ना कोई रखाईआ। बिन तेरे चरना करां कोई ना सजदा, सीस जगदीस ना किसे झुकाईआ। बिन तेरी मंज़ल मेरा पैंडा मूल ना मुक्कदा, चारों कुण्ट भज्जां बण बण पान्धी राहीआ। लेखा मुका दे आर पार हद दा, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मैं बाला नढ्ढा तेरी यद्द दा, पुशत पनाह हत्थ टिकाईआ। तेरा खेल अगम्मी अक्ख दा, निरगुण निरवैर कर रुशनाईआ। मैं दरस करां प्रतक्ख दा, बाहर खोजण कोई ना जाईआ। मेरा लहणा दे दे हक़ दा, हकीकत तेरे विच्चों नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लै मिलाईआ।

जन भगत कहे प्रभ खोल्ह दे पड़दा, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। मैं बण बैरागी बिरहों अंदर सड़दा, अगनी तत्त तपाईआ। तूं रूप अनूप नरायण नर दा, नर हरि तेरी बेपरवाहीआ। तूं सचखण्ड दवारे उच्च मनारे वसदा, मैं लोकमात ध्यान लगाईआ। मैं भुक्खा तेरे जस दा, सद सिफ्तां विच्च सालाहीआ। तूं रहबर मेरे रथ दा, साढ्ढे तिन्न हत्थ दे वडयाईआ। मैं तेरा नाम रटदा, मन का मणका दे भवाईआ। तूं मालक मेरे हट्ट दा, बण वणजारा सेव कमाईआ। मैं प्यासा तेरे रस दा, अमृत झिरना दे झिराईआ। तूं हर घट अंदर वसदा, घर मन्दर खुशी मनाईआ। इक्को बोल जैकारा अलक्ख दा, दर तेरे अलक्ख सुणाईआ। तूं साहिब सुल्तान क्यों वक्खरा वसदा, झल्ली ना जाए जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेला लै मिलाईआ।

जन भगत कहे प्रभ क्यों फिरें लुकदा, मुख घुंगट दे उठाईआ। तेरा नाता पिता पुत्त दा, पतिपरमेशवर तेरी इक्क सरनाईआ। मेरा झगड़ा मुक्के दु:ख दा, सुख सागर रूप समाईआ। तूं आदि जुगादि जन भगतां गोदी चुक्कदा, गलवकड़ी इक्को पाईआ। दो जहान कदे ना रुस्सदा, सन्मुख हो ना मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहणा आपणे लेखे पाईआ।

जन भगत कहे प्रभ मेल अक्खीं, क्यों आपणा आप रिहा बदलाईआ। मैं आदि जुगादी तेरी सखी, तूं मालक बेपरवाहीआ। तूं शाह शाहाना धुर दा पती, पतिपरमेशवर बेपरवाहीआ।

मैं लाल रंगण तेरी लाई हत्थीं, दोए जोड़ सीस निवाईआ। मैं सीस गुंदां पट्टी, नेत्र कज्जल धार बंधाईआ। इक्को आस प्रीतम रक्खी, श्री भगवान तेरा राह तकाईआ। कवण वेला आए वहीर घत्ती, धुर दा पान्धी बण के राहीआ। आपणे नाम दी समझा दे पट्टी, जगत विद्या लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

जन भगत कहे क्यों होया ओहले, अछल छल धारी आपणा खेल खिलाईआ। भाग लगा दे काया चोले, बंक दवारी तेरी वज्जे वधाईआ। सच नाम सुणा दे सोहले, ढोले राग अलाईआ। तुध बिन पड़दा कोई ना खोले, बजर कपाट ना कोई तुड़ाईआ। सुरती अन्तर शब्द ना मौले, विस्मादी विस्मादी रूप ना कोई जणाईआ। सोहणा गीत अगम्मी छन्द कोई ना बोले, सोहँ करे ना कोई पढ़ाईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जीवां जंतां बण के गए विचोले, भगवन भगत सिध्धा तेरा राह तकाईआ। दुःख रोग सन्ताप वेख कदे ना डोले, मन का मणका ना कोई भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साजण लै मिलाईआ।

जन भगत कहण क्यों खेलें लुकण मीटी, मैंडा तैंडा लेखा दे मुकाईआ। तेरी धार बारीक सभ तों निक्की, निक्की निक्कयां विच्चों नज़री आईआ। तेरी चार वरन तों बाहर सदा सिक्खी, ज़ात पात दीन मज़हब ना कोई रखाईआ। इक्को तेरे नाम दी पढ़दे साची चिट्ठी, दूजा हरफ़ वेखण कोई ना पाईआ। जिध्धर वेखण तेरी धार दिसी, दह दिशा होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लै मिलाईआ।

जन भगत कहण प्रभ आ जा अग्गे, पिछला पन्ध मुकाईआ। दर दरवेश तेरे हुक्मे बद्धे, बैठे सीस निवाईआ। कलिजुग बप्पड़े होए बग्गे, काग हँस रूप ना कोई वटाईआ। बिन ओढ़ुन फिरदे नंगे, सीस जगदीस ना कोई सुहाईआ। रस मिले ना अमृत ठंडे, अगनी तत्त ना कोई बुझाईआ। जन्म कर्म दी टुट्टी कोई ना गंढे, धुर दा मेल ना कोई मिलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर तेरा रहे मंगे, दर दरवेश अलख जगाईआ। तूं साहिब सुल्तान भगत सुहेला सूरा सरबंगे, शाह पातशाह शहनशाह तेरे हत्थ वडयाईआ। कलिजुग अन्तम धार वेख कन्धे, कूड़ कुड़िआरा रिहा कुरलाईआ। मन वासना जीव जंत होए गंदे, दुरमत मैल ना कोई धवाईआ। हउँ ठाकर स्वामी भगत भगवान तेरे बन्दे, बन्दना कर कर इक्को सीस निवाईआ। साक सज्जण भाई भैण कुड़ावे छड्डे, मात पित संग ना कोई रखाईआ। सच प्रीती धुर दी रीती सरन सरनाई तेरी लग्गे, आत्म परमात्म परमात्म आत्म तेरा राह तकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कलिजुग अगनी अग्ग तपे, सांतक सति ना कोई कराईआ। जन भगत सुहेला तेरा इक्को ढोला जपे, सोहँ सति करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे लैणा बहाईआ।

जन भगत कहे प्रभ दे दलासा, सरन तेरी सरनाईआ। चरन कँवल मिले भरवासा,

भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। सच प्रीती जुड़े नाता, कूड़ी क्रिया दे तजाईआ। एथे ओथे हो राखा, सेवक बण के सेव कमाईआ। खाली भरदे काया कासा, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। दीआ बाती नूर होवे प्रकाशा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। साचे मण्डल पवे रासा, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। भाग लग्गे विच्च परभासा, सीता राम वज्जे वधाईआ। नानक गोबिन्द गावे गाथा, तूं मेरा मैं तेरी करां पढ़ाईआ। जन भगतां दर मिले ठांडा, अगनी तत्त गवाईआ। सन्त सुहेला तेरा ढोला गाँदा, गा गा शुकर मनाईआ। गुरमुख तेरा प्रेम प्यार प्रीती तोड़ निभांदा, ओड़क तेरी सेव कमाईआ। गुरसिख चरन कँवल सीस निवांदा, धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाईआ। मुरीद मुशर्द तेरे हुक्म बांधा, बन्दना कह कह शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगतां रिहा जणाईआ।

जन भगत कहे तूं ठाकर मेरा, ठोकर आपणा नाम लगाईआ। अबिनाशी करता कहे तूं मेरा चेरा, घर साचे वज्जे वधाईआ। जन भगत कहे प्रभ आ नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। श्री भगवान कहे मैं तेरा वसावां खेड़ा, घर साचे खुशी मनाईआ। जन भगत कहे प्रभ जूठा झूठा ढाह दे डेरा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। श्री भगवान कहे मैं खुल्हा करां वेहड़ा, कूड़ी क्रिया कोई रहण ना पाईआ। जन भगत कहे मेरा आपणे कन्ध उठा लै बेड़ा, बण मलाह हो सहाईआ। श्री भगवान कहे मैं खेवट खेटा तेरा, नईआ नौका आपणा नाम चढ़ाईआ। जन भगत कहे मेरा आवण जावण लक्ख चुरासी चुक्क जाए झेड़ा, झगढ़ा अवर रहण ना पाईआ। अबिनाशी करता कहे तेरा साचे घर वसेरा, सचखण्ड दिआं माण वडयाईआ। जन भगत कहे प्रभू तेरे चरनां लग्गे डेरा, दूजा नज़र कोई ना आईआ। श्री भगवान कहे तूं मेरा मैं तेरा, दोहां दा इक्को रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बख्शे सच सच्ची सरनाईआ।

श्री भगवान कहे सुण भगत जन लाल, लालन दिआं जणाईआ। भाग लगावां काया सच्ची धर्मसाल, धर्म दवार इक्क वरवाईआ। कूड़ी क्रिया कूड़ जंजाल, माया ममता मोह मिटाईआ। मुशर्द हो के पुच्छां हाल, मुरीदां दिआं माण वडयाईआ। लेखा चुका के शाह कंगाल, नीच ऊँच आपणे रंग रंगाईआ। सति सरूपी वजा के ताल, धुन नाद राग इक्क शनवाईआ। भाग लगा के काया माटी खाल, खालस आपणा रूप दिआं दरसाईआ। सुरती कदे ना होवे बेहाल, बिहबल हो ना दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए समझाईआ।

श्री भगवान कहे सुण भगत अनोखे, हरि वक्खरी धार चलाइंदा। भाग लगा के काया कोठे, कप्पड़ आपणा माटी तन आप वडिआइंदा। गहर गम्भीर बेनज़ीर जन भगतां सोच आपे सोचे, दूजा समझ ना कोई समझाइंदा। नाम जणा के इक्क सलोके, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। पढ़ने पैण ना पुस्तक पोथे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा।

जन भगत कहे प्रभ दे दे नाम, निरअक्खर कर पढ़ाईआ। अमृत आत्म पिआ दे जाम, सच खुमारी इक्क वखाईआ। भेव खुल्हा दे काया ग्राम, नगर खेड़ां इक्क वसाईआ। शब्द निराला ला दे बाण, अणयाला आप चलाईआ। भाग लगा दे सच मकान, काया काअबा कर रुशनाईआ। नज़री आए इक्क अमाम, बेपरवाह फेरा पाईआ। साचा कलमा सुणा दे कान, कायनात मिले वडयाईआ। धुर संदेशा दे फ़रमाण, फुरना मन दा बन्द कराईआ। अगली मुशकल कर आसान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। तेरा खेल सदा महान, खालक कोई खलक समझ सके ना राईआ। सदी चौधवीं चार कुण्ट दह दिशा चढ़दा वेख तूफ़ान, लहर लहर नाल टकराईआ। साबत दिसे ना कोई धर्म ईमान, सिदक सबूरी नज़र कोई ना आईआ। नेत्र रोंदी अञ्जील कुरान, काअबिआं विच्च पई दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लै तराईआ।

जन भगत कहे मैं तेरा बरदा, बन्दीखाना दे तुड़ाईआ। तूं मालक मेरे घर दा, पतिपरमेशवर इक्क अखवाईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा तैथों डरदा, दूजा भय ना कोई जणाईआ। बिन तेरे नाम कलमा कोई ना पढ़दा, अक्खरां वाली ना कोई पढ़ाईआ। बिन तेरे मन्दर कोई ना चढ़दा, दूजे दर ना फेरा पाईआ। बिन तेरे पल्लू लड़ कोई ना फड़दा, दूजा अंग ना कोई रखवाईआ। तेरा रूप अनूप वेख नरायण नर दा, मेरी आसा खुशी मनाईआ। तूं दरस करा थिर घर दा, जिस घर शब्दी बैठा बेपरवाहीआ। अग्गे पुरख अकाल दादा, पतिपरमेशवर आपणे अंग लगाईआ। जिथ्थे गिआ फेर कोई ना मुड़दा, अवण गवण ना कोई भवाईआ। अन्तम जोती जोत मिलदा, तत्तां वाला नाता दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद सदा हो सहाईआ।

जन भगत कहे कर मेहरवानी, महिबूब तेरी सरनाईआ। तेरे दर दी वेखां निशानी, नछावर आपणा आप कराईआ। जिथ्थे अमृत पीणा पए ना पाणी, तृस्ना भुक्ख ना कोई सताईआ। जिथ्थे पढ़नी पए ना बाणी, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोई हलकाईआ। जिथ्थे नज़र ना आए कोई खाणी, अंडज जेरज उत्भुज सेतज रूप ना कोई वटाईआ। अगम्म अथाह बेपरवाह तेरी इक्को जोत नूरानी, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। मैं वेखां तेरा हक़ मुक़ामी, जिस घर बैठा सोभा पाईआ। शाह पातशाह सच्चे सुल्तानी, इक्क तेरी ओट रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर ठांडे लैणा बहाईआ।

जन भगत कहे ठांडे घर सद्द, सद्दा नाउँ सुणाईआ। जगत किनारा पार होवे हद्द, अद्धविचकार ना कोई रखवाईआ। तेरी सेजे चढ़ां भज्ज, आपणा बल धराईआ। तेरा नाम भंडारा पीवां साची मध, रस इक्को इक्क रखवाईआ। साचा ढोला गावां छन्द, नाअरा हक़ अलाईआ। मेरा खुशी होवे बन्द बन्द, तेरी बन्दना इक्को भाईआ। तूं दीन दयाल साहिब बख्शंद, बख्शिश रहमत दे कमाईआ। तेरे नाल मिल के तेरा आवे अनन्द, दूजी आस रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे देणी वडयाईआ।

जन भगत कहे तेरा दर घर चंगा, प्रभ इक्को नज़री आईआ। जिथ्थे नहौणा पए ना किसे गंगा, जमना सुरसती गोदावरी नज़र कोई ना आईआ। जन भगत कहे इक्को प्रेम रस मिले ठंडा, अगनी अग्ग ना लागे राईआ। जन भगत कहे ना कोई तत्तां वाला मनुष दिसे बन्दा, ख़ाकी ख़ाक ना कोई समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे लै टिकाईआ।

जन भगत कहे तेरा सच टिकाणा, टिकटिकी ला के ध्यान लगाईआ। प्रभ दे दे शब्द बबाणा, बण सवाली अलख जगाईआ । किसे हत्थ ना आवे राजा राणा, कोटन कोट रोंदे वेखे मारन धाहींआ । कलिजुग अन्तम वरते भाणा, भावी सभ दे सिर ते छाईआ। किरपा कर श्री भगवाना, भगवन तेरा राह तकाईआ। हउँ मूरख मुग्ध बाल अंञाणा, बचपन तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ।

जन भगत कहे प्रभ कर बख़्शीश, रहमत सच कमाईआ। छत्तर झुल्ले इक्क तेरे सीस, छत्तरधारी इक्क अखवाईआ। तैनूं गुर अवतार पीर पैगम्बर मन्नण जगदीश, जगत दा मालक बेपरवाहीआ। तेरा कलमा पढ़न हदीस, तेरे नाम दे ढोले गा गा शुकर मनाईआ । तूं बैठा रहें सदा अतीत, त्रैगुण विच्च कदे ना आईआ। किसे हत्थ ना आवें मन्दर मसीत, शिवदवाले मट्ठ रहे कुरलाईआ। जन भगत रक्खण सद तेरी उडीक, जुग जुग जन भगतां होएं सहाईआ। प्रभ आपणे घर आपणी वेख तारीख, जिस दा मास बरख दिवस रैण समझ कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दे मालक हो सहाईआ।

जन भगत कहे प्रभ पूरन ब्रह्म, पारब्रह्म दे जणाईआ। मैं समझ ना सकां आपणा कर्म, निहकरमी भेव खुल्हाईआ। मैं जाण ना सकां आपणा धरम, अधरमी रूप ना कोई दृढ़ाईआ। मैं पा ना सकां आपणा वरन, अवरन रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा दस्स दे चढ़न, घाटी आपणी पार कराईआ।

जन भगत कहे तेरी औखी मुशकल केहड़ी घाटी, लक्ख चुरासी चढ़न कोई ना पाईआ। अबिनाशी करता कहे एह दस्सण वाली नहीं कोई बाती, रसना जिह्वा सिफ्त ना कोई सालाहीआ। जिन्हां भगतां दा बणां आप साथी, अंदर हो के संग निभाईआ। उह मंज़ल चढ़न मेरी घाटी, पन्ध आपणा लैण मुकाईआ। लहणा देणा मुका के पृथ्मी आकाशी, गगन गगनंतर उप्पर सोभा पाईआ। मिले मेल पुरख अबिनाशी, आवण जावण पतित पावन लेखा दए मुकाईआ । भगत भगवान दी इक्को रासी, रिषी मुनी सारे गए जस गाईआ। जिस घर मन्दर गृह दा आप निवासी, वासा ओसे थां कराईआ। जन भगतां पिच्छे रहण ना देवे कोई बाकी, अगला पिछला लेखा सारा दए मुकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां मिल्या धुर सारा दा साथी, उह जन भगत साथ सारे गए तजाईआ। (१६ मध्घर २०२१ बि जागीर दास दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे क्यों होइउँ अलोप, परम पुरख प्रभ आपणा भेव जणाईआ। पंडत पांधे मुल्ला शेख़ तैनूं लभ्भदे पोप, चार कुण्ट दह दिशां ध्यान लगाईआ। जगत स्वामी अन्तरजामी तेरी समझ ना आई किसे कूट, भेव अभेद कहण कोई ना पाईआ। जगत सृष्टी दृष्टी वेख जूठ झूठ, चार कूण्ट अन्धेरा छाईआ। बिन तेरे नामे ख़ाली दिसण बुत्त, बुतख़ाने रो रो देण दुहाईआ। सति सतिवादी तेरा दिसे ना कोई सुत, मानस मानुख भुक्ख गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जन भगत कहण क्यों होया ओहले, निरगुण मुख छुपाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान अंजील कुरान गीता ज्ञान तेरी सिफ्त बोले, खाणी बाणी ढोले राग सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे बणदे गए विचोले, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। भगत भगवान तैनूं दस्सदे गए सदा वसें कोले, घर घर आपणा डेरा लाईआ। कर प्रकाश पुरख अबिनाश काया माटी साचे चोले, चोली दे बदलाईआ। हउँ वारी सदके तैथों प्रेम प्रीती अन्तर घोले, आप आपणा घोल घुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे दे वडयाईआ।

जन भगत कहण क्यों होया चुप्प, ख़ामोशी तेरे उत्ते छाईआ। कलिजुग वेख अन्धेरा घुप्प, क्यों आपणी अक्ख बदलाईआ। दुखी हो के तैनूं रहे पुच्छ, पुरख अकाल दे समझाईआ। धरत मात दी खाली कदे ना होवे कुक्ख, जन जननी भगत जन आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहणा दे समझाईआ।

जन भगत कहण प्रभ आ अग्गे, धुर दा पन्ध मुकाईआ। तेरा नाम नगारा इक्को वज्जे, चौदां लोकां होवे शनवाईआ। कूड़ कुड़िआर जाण भज्जे, नहुण वाहो दाहीआ। तेरा मन्दर इक्को सोहणा सजे, गुरूदवार इक्को दे वडयाईआ। अमृत रस चखा मज़े, ना मालूम आपणा रस वखाईआ। तेरे दर दे दरवेस सारे बद्धे, बन्दना कर कर सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दर लए मिलाईआ।

जन भगत कहण वड्डा अछल, अछल छलधारी आपणी लए अंगड़ाईआ। जगत अन्धेरी रही चल, चार कुण्ट अन्धेरा रिहा छाईआ । डूंघा ख़ाना दिसे डल, कन्ढा पार ना कोई वखाईआ। नेत्र रोंदे जल थल, मईअल रहे कुरलाईआ। दूई द्वैती सभ नूं लग्गा सल, सांतक सति ना कोई कराईआ। कूड़ी क्रिया कलिजुग वेखी कल, कालख टिक्का धोवे ना कोई छाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब साचे हो सहाईआ।

जन भगत कहण ऐ धुर दे मालक, मुलक आपणा वेख वखाईआ। जगत पित जगदीशर ख़ालक, मख़लूक दए दुहाईआ। शाह नवाब बण सालस, आदाब सजदा सीस झुकाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढ खालस, सन्त सुहेले आप प्रगटाईआ। माया ममता मेट लालस, लालन आपणा रंग रंगाईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना साज़श, भाण्डा भरम दे

भन्नाईआ। अगनी तत्त रहे ना आतश, अमृत मेघ सच बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ।

जन भगत कहण प्रभ पा फेरा, वेला वक्त रिहा कुरलाईआ । कूड़ी क्रिया चुक्के डेरा, डण्डावत सीस निवाईआ। तेरे प्रेम प्यार दा दिसे खेड़ा, खिड़की कुण्डी दे खुल्हाईआ। मन मनुआ उलटा आवे गेड़ा, मतवाली मत रहण ना पाईआ। निरगुण सरगुण अंदर मार फेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सुरती होवे चाओ घनेरा, शब्दी वज्जे वधाईआ। दरसन पा के ढोला गावां तेरा मेरा, सोहँ सच इक्क पढ़ाईआ। जिथ्थे रहे ना कोई अन्धेरा, जोत जोत रुशनाईआ। इक्को मंज़ल चढ़ के वेखे खेड़ा, बिन भगतां हत्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेला लैणा मिलाईआ ।

जन भगत कहे दे दरस दीदार, दीद ईद चन्द रुशनाईआ । तूं आदि जुगादी एकँकार, अक्ल कल अखवाईआ। तेरा खेल सदा जुग चार, चौकड़ी वेस वटाईआ। लेखा देवें गुरू अवतार, पैगम्बरां हत्थ रखाईआ। वाक भविख्त करन पुकार, कूक कूक सुणाईआ। कल कलकी इक्क अवतार, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। जिस दा रूप रंग समझ ना सके विच्च संसार, भेख नज़र किसे आईआ। दाता जोधा सूरबीर बलकार, बलधारी इक्क अखवाईआ। जिस दा नाम खण्डा तेज़ कटार, लुहार तरखाण ना कोई घड़ाईआ। जिस दा महल्ल अट्टल उच्च मनार, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस दा हुक्म चले जुग चार, शाह पातशाह शहनशाह इक्क अखवाईआ। जिस दी बोध अगाध शब्द अगम्मी गुफ्तार, कलमा कायनात सुणाईआ। जो पीर पीरां वड अमाम धुर सरदार, परवरदिगर नूर खुदाईआ। जिस दा अलफ ये सिफ्तां विच्च करे इज़हार, आज़म इक्को नज़री आईआ। सो साहिब स्वामी भगतां दे दीदार, नेत्र लोचन आपणी अक्ख खुल्हाईआ। ग़फलत विच्च क्यों सुत्ता पैर पसार, सदी चौधवीं लए अंगढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सच लैणी अंगढ़ाईआ।

जन भगत कहण पड़दा चुक्क, क्यों घुंगट मुख रखाईआ। साढे तिन्न हत्थ अंदर बैठों लुक, लोक लाज दे तजाईआ। अन्तर आत्म दे सुख, सुख सागर रूप समाईआ। तेरे विछोड़े दा मिटे दुःख, विछड़े आपणे घर मिलाईआ। सुहञ्जणी मौले सोहणी रुत्त, रुत्त बसन्त दे महकाईआ। निरधन सरधन आ के पुच्छ, सति सतिवादी वेस वटाईआ। तेरे चरन कँवल सरनाई साची जाईए झुक, मस्तक निउँ निउँ लागे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर तेरे बहके इक्को ढोला गाईआ।

जन भगत कहे प्रभ मेरे ठाकर, आपणा भेव खुल्हाईआ। फिर के वेखे जगत सागर, डूंघी भवरी डेरा लाईआ। पढ़ पढ़ थक्कया वेद शास्त्र, सिमरत पुरान खोज खुजाईआ। गुर अवतारां जो दित्ते पात्र, पाती अक्खरां नाल मिलाईआ। कलम शाही बण के कातब, हरफ़ हरूफ़ जोड़ जुड़ाईआ। तेरा भेव ना दस्सण बातन, बाहर करन सफाईआ। तूं साहिब पुरख

समराथण, सति सच तेरी वडयाईआ। जन भगत सुहेले तैनूं आखण, ज़ोर नाल रहे दृढ़ाईआ। फड़ के चाढ़ आपणे घाटन, घाट पिछली दे मुकाईआ। बोध अगाध सुणा गाथण, निरगुण निरअक्खर दे पढ़ाईआ। तेरे चरन कँवल होए दासण, वास्ता दो जहानां दे तुड़ाईआ। तेरे नाम दा होवे पाठन, सिल पूजस पाहन सीस ना कोई निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दरगाह साची खुशी मनाईआ।

जन भगत कहण ऐ परवरदिगार, दरोही तेरे नाम सुणाईआ। तूं लाशरीक सांझा यार, सच तौफीक तोहे खुदाईआ। दोए जोड़ करां निमस्कार, सजदा तेरे चरन जणाईआ। मैं बरदा दर दरबार, दरवेश नज़रीं आईआ। तूं देवणहार दातार, वड तेरी वडयाईआ। कलिजुग अन्तम वेख विचार, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। लोड़ रहे ना चार यार, जगत यारी ना कोई हंढाईआ। नबीआं नाल ना कोई प्यार, हज़रतां नाल ना कोई पढ़ाईआ। इक्क महिबूब मुहब्बत विच्च दे दीदार, दरस साचा सच कराईआ। मेरी नैण अक्ख होवे बेदार, आलस निंदरा ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आवण जावण दे चुकाईआ।

जन भगत कहे तेरा वेखवां घर सुहञ्जणा, सोभावन्त रिहा सुहाईआ। जिथ्थे दीवा बाती जगे आदि निरञ्जणा, निरगुण नूर जोत होवे रुशनाईआ। जिथ्थे साहिब स्वामी मिले सदा दर्द दुःख भय भंजना, भव सागर पार कराईआ। जिथ्थे नाम निधान नेत्र मिले अंजना, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। चरन धूढ़ी मिले साचा मज़ना, दुरमत मैल धवाईआ। अंगीकार इक्को अंग लग्गणा, दूजी सेज ना कोई हंढाईआ। जन भगत कहे मस्तक टिक्का धूढ़ी लग्गे चन्दना, सति सतिवादी खुशी मनाईआ। आत्म परमात्म निझ घर मिले इक्क अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जन भगत कहे मालक ख़ालक मिले सदा बख्शंदना, बख्शिश रहमत झोली देवे पाईआ। बिन हत्थां सीस होवे बन्दना, जगदीश वेखणहारा चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दर देणा सुहाईआ।

जन भगत कहे मैं वेखवां तेरा मुनार, सचखण्ड साचा नज़रीं आईआ। जिथ्थे दीवा बाती जगे अगम्म अपार, हवण पवण नज़र कोई ना पाईआ। इक्क अकेला बैठा दिसे परवरदिगार, सांझा यार नूर खुदाईआ। मुरीद मुर्शद करे दीदार, दर ठांडे खुशी मनाईआ। लहणा देणा लेखा मुक्के विच्च संसार, संसा रहण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

श्री भगवान कहे सुण जन भगत, सति सच दिआं दृढ़ाईआ । किरपा करां विच्च लोकमात जगत, जुगत आपणी दिआं जणाईआ। सदी चौधवीं वेला सुहञ्जणा सोहणा आया वक्त, वार थित दए गवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहि के गए परम पुरख परमेशवर आए फकत, दो जहानां वाली फेरा पाईआ। जिस दा हुक्म आदि जुगादि जुग चौकड़ी दो जहानां सख्त, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल सिर सके ना कोई उठाईआ। सो साहिब

स्वामी अन्तरजामी जन भगतां देवे दरस, आदर्श आपणा इक्क वरवाईआ। रहीम रहमान शाह सुल्तान रहमत विच्च करे तरस, मेहर नज़र बेनज़ीर आप उठाईआ। लहणा देणा मुक के सोग हरख़, चिन्ता ग़म दए चुकाईआ। सच कसवटी ला के करे आपणी परख, पारखू इक्को दाता बेपरवाहीआ। जुग जन्म सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग भगत सुहेले जो रहे तड़प, आत्म दरसी आपणा दरस दए कराईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार जोती जामा वेस वटा आए परत, पतिपरमेशवर अन्तर आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वरवाईआ।

श्री भगवान कहे जन भगत तेरी आसा मनसा पूर, अन्तम पूरी दिआं कराईआ। जिध्धर वेखें हाज़र हज़ूर, बिना अक्खां नज़रीं आईआ। कोट जन्म दे बख्श कसूर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। अन्तर आत्म दे के नूर, जगत अन्धेरा दिआं गवाईआ। कलिजुग नाता तोड़ के कूड़ो कूड़, सच समग्री झोली पाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी मेरा धुर दा एह दस्तूर, नित नवित्त दरदीआं दर्द वंडाईआ। उह भगत सुहेले सदा मोहे मंज़ूर जो मुशकल अंदर इक्को नाम धिआईआ। चोटी चढ़ के ओस कोहतूर, जिस कोहतूर उत्ते मूसा मूंह दे भार सुटाईआ। मैं सदा सदा सद जन भगत दवार हो मज़दूर, सेवक आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत रिहा समझाईआ।

जन भगत तेरा चुक्कां पड़दा, तन माटी अंदर रहण ना पाईआ। भेव खुल्हावां तेरे घर दा, घर घर विच्च करां जणाईआ। जाम पिआवां अमृत जल दा, निझर झिरना इक्क झिराईआ। राग सुणावां शब्द अगम्मी अनहद दा, नादी धुन वजाईआ। घर प्रकाश दीपक जोत करे जो जग दा, बिन तेल बाती सोभा पाईआ। सिँघासण वरवावां आत्म सेज जो सजदा, लेफ निहाली लोड़ रहे ना राईआ। तेरा मन्दर खेड़ा वरवावां वसदा, जिस घर सुरती शब्दी मिल मिल आपणी खुशी मनाईआ। तेरा प्रीतम वरवावां आत्म परमात्म नाल हस्सदा, हस्ती जुदा रूप ना कोई धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेशा इक्क सुणाईआ।

जन भगत सुणां तेरी फ़रयाद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ । सच दवारे देवां दाद, दौलत नाम झोली पाईआ। तेरी बिरहो वैरागण सुणी आवाज़, जो आपणा राग रही अलाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला तेरा करे काज, करता देवणहार वडयाईआ। सच दवारे जोड़ के आपणा नात, बिधाता वेखे थाउँ थाईंआ। कलिजुग मेट अन्धेरी रात, साचा चन्द करे रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावां गाथ, सोहँ ढोला इक्क सुणाईआ। तूं मेरा बालक मैं तेरा पित मात, पिता पूत नाता सके ना कोई तुड़ाईआ। भगत भगवान दी इक्को ज़ात, अजाति रूप ना कोई वरवाईआ। नेत्र लोचन नैण वरवावां साख्यात, सनमुख आपणा रूप प्रगटाईआ। जन्म कर्म बंधन विच्चों करावां निजात, जम की फासी लक्ख चुरासी अग्गे रहण ना पाईआ। एथे ओथे दो जहान चरन कँवल सदा सदा सद रक्खां पास, दूर दुराडा नज़र कोई ना आईआ। मंज़ल पौड़ी चढ़ावां आपणे घाट, सिर आपणा हत्थ रखवाईआ। दूर दुराडी

दो जहानां मुक्के वाट, घर साचे मिले वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवणहार सच्चा साथ, सगला संग आप हो जाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सेवा करे बणके दासी दास, स्वार्थ परमार्थ जन भगतां दए बणाईआ। (२० मध्घर २०२१ बि किहर सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे मैं तक्कया उह राम, जो हर घट रमया बेपरवाहीआ। सो वसे अगम्मी साचे धाम, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा मातलोक निशान, सरगुण हो के फेरा पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान अंजील कुरान खाणी बाणी जिस दे ढोले गाण, रागाँ नादां सिफ्तां विच्च सालाहीआ। जो लक्ख चुरासी घट घट वस्सया काया सच मुकाम, दर दवारा इक्क सुहाईआ। जो जन भगतां लोकमात जुग चौकड़ी मिले आण, निरगुण हो के सरगुण फेरा पाईआ। जो आत्म परमात्म खेले खेल महान, पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा दए उठाईआ। जो त्रैगुण माया पंज तत्त करे प्रधान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रजो तमो सतो आपणी वंड वंडाईआ। जो शब्द संदेशे नाद अनादी सुणौंदा रहे धुर फ़रमाण, नित्त नवित्त आप जणाईआ। जिस दा इष्ट दृष्ट अंदर करन सर्ब ध्यान, सृष्ट सबाई मालक बेपरवाहीआ। जिस नूं वाहिद लाशरीक सारे तक्कण लामुकाम, हक़ मुकामे सोभा पाईआ। जिस नूं अलफ़ ये सिफ्तां विच्च सालाही गाण, अन्त कहण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वखाए उह घर, जिथ्थे मन्दर मस्जिद शिवदवाला मट्ठ छप्पर छन्न नज़र कोई ना आईआ।

जन भगत कहे मैं तक्कणा इक्क इकल्ला, जो मालक सभ दा नज़री आईआ। सच दवारे वसे उच्च अगम्म अथाह महल्ला, दर दरबार देवे माण वडयाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर निरगुण धार फड़ाए आपणा पल्ला, शब्द शब्दी गंढ पवाईआ। जिसनूं सारे कहन्दे वाहिगुरू गौड अल्ला, आलमीन कहि के सीस झुकाईआ। जो वस्सया जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले परबत समुंद सागर रिहा समाईआ। जो भगतां शब्द अणयाला तीर मारे बिन घड़ी पलां, सच निशाना श्री भगवाना बिन हत्थां आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक्क वर, जिस दी समझ जगत विद्या कोई ना पाईआ।

जन भगत कहे मैं तक्कणा दीन दयाला, पतिपरमेशवर इक्को नज़री आईआ। जिस दी सभ तों वक्खरी पाठशाला, निरअक्खर कर पढ़ाईआ। जिस दा अजब निराला विद्याला, ब्रह्म मत दए समझाईआ। जिस दी सच दवार सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, दीन मज़हब जात पात वरन गोत ऊँच नीच राओ रंक राज राजान शाह सुल्तान वंड ना कोई वंडाईआ। जन भगतां तोड़नहारा त्रैगुण माया जगत जंजाला, जागरत जोत करे रुशनाईआ। लहणा देणा लेखा चुकाए काल महांकाला, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। आपणी गोद उठाए निरगुण धार

साचा बच्चा नढ्ढा बाला, गुरमुख गुर गुर आपणे रंग रंगाईआ। जन्म जन्म दा कर्म कर्म दा हल्ल करे सवाला, पूरब लेखा लहणा झोली देवे पाईआ। चरन प्रीती साची रीती मार्ग दस्से सुखाला, चार कुण्ट दह दिशा भटकण दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को देवे प्रेम प्याला, अमृत झिरना निझर आप झिराईआ। जन भगत कहे मैं भगवन्त दे नाम दी अन्तर आत्म पौणी उह माला, जो बिना मणकिआं तों मन का मणका दए फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दुरमत मैल दाग़ रहण ना देवे काला, कलिजुग कूड़ी क्रिया कर्म कांड विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। (१६ जेठ श सं २ इन्दरो देवी दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे मैं तक्कणी प्रभ दी उह दहलीज, जिस दर भगतां मिल के खुशी मनाईआ। सच प्यार अंदर करे रीझ, मेहरवान आपणा रंग चढ़ाईआ। आपणी पहचान दी देवे ताअमीज, पड़दा अंदरों देवे उठाईआ। लेखा रहे ना कोई ऊँच नीच, चारे वरन इक्को दए शरनाईआ। आत्म करे ठांडी सीत, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। साची दस्से धर्म दी रीत, सिख्या इक्को इक्क समझाईआ। सच दवार दे बणे वसनीक, सचखण्ड साचे मिले वडयाईआ। अबिनाशी करता सदा करे तुहाढ्ढी उडीक, जो दिवस रैण इक्को ध्यान लगाईआ। चार जुग दी शहादत देवे तवारीख, समां रही समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ।

जन भगत कहे मैं प्रभ दा बै खरीद, सौदा अवर ना कोई जणाईआ। मेरी इक्को नाल मिल गई दीद, दीदड़िआं विच्चों बाहर दित्ता कढ्ढाईआ। मेरी मनसा पूरी होई उम्मीद, कामल मुर्शद मिल के वज्जी वधाईआ। जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुरान करन ताअईद, ताबेदार हो के ओसे दा हो के सेव कमाईआ। जिस दी खेल महां अजब अज़ीब, आज़िज हो के वेखां चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दर देवे माण वडयाईआ।

जन भगत कहे मैं वेख के मालक धुर, धरनी धरत धवल दिता जणाईआ। जिथ्थे झुकदे पैगम्बर अवतार गुर, सुर बेनन्ती कर सीस झुकाईआ। झगढ़ा रहे ना किसे ठग्ग चोर, कूड़ कुटम्ब ना कोई बणाईआ। इक्को नाम शब्द सच्चा घनघोर, घनईए मिल के ढोले रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित्त नवित्त आपणे हत्थ रक्खे डोर, दूसर ओट ना कोई जणाईआ। (१६ जेठ श स २ शाहणी देवी दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे मैं तक्कया पुरख अलक्ख, अलक्ख अगोचर अथाह अनामी नज़री आईआ। खुशीआं विच्च कहां सच्च, सति सति दृढ़ाईआ। प्रभू दा हत्थ मूंह वेख्या नहीं कोई नक्क, काया कंचन कच्च ना कोई बणाईआ। रसना वाला सुणया नहीं जस, दन्दां वाली ना कोई पढ़ाईआ। किताबां वाला खुल्आ नहीं कोई हट्ट, पुस्तकां कीमत कोई ना पाईआ। नहावण वास्तो नहीं कोई तट्ट, तीर्थ वहण ना कोई वगाईआ। सौण वास्ते नहीं कोई खाट, सेजा बिस्तर रंग ना कोई रंगाईआ। मंज़ल पैंडा नहीं कोई वाट, जोजन गणत ना कोई गिणाईआ। जां तक्कया भगतां वस्सया सदा साथ, घर घर बैठा सोभा पाईआ। जिस नूं सीस निवौंदे गए रघुपत रघुनाथ, बंसरी वाला जिस दी धुन उपजाईआ। सो साहिब स्वामी पुरख बिधाता तक्कया साख्यात, सति सतिवादी सोभा पाईआ। जिस दी वरनां बरनां विच्च वंडी ना जाए जात, पारब्रह्म ब्रह्म हर घट नज़र आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा देवे धुर दा साथ, जगत जहान विच्चों बाहर कढ्ढाईआ।

जन भगत कहे मैं तक्कया प्रभ दा राह किनारा, जिथ्थे नईआ नौका नज़र कोई ना आईआ। ... ...तक्कया उह उजियारा, जिथ्थे सूरज चन्द ना कोई रुशनाईआ। तक्कया उह दरबारा, जिथ्थे दरबान दर सीस ना कोई झुकाईआ। तक्कया उह करतारा, जो करनी दा करता कुदरत रिहा बणाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर भज्जे फिरन वाहोदाह गुरू अवतारा, पैगम्बर नट्ठ नट्ठ ढोले गाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल दए सहारा, शब्दी डोरी आपणी गंढु पवाईआ। सो सज्जण सुहेला इक्क अकेला जन भगतां वेखे विगसे वेखणहारा, जग नेत्र कलिजुग जीव नज़र किसे ना आईआ। जो नाम निधान श्री भगवान बख्शणहार अतुट्ट भंडारा, दाता दानी बेपरवाहीआ। सो सन्त सुहेला आत्म परमात्म बणया रहे हक़ वणजारा, मेला मेले सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगत सुहेले अन्तर निरंतर लए फड़, बाहरों बणतर विच्च नज़र किसे ना आईआ। (१६ जेठ श सं २ लछमी देवी दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे मैं वेख्या आलीजाह, ज़ाहर नज़री आईआ । जल्वे विच्च खुदा, खुदाई विच्च समाईआ। कदे ना होवे जुदा, जुदाई विच्च बिजाईआ। जन भगतां कर विवाह, विद्या आपणी दए समझाईआ। मार्ग ब्रह्म करो सिध्धा, साधना दस्सो जगत लोकाईआ। प्रभ मिलण दी जणाओ बिधा, बंधन दिउ तुड़ाईआ। दवारा दस्सो निध्धा, अगनी तत्त गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि जू हरि बंधन इक्क दरसाईआ।

जन भगत कहे मैं वेखणा प्रभ दा उह मक्का, जिस दा मुकाबला करे ना कोई लोकाईआ। जिस गृह वसे महिबूब सका, साख्यात नज़री आईआ। मंज़ल विच्च कदे ना थक्का, थकावट पिछली दए मिटाईआ। यकीन दवावे हकीकत हक़ा, हकल आप समझाईआ। भगत उधारे विच्चों कोटां लक्खां, लखमी नरायण होए सहाईआ। जिस दीआं समझे कोई ना अक्खां,

आख़र सभ नूं वेख वखाईआ। ओस दी सिफ्त महिमां की लिखां, जन भगत कहे मेरे नैण रहे शरमाईआ। जो वड्डिआई देवे गुरमुख प्यारयां सिक्खां, सिखर चोटी दए चढ़ाईआ। जिथ्थे जन्म मरन दी मिटे तृखा, तृष्ना विच्च ना कोई भटकाईआ। अगनी वाली बाले कोई ना चिखा, चिन्ता ग़म ना कोई सताईआ। चरन कँवल लिआ के सिध्धा, रस्ते विच्च ना कोई अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत अन्तम वेले रहण ना देवे विंगा, टेडी बंक रस्ता भवर दए मिटाईआ। (१६ जेठ श सं २ कर्म सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे मैं प्रभ दे नूर दी वेखी चमक, चन्द चांदना सीस ना कोई उठाईआ। मेहरवान हो के बख़्शिश करे रहमत, दयानिध दया कमाईआ। भगतां नाल हो के सहमत, सहम पिछला रिहा चुकाईआ। भगती भाओ दी लेखे लावे मिहनत, जो ढोले रहे गाईआ। सच भंडार देवे नयामत, काया झोली आप भराईआ। अन्त होवे ना कदे कियामत, चरन कदमां देवे माण वडयाईआ। सच दवारे खड़े सही सलामत, आत्म चुरासी विच्च ना कोई भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण लए बणाईआ।

जन भगत कहे मैं तक्कया प्रभ दा अर्श, अरशां तों उत्ते ध्यान लगाईआ। मेरे उप्पर कीता तरस, दीन दयाल होया सहाईआ। दमां दा पल्ले बन्नया ना कोई खरच, धन दौलत कन्ध ना कोई उठाईआ। मन्दर मस्जिद शिवदवाले मड्ड गिआ किसे ना चरच, चर्चा सुणी ना जगत लोकाईआ। धाम निराला डिठ्ठा इक्क असचरज, जिथ्थे अचरज लीला बेपरवाहीआ। दीनां दुखीआं वंडे दर्द, निमाणयां होए सहाईआ। जन भगतां सुणे अर्ज़, जो बेनन्ती रहे जणाईआ। पूरा करे फ़र्ज़, फरमांबरदारां वेख वखाईआ। आपणे मिलण दी आसा वेख के गर्ज़, भुल्ले भटके लए जगाईआ। अंदर नाद सुणा के तरज, तरफदारी दए मिटाईआ। ममता मोह रहे ना मरज़, मरीजां सफा दए वखाईआ। जन भगतां होण ना देवे भगती वाला हरज़, हर्जाना सहजे झोली पाईआ। जिन्हां दा नाम लेखा रविदास राहीं कर लिआ दरज, दरजा उन्हां दा ना कोई मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द संदेसे कहे गरज, नाम सुनेहड़े विच्च सुणाईआ।(१६ जेठ श सं २ मंगल सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभ दा वेख्या थिर घर, जिथ्थे चरन कँवल टिकाईआ। जिथ्थे शब्दी सुत रिहा खड़, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। पुरख अकाले किरपा कर, दीन दयाल तेरी बेपरवाहीआ। कलिजुग अगनी विच्च रिहा सड़, सांतक सति ना कोई कराईआ। साची विद्या कोई ना रिहा पढ़, पुस्तकां वाली करन लड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो मार्ग आए

धर, धरनी धरत धवल उप्पर टिकाईआ। ओस नूं सारे गए हर, हिरदे हरि ना कोई मनाईआ। पुरख अबिनाशी तेरा चुक्कया डर, भटकणा विच्च रहे कुरलाईआ। तूं सचखण्ड दवारे रिहों वड़, सिँघासण बह के खुशी मनाईआ। जन भगत सुहेले लोकमात मिन्नता रहे कर, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। सच स्वामी आ साड्ढे घर, घराना साचा दे बणाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों मानस जन्म मिल्या वर, कर्म रेखा दे बदलाईआ। सतिगुर हो के दे वर, वस्त आपणी आप वरताईआ। अन्तम लै के जावीं आपणे घर, गृह डेरा देणा लगाईआ। तेरा पल्लू लिआ फड़, पलक ना होए जुदाईआ। तूं आदि जुगादी चोटी चढ़, हब्ब कुछ तेरे विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत इक्क वार नुहावे ओस सर, जिस सर विच्चों सरीर दा लेखा रहे ना राईआ। (१६ जेठ श सं २ मेला राम दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे मैं प्रभ दा मानणा इक्क आनंद, जो अनन्द विच्चों अनन्द प्रगटाईआ। आत्म परमात्म इक्को देवे ठंड, सीतलधार अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच्च बन्ने उह गंढ, एथे ओथे दो जहान मन बुद्धि सके ना कोई खुल्हाईआ। सति सरूप शाहो भूप अनडिठड़ा चाढ़े रंग, जगत ललारी जिस नूं रंगण कोई ना आईआ। सेज सुहौणी सच स्वामी बख्शे इक्क पलँघ, जिस दा पावा चूल बाडी घड़ ना कोई वखाईआ। नाम निधान बिन तन्द सितार वजाए उह मरदंग, जो छत्ती राग तों बाहर सच जैकार दए दृढ़ाईआ। निरगुण हो के सरगुण सदा बख्शे आपणा संग, सगला साथी हो के लग्गी तोड़ निभाईआ। झगढ़ा रहे ना जेरज अंड, उत्भुज सेतज चारे खाणी ना कोई भवाईआ। प्रकाश तक्कणा पए ना सूरज चन्द, जलवा जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भरमां ढाए झूठी कंध, बख़शिंद हो के रहमत आप कमाईआ।

जन भगत कहे मैं तक्कणा प्रभ दा सांतक सति, सति सतिवादी दए दृढ़ाईआ। इक्को देवे ब्रह्म मत, पारब्रह्म प्रभ भिच्छया धुर दी झोली पाईआ। साचा नाअरा जैकारा दस्से अलख, अलक्ख अगोचर दया दृष्टी इष्टी आप समझाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रहण ना देवे वक्ख, दूजा दर ना कोई वखाईआ। आत्म परमात्म मेला होवे निरगुण धार सच, सच दवारा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम अगम्मी वथ, वस्त धुर दी झोली पाईआ।

जन भगत कहे मैं तक्कणा प्रभ दा नूर उजाला, जो करे सच रुशनाईआ। जिथ्थे कलिजुग कूड़ रहे ना काला, कायनात कर्म ना कोई कमाईआ। मार्ग मिले धर्म सुखाला, वरन बरन ना कोई वंडाईआ। लेखे लग्गे पिछली घाला, घायल हो के सेव कमाईआ। महल्ल अट्टल चढ़ के तक्के सच सच्ची धरमसाला, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा जिस दा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, जन भगतां दरस वखावे अग्गे खड़, स्वच्छ सरूप शाहो भूप नज़री आईआ। (१६ जेठ श स २ पूरन सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे सुरती शब्दी मेरा जोड़, जोड़ी जुड़ के खुशी मनाईआ। आत्म परमात्म सांझी रक्खी लोड़, दरदी हो के दर्द दर्द वंडाईआ। प्रभ मालक स्वामी हो के जाए बौहड़, अगला पिछला पन्ध मुकाईआ। साचे मन्दर ला के आपणा पौड़, आखर चढ़ के लए उठाईआ। बिन अक्खां वेखे कर के गौर, गहर गम्भीर सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत जगत विच्चों लए प्रगटाईआ।

जन भगत कहे मेरा प्रभ दे अरपण जीवण, जुगत जीवण दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं नाम निधान अमृत रस आया पीवण, साहिब सच प्याला दीन दयाला हत्थ फड़ाईआ। चरन कँवल सरनाई आया थीवण, बलिहार हो के बल बल जाईआ। ग़रीब निमाणा हो के आया नीवण, निउँ निउँ लागाँ पाईआ। तन पाटा आया सीवण, कप्पड़ लिबास लवां बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां अंदर साचा बीज आया बीवण, बीर रस अमृत रस स्वास रस प्रकाश रस अबिनाश रस कर के आपणे वस, वास्ता एकँकार एका आपणे नाल रखवाईआ। (१६ जेठ श सं २ राजा सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभ मिले साहिब बख्शंदी, रोग सोग चिन्ता दुःख जगत दए गवाईआ। साचे नाम प्रेम दी बख्शे इक्क सुगन्धी, दुरगन्धी अंदरों दए कढ्ढाईआ। जन्म जन्म दी रहे ना कोई पाबन्दी, लक्ख चुरासी आवण जावण झगढ़ा दए मुकाईआ। सिध्धा मार्ग दस्स के डण्डी, दरगाह साची सच दवारे दए पहुंचाईआ। माया ममता विच्चों लए कढ्ढी, जगत जंजाल ना कोई फसाईआ। आत्म परमात्म होण ना देवे रंडी, सुहागण सोभावन्त सदा सुखदाईआ। आपणे लेखे लावे मंदी चंगी, झगढ़ा रहे ना जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि आपणे चरन टिकाईआ।

जन भगत कहे प्रभ तक्कणा आपणे नैण, कथा सुणन दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस नूं निरगुण धार पुरख अकाल जोत सरूप सारे कहण, मालक धुर दा इक्क अखवाईआ। उह नज़री आवे इक्को साक सज्जण सैण, नाता कूड़ कुटम्ब तुड़ाईआ। आपणा दर्शन देवे निरगुण धार ऐन, अक्ख प्रतक्ख आप खुल्हाईआ। मन मनूआं सुख शांती विच्च करे चैन, वासना अंदर भज्जे ना वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर मन्दर दए सुहाईआ।

जन भगत कहे मैं तक्कणा उह नवाब, जो नौबत धुर दा नाम वजाईआ। जिस दा सिफ्तां तों बाहर खिताब, शाह पातशाह शहनशाह अखवाईआ। जिस दा लेखा लिख ना सके कोई किताब, हरफ़ हिंदसा सिफ्त ना कोई सालाहीआ। गा सके ना कोई रबाब, रसना जेहवा ना कोई वडयाईआ। पूरा कर सके ना कोई आदाब, सजद्यां विच्च सारे सीस झुकाईआ। जो बैठा हक़ महिराब, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सो खेल करे साहिब स्वामी श्री सतिगुरू महाराज, राजन भूप बेपरवाहीआ। जन भगतां बख्शे आपणी दात, नाम निधाना झोली पाईआ। कलिजुग अन्तम मेट अन्धेरी रात, रुतड़ी आपणे संग निभाईआ। चिन्ता रोग सोग मिटे सन्ताप, संसा अंदरों दए कढ्ढाईआ। पूरा करे भविख्त वाक, वाक्फकार भगत लए कराईआ। निरगुण हो के देवे सच्चा साथ, सगला संग निभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ दस्स के साची गाथ, गहर गम्भीर करे पढ़ाईआ । लहणा देणा जन्म कर्म देवे हत्थो हाथ, अग्गे उधार ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेटणहारा अन्धेरी रात, निरगुण साची जोत धुर दा नूर करे रुशनाईआ। (१७ जेठ श सं २ धरमो देवी दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे मैं प्रभ दा बणना बाला सच्चा, नन्न्हां निक्का नढ्ढा रूप वटाईआ। भाग लगौणा काया माटी भांडा कच्चा, कंचन गढ़ वज्जे सच वधाईआ। शब्द अनादी धुर दा राग गौणा सच्चा, जगत विद्या ना कोई पढ़ाईआ। साची मंज़ल चढ़ के प्रभ दा करना पूरा पता, पतिपरमेशवर वसे किस किस थाईंआ। सुरती धार अंदर फिरां नट्ठां, भज्जां वाहो दाहीआ। खैहड़ा छुडा अठां सट्ठां, सच सरोवर नहा के खुशी मनाईआ। जिथ्थे मन वासना रहे ना कोई रट्टा, झगढ़ा तत्त ना कोई वखाईआ। मन्दर दिसे ना पत्थरां इट्टां, गुरूदवारा नज़री आईआ। खोजणां पए ना किसे हट्टां, जगत बज़ार ना कोई भवाईआ। इक्को लाहा हरि सरनाई खट्टां, खटका अग्गे रहे ना राईआ। अमृत आत्म निझर धार झट्टां, नाभी कँवली कँवल उलटाईआ। पंच विकारा सत्थर घत्तां, कूड़ कुड़िआरा परे हटाईआ। प्रभ दा दर्शन करां बिन अक्खां, निझ लोचन होए रुशनाईआ। आत्म हो के परमात्म गृह वस्सां, साचे मन्दर बह के खुशी मनाईआ। दीन दुनी जगत जहान छड्डां, छुटके सर्ब लुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वखावे आपणा घर, जन भगत कहे निरगुण दर्शन कर के हस्सां, मस्ती विच्चों नाम मस्ती इक्क चढ़ाईआ।

जन भगत कहे मैं चढ़ौणी धुर दी मस्ती, जाम इक्को मुख लगाईआ। जिस नाल भाग लग्गे मेरी काया बस्ती, खेड़े साचे वज्जे वधाईआ। प्रभ दी नज़र आए निरगुण धार हस्ती, जोती जोत जोत रुशनाईआ। मैं इक्को दा होणा चरन परसती, सीस इक्को इक्क झुकाईआ। खेल वेखणी दरगाह साची, सच दी सच संजम लैणा अपणाईआ। मुहब्बत वेखणी परम पुरख परमात्म कमलापति दी, जो पतिपरमेशवर हो के आत्म आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां धार दस्से साची

अक्ख दी, अक्खीआं तों पिच्छे सखीआं दा रूप बदलाईआ। (१७ जेठ श स २ महिंदर कौर दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे तन मन देणा प्रभ दे जुम्मा, आपणी जुम्मेवारी ना कोई रखाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच्च सति सतिवादी चरन चुम्मा, रसना रस अवर ना कोई वडयाईआ। मेहरवान किरपा कर के कूड़ी विख रहण ना देवे तुम्मा, अमृत रूप दए जणाईआ। चारे खाणी लक्ख चुरासी विच्च कदे ना घुम्मा, घुम्मण घेर डूंघी भवर ना कोई भवाईआ। इक्को नाम संदेश पुरख अकाल दा सुणा, सरवण दूजी आवाज सुणन कोई ना पाईआ। इक्को उपजे अगम्मी धुना, ढोलक छैणा ना कोई खड़काईआ। स्वामी मिले सतिगुर बहुगुणा, औगुण मेरे दए छुपाईआ। तन माटी भाण्डा रहण ना देवे ऊणा, वस्त अमोलक विच्च टिकाईआ। अन्तकाल कल पए ना रोणा, जम की फासी गल ना कोई लटकाईआ। मढ़ी गोर पए ना सौणा, बिस्तरे मरग सेज ना कोई हंढ्ढाईआ। आत्म परमात्म हवाले हब्ब करौणा, आपणा आप मिटाईआ। सचखण्ड दवारा इक्को पौणा, जिस विच्च रह के झट लंघाईआ। पुरख अबिनाशी दर्शन कर के आपा आप भेट चढ़ौणा, बाकी अवर ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत कहे मोहे देवे इक्क वर, वरम द्वैत रहण ना पाईआ। (१७ जेठ श सं २ प्यारी देवी दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे मैं पुरख अकाल इक्को बनौणा बाप, पिता परमेशवर नज़री आईआ। जिस दा आदि जुगादि साचा जाप, जुग चौकड़ी जगत सुणाईआ। जन भगतां करे दासी दास, सेवक आपणे लए बणाईआ। रूह बुत्त दोवें कर के पाक, पवित्र धारा विच्च रखाईआ। आत्म दा देवे सच्चा साथ, सगला संग तोड़ निभाईआ। लहणा देणा चुका के मस्तक माथ, पूरब लेखा दए मुकाईआ। जन्म जन्म दी पूरी कर के आस, तृष्ना रोग रहे ना राईआ। कलिजुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द करे रुशनाईआ। जन भगतां मिलण आवे आप, निरगुण हो के वेख वखाईआ। त्रैगुण मेटे रोग सन्ताप, पतित पुनीत दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा मुकाए विच्च लोकमात, सचखण्ड दवारे साचा हिस्सा झोली देवे पाईआ। (१७ जेठ श सं २ कृष्ना देवी दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभ मालक बणे सच्चे हित दा, प्रेम बंधन नाम रखाईआ। जन्म मरन झगढ़ा मुक्क जाए नित्त दा, चुरासी फंद ना कोई पवाईआ। साचा लेखा जावे लिखदा, जन्म कर्म उलटाईआ। नज़री आवे दिसदा, सनमुख सोभा पाईआ। नाता जोड़े साचे पित दा, पिता पूत गोद सुहाईआ। घर मिले इक्को ठाकर सज्जण इक्क दा, एकंकार लए टिकाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग देवे लगाईआ।

जन भगत कहे मैं प्रभ दा बणना सखा, सज्जण नज़र कोई ना आईआ। दरस करना अक्खां, आख़र मंज़ल चढ़ के खुशी मनाईआ। खुशी रहणा वस के कुल्ली कक्खां, महल्ल अट्टल ना कोई वडयाईआ। झगढ़ा चुका के कूड़ कुड़िआर लक्खां, लखमी नरायण इक्को लैणा धिआईआ। जिस दी सरनाई सदा वसां, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। खुशीआं विच्च ढोले गा के हस्सां, गीत गोबिन्द जणाईआ। ओस दा पल्लू कदे ना छड्डां, मालक धुर दा आपणी गंढ पवाईआ। भाग लगा के काया माटी हड्डां, हिरदे विच्चों हरि लवां प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत कहे चुरासी विच्चों तैनूं निरगुण धार हो के लभ्भां, जगत खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। (१७ जेठ श सं २ रसाल सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे साची धार तक्कां सतिगुर शब्द, थिर घर वासी नज़री आईआ। जिस दा ना कोई दीन ना कोई मज़्ब, वरन बरन वंड ना कोई वंडाईआ। विआपक होवे सृष्टी सर्ब, दृष्टी दा मालक नज़री आईआ। जिसनूं झुकदे अरब खरब, दो जहान सीस निवाईआ। जिसदा लहणा देणा शरकन गरब, पच्छिम दक्खण सोभा पाईआ। प्रेमीआं प्यारयां वंडे सदा दर्द, दीनां दुखीआं गले लगाईआ। साचे सन्तां सुण के अन्तर अर्ज़, सरगुण हो के दए वडयाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग पूरा करदा आया फ़र्ज़, गुर अवतार पैगम्बर आपणा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर , सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

जन भगत कहे मैं सतिगुर शब्द वेखणा इक्क गुरदेव, देवत सुर जिस दा ध्यान लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करदे सेव, निउँ निउँ लागण पाईआ। जो दिसे सदा निहचल धाम नहकेव, अट्टल पदवी डेरा लाईआ। जिस दी सिफ्त कर ना सके कोई रसना जेहव, कातब लिखे नाल ना कलम शाहीआ। गहर गम्भीर होवे अलख अभेव, बेअन्त बेपरवाह अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा होवे सहाईआ।

जन भगत कहे सतिगुर शब्द तक्कणा धुर दा पीर, पैगम्बरां दा पैगम्बर नज़री आईआ। जो सभ दा दस्तगीर, दस्त नाल दस्त मिलाईआ। मंज़ल चोटी चढ़ के बैठा अख़ीर, काया काअबा पड़दा दए उठाईआ। निरगुण निरवैर निराकार वखाए आपणी सच तस्वीर, जिस दा मुसव्वर रूप रंग रेख ना कोई समझाईआ। जन भगतां मुर्शद हो के दस्से सच तदबीर, मुरीद आपणे लए जणाईआ। सहारा दे के जुलाहे कबीर, कबरां विच्चों बाहर दित्ता कढ्ढाईआ। नूर जहूर करे नज़ीर, नज़रीआ अंदरों दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, झगढ़ा मिटावणहारा अमीर गरीब, जन भगतां अमरापद इक्को इक्क वखाईआ।

जन भगत कहे मैं सतिगुर शब्द तक्कां, बिन अक्खवां अक्ख खुल्हाईआ। फिरना पए ना किसे मदीना मक्का, तीर्थ तट्ट भज्जणा पए ना वाहो दाहीआ। खोजणा पए ना मन्दर मट्ठां, गुरूदवार पड़दा ना कोई उठाईआ। इक्को ओसे दी ओट रक्खवां, जो रक्खया करे हर हर थाईंआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर तक्कदे रहे नाल अगम्मी अक्खवां, दोए लोचन बन्द ध्यान कराईआ। जिस दे चरन कँवल सरनाई सदा वसां, वास्ता इक्को नाल जुड़ाईआ। मन हँकारी विकारी कर के ढठ्ठां, बुद्धि चले ना कोई चतुराईआ। सच्चा लाहा साचे नाम पदार्थ दर तों खट्टां, अग्गे दा खटका रहे ना राईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी बणे सज्जण सखा, सगला संग आप निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर शब्द जन भगतां मिलाए इक्को सच्चा, दरगाह साची सच धाम वडयाईआ। (१७ जेठ श सं २ रवेला राम दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे मैं प्रभ लभ्भणा सच्चा खोजी, जो खोजत खोजत वेख वखाईआ। सचखण्ड दवारे दा बणया रहे मौजी, मजलस भगतां विच्च जणाईआ। प्रीतम बणया रहे चोजी, चोज निराले आप जणाईआ। जन भगत जन्म कर्म दा रहण ना देवे रोगी, चुरासी दुक्खवां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। सच दवार दी देवे आपणी सोझी, समझ विच्चों समझ दए बदलाईआ। भाग लगा के काया माटी साची कोठी, साढे तिन्न हत्थ वेखे चाईं चाईंआ। कर प्रकाश निर्मल जोती, जोती जोत डगमगाईआ। शब्दी सुरत उठावे सोती, सुत्तयां रैण ना कोई विहाईआ। आत्म परमात्म बणा के आपणा गोती, घर विच्च घर मेला लए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रंग रंगाईआ।

जन भगत कहे मैं प्रभ लभ्भणा दीनां बंधू, जो बन्दन इक्को इक्क जणाईआ। गहर गम्भीर होवे सागर सिंधू, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मनूआं मन वासना रहण ना देवे चिन्दू, चिन्ता ग़म ना कोई सताईआ। मुस्लिम सिख ईसाई सारे तारे हिंदू, दीन मज़्ब वंड ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे सिफ्त सलाहीआ।

जन भगत कहे मैं वेखणा सच भंडार, जो भण्डारी हो के रिहा वरताईआ। मुक्के कदे ना सदा जुग चार, जुग चौकड़ी दूण सवाईआ। कलिजुग अन्तम खेल करे अपार, अपरम्पर हो के वेस वटाईआ। सुत दुलारा कर त्यार, गोबिन्द मेला सैहज सुभाईआ। सच संदेशा देवे आपणी धार, अक्खवरां वाली ना कोई पढ़ाईआ। धाम वखावे अपर अपार, सम्बल बह के सोभा पाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण मिल के शब्द रक्खे आपणे अख्त्यार, दूसर हत्थ ना किसे फड़ाईआ। जिस नूं हज़रतां पैगम्बरां रसूलां मन्नयां सांझा यार, परवरदिगार नूर खुदाईआ। उह भगतां उत्ते करे इक्क इतबार, बेइतबारी वेखे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे साचे रंग समाईआ।

जन भगत कहे मैं वेखणा शब्द निराला गुरू, जिस नूं गुरदेव कह के सारे गए मनाईआ। जिसदे कोलों परम पुरख दा कारज हुंदा शुरु, आदि आदि रचना जिस रचाईआ। जेहड़ा मंज़ल चढ़ के पान्धी हो के मुसाफर कदे ना मुड़ू, सच दवारे बह के सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अंदर शब्दी नाम फुरना हो के फुरू, फुरने मन दे बन्द कराईआ। (१७ जेठ श सं २ बचन सिँघ तूतां वाले दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे मैं प्रभ दी लैणी सिख्या, निरअक्खर पढ़ के खुशी मनाईआ । जेहड़ा कलम शाही नाल ना जाए लिखया, रसना गा ना कोई सुणाईआ। जिथों गुर अवतार पैगम्बरां मिलदी भिच्छया, अणमंगी, दौलत रिहा वरताईआ। जिस दी धार नाल आदि जुगादि करे सभ दी रच्छया, रच्छक हो के वेख वखाईआ। जग नेत्र नाल विद्या विच्चों किसे ना दिसिआ, चौदां विद्या रही कुरलाईआ। जो दीन मज़ब जात पात विच्च आ के कदे ना जाए भिटिआ, भिट्टड़ रूप ना कोई वटाईआ। सदा सदा सच स्वामी बोल बोले मिठिआ, अनरस आपणा दए चखाईआ। जन भगतां मार्ग ला के जुग जुग सिन्धया, साजण साचा लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित्त नवित्त जन भगतां प्रेम प्रीती अंदर विकिआ, बिन कीमत तों कीमत सभ दी दए चुकाईआ।

जन भगत कहे मैनूं तक्कणा भगवान उह, जिसदी शास्त्र सिमरत वेद पुरान उस्तत कर के खुशी मनाईआ। जगत वासना विच्चों करे निर्मोह, मुहब्बत आपणे नाल जुड़ाईआ। परमात्म हो के आत्म जावे छोह, शहनशाह हो के आपणा रंग चढ़ाईआ। तन माटी खाकी मन्दर अंदर देवे साची लो, जोती नूर कर रुशनाईआ। नाम निधाना साचे बीज देवे बो, पत्त टहणी आप महकाईआ। कूड़ी क्रिया अंदरों लवे खोह, धरोह मन ना कोई कमाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहण ना देवे गरोह, शब्दी खण्डां इक्क चमकाईआ। साचा अमृत निझर धार देवे चो, चरन चरनोदक आपणा नाम पिआईआ। भगतां अंदर मिल के भगतां रूप जावे हो, निरवैर निराकार आपणा आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां शब्द संदेशा दे के सोहँ सो, सर्ब व्यापी प्रतापी गुरमुख लए बणाईआ। (१७ जेठ श सं २ देस राज दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे मैं श्री भगवान तक्कणा शहनशाह, जो दो जहानां हुक्म चलाईआ। सति सच दृढ़ाए इक्क आपणा नां, नाउँ निरँकारा सर्ब जणाईआ। होए सहाई हर घट थां, थान थनंतर दीन दुनी वेख वखाईआ। सदा सुहेला जुग जुग सिर ठंडी रक्खे छाँ, जगत अगनी अग्ग ना कोई तपाईआ। जन भगतां सन्तां गुरमुख गुरसिख सन्त फ़कीरां पकड़े

बांह, संसार सागर विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। कोटन कोट जन्म दे बख्श देवे गुनाह, दुरमत मैल पापां आप धवाईआ। अन्तर आत्म परमात्म हो के बख्शे सच ध्यान, ज्ञान इक्को इक्क समझाईआ। मानस जन्म करे कल्याण, गेड़े विच्च ना कोई भवाईआ। साचा धर्म दस्से ईमान, पुरख अकाल इक्को इष्ट मनाईआ। जन भगत अंदरों रहे ना कोई बेईमान, कूड़ शैतान ना कोई लड़ाईआ। हँकारी मन ना करे गुमान, गुरबत गैर ना वंड वंडाईआ। इक्को इक्क अबिनाशी करता गावे गाण, कुदरत दा कादर दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत बणा के दर घर साचे दे महिमान, मेहरवान आपणी दया कमाईआ।

जन भगत प्रभ दी सदा करे तलाश, शास्त्र सिमरत वेद पुरान फोल फुलाईआ। जिस दे विच्च सिफ्तां दी शाख, शनाखत दी शहादत रहे भुगताईआ। बिन हरि किरपा दरस ना होवे साख्यात, सन्मुख हो के दरस कोई ना पाईआ। जुग चौकड़ी खेले खेल तमाश, नित्त नवित्त आपणा वेस वटाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां देवणहारा दात, दानी हो के वरताईआ। कूड़ी क्रिया मिटे अन्धेरी रात, साचा नूर चन्द करे रुशनाईआ। गुरमुख कदे ग़रूब ना होवे आफताब, साची चमक दए चमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत साचे नाम दी सदा देवे अमदाद, अनमुल दौलत झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां लहणा देणा पूरब जन्म कर्म दा करे बेबाक, बाकी अवर और ना कोई रखवाईआ। (१७ जेठ श सं २ धरमो देवी)

* * * * *

जन भगत कहे मैं अबिनाशी करते नाल लौणा यराना, कूड़ा यार ना कोई जिथ्थे दिसे ना कोई बेगाना, वैरी रूप ना कोई बदलाईआ। इक्को नज़री आए साहिब सुल्ताना, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। जिस दा हुक्म चले सदा दो जहानां, जुग चौकड़ी बैठे सीस निवाईआ। देंदा रहे धुर फ़रमाणा, गुर अवतार पैगम्बर हुक्में विच्च फिराईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त जोती पहरया आपणा जामा, रूप रंग रेख नजर किसे ना आईआ। शब्दी जोधा सूरबीर सुत बलवाना, गोबिन्द आपणे नाल रखवाईआ। जिस दा खण्डा खड़के कूड़ी क्रिया शरअ मेटे शैताना, सरीर शरीर रहण कोई ना पाईआ। चार कुण्ट दह दिशा होए हैराना, भेव अभेद सके ना कोई खुल्हाईआ। जन भगत सुहेले गावण इक्को गाणा, तूंही तूंही राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे जीव जहानां, मानस मानव मानुख पड़दा दए उठाईआ। (१७ जेठ श सं २ राजो देवी दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभ पुकार लै सुण, संदेशा तेरे दर पुचाईआ। तुध बिन सहाई

होवे कौण, लोकमात दया कमाईआ। कलिजुग अगनी वगे तत्ती पौण, अमृत मेघ ना कोई बरसाईआ। सुख सागर विच्च मिले ना नहौण, तीर्थ तट्ट फिर फिर दित्ती दुहाईआ। मनूआं मन हँकारी मरे ना रौण, सच्चा तीर निशाना अणयाला ना कोई लगाईआ। मन वासना पिच्छे आए ना कोई हटौण, पड़दा अंदरों ना कोई चुकाईआ। वरन बरन वेखे सारे तेरे ढोले गौण, मन्दर चढ़ के अंदर वड़ के निझ नेत्र तेरा दरस कोई ना पाईआ। चरन कँवल कोई ना भुल्ल बख्शौण, बख्शिश मंगे ना चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आइउ भगत दवार बुलौण, बुलावा आपणा नाम समझाईआ।

जन भगत कहे प्रभू तेरी याद अंदर गए रुल, आपणा आप मिटाईआ। पढ़ पढ़ थक्क गए बुल्ल, बत्ती दन्द देण दुहाईआ। कीमत पिआ कोई ना मुल, लेखे लेखा ना कोई लगाईआ। सच भंडार गिआ डुल्ह, वस्त अमोलक हत्थ कोई ना आईआ। कलिजुग अन्धेरा झक्खड़ रिहा झुल्ल, ठंडी पवण ना कोई वखाईआ। मूर्ख मुग्ध हो के जे गए भुल्ल, अभुल्ल तेरी ओट रखाईआ। भाग लगा दे साची कुल्ल, कुल्ल मालक तेरे अग्गे सीस रहे झुकाईआ। सच दवारा जाए खुल्ह, ख़ालस रूप तेरा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे लै तराईआ।

जन भगत कहे प्रभ तेरी लग्गे कोई ना कीमत, निहकरमी कर्म दे कमाईआ। जन भगत तेरी आत्म बण के बणे तरीमत, त्रीया हो के सेव कमाईआ। मानस जन्म चुरासी विच्चों मिल्या इक्क गनीमत, ग़मां तों दे छुडाईआ। साड्डी पवित्र कर ज़िहन वाली ज़िहनीअत, ज़ेर ज़बर विच्च ना कोई अटकाईआ। साची सिख्या सति सति नसीहत, हुक्म फ़रमाना आप सुणाईआ। भेव खोल्ह दे असल असलीअत, दुरमत मैल मैल धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आपणे मिलण दी दे काबलीअत, कामल मुर्शद मुरीद आपणे विच्च टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच विरासत नाम भंडारा जन भगतां करदे वसीअत, मेहरवान हो के बिन लेखे लेख बणाईआ। (१७ जेठ श सं २ गुरो दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभ किरपा कर खुद, खादम आपणे लै बणाईआ। निर्मल होवे बुद्ध, बुद्धि मलीन ना कोई बणाईआ। पंज विकारे करना पए ना युद्ध, झगड़ा मन ना कोई लड़ाईआ। तेरा दवारा जाए सुझ, पड़दा उहला दे उठाईआ। मंज़ल चढ़दिआं रस्ते विच्च ना जावां रुक, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। तेरा नूरी दरस कर के भगत सुहेला होवे खुश, खुशीआं विच्च तेरे विच्च समाईआ। जन्म कर्म दा रहे कोई ना दुःख, बण दरदी दर्द देणा गवाईआ। साची गोदी लैणा चुक, पुरख अकाल बण के धुर दा पिता माईआ। आवण जावण पैंडा जावे मुक्क, झगड़ा कर्म रहे ना राईआ। अपराधी बणौणा आपणा सुत, साहिब सतिगुर देणी इक्क सरनाईआ। बिन कदम सीस जगदीश तोहे जाए झुक, निउँ निउँ

मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देणी माण वडयाईआ।

जन भगत कहे तेरा रूप तक्कणा खालस, खालस खालसा आपणा लैणा बणाईआ। दो जहानां बणना सालस, सच सलासी आप कमाईआ। कूड़ी निंदरा रहे ना आलस, ग़फ्लत नाता देणा तुड़ाईआ। मैं बाला नढ्ढा तेरा बालक, बाल अवस्था दिआं दुहाईआ। तूं साहिब स्वामी धुर दा खालक, खावंद सभ दा नज़री आईआ। आदि जुगादि सदा सद बणया प्रितपालक, सेवक हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सांभ आपणी अमानत, कलिजुग अन्तम वेख वखाईआ।

जन भगत कहे प्रभ क्यों बैठा छुप्प, आपणा आप लुकाईआ। कलिजुग वेख अन्धेरा घुप्प, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। डूंघी भवरी बैठों चुप्प, शब्द संदेश ना कोई सुणाईआ। कलिजुग सृष्टी दृष्टी दा बदलिआ रुख, बिन तेरी किरपा वाग सके ना कोई बदलाईआ। मन वासना होई भुक्ख, तृष्ना तृप्त ना कोई कराईआ। बिन पुरख अकाल दीन दयाल सतिगुर पूरे गोदी सके कोई ना चुक्क, सीस भार ना कोई उठाईआ। दीन मज़ब विच्च आ के सारे गए रुढ्ढ, अग्गे कदम ना कोई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां उजल कर मुख, मुख अन्तर निरंतर मंतर आपणा दे समझाईआ। (१७ जेठ श सं २ प्रेमा देवी दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभ तेरा सुणना सच्चा ढोला, ढोल माही देणा सुणाईआ। भाग लगा दे काया चोला, चोली आपणी रंग रंगाईआ। सुणा दे धुर दा सोहला, सोहणी आवाज़ सुणाईआ। जन्म कर्म दा रहे ना उहला, रौणक आपणी देणी वखाईआ। तूं मालक धुर दा दिसें मौला, हर घट रिहा समाईआ। नूर खुदाई अव्वला, अव्वल इक्क जणाईआ। दे वड्डिआई उप्पर धौला, धरनी धरत वेख खुशी मनाईआ। आपणा पूरा इकरार कर कौला, जन भगतां होएं सहाईआ। मन हंगता सीस मार पउला, पाहुल अमृत गुरमुखां अन्तर आत्म दे चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ।

जन भगत प्रभ सोहणे सुंदर, स्वामी तेरी बेपरवाहीआ। धूढ़ी ख़ाक रमौणी कन्न नहीं पौणी मुंदर, सीस सवाह ना कोई सुटाईआ। वड़ना नहीं किसे डूंघी कुंदर, कंदर विच्च डेरा कोई ना लाईआ। तेरे कोलों खुल्हौणा आपणा कुफ्ल जंदर, पड़दा सैहजे देणा चुकाईआ। पूजा करनी नहीं किसे सुरपत इन्दर, गणपत गणेश विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान ना कोई लगाईआ। तूं मालक वड गजिंदर, फुनिंदर तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म देणा वरताईआ।

जन भगत कहण मालक सिध्धा हो के आ, वल छल खेल ना कोई खलाईआ। तुध बिन अवर ना दिसे कोई मलाह, मुलाहज़ेदार संग ना कोई बणाईआ। साचा मार्ग दस्स राह, रहबर हो के दे समझाईआ। मालक ख़ालक सांझा बण खुदा, खुदी तक्बर अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। वअज़ वहदत इक्को दे समझा, इबादत तेरा नाम नज़री आईआ। फ़ज़ल रहमत दे कमा, अज़ल लेखा दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आपणे चरन कँवल कर फ़िदा, माण हँकार अभिमान अंदरों बाहर देणा कढ्ढाईआ। (१७ जेठ श सं २ चूड़ सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे श्री भगवान कट्ट दुक्खड़ा, चिन्ता ग़म सोग ना कोई सताईआ। तेरी किरपा उजल होवे लोकमात मुखड़ा, मुख अन्तर आपणा नाम दे समझाईआ। मात गरभ औणा पए ना उलटा रुखड़ा, चुरासी वाली फासी दे कटाईआ। तेरे प्रेम प्यार अंदर सदा भुक्खड़ा, दे दरस भुक्खयां भुक्ख दे गवाईआ। साचे नाम दा बख्श अगम्मी टुक्कड़ा, जिस नूं खाधिआं तोट रहे ना राईआ। मानस जन्म जाए सुधरा, सुध्ध बुद्ध बिबेक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भंडारा दे वरताईआ।

जन भगत कहे प्रभ जन्म जन्म दी कट्ट तंगी, जगत कलेश रहण ना पाईआ। आत्म परमात्म बण संगी, धुर दा संग बणाईआ। नाम वस्त साची दात दे मंगी, अनडिठड़ी झोली पाईआ। दूई द्वैत अंदरों ढाह कंधी, अन्ध अज्ञान दे चुकाईआ । झगढ़ा रहे ना खानाबन्दी, चुरासी फासी नज़र कोई ना आईआ। साचा नाम ढोला गाईए छन्दी, छन्द आनंद तेरा नज़री आईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी विछड़ी आत्म तेरे नाल जाए गंढी, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के खुशी मनाईआ। तेरे साचे रस दी आवे इक्क सुगन्धी, दुरगन्धी दर रहे ना राईआ। एथे ओथे दो जहानां जन भगतां पिठ होए ना नंगी, पुशत पनाह आपणा हत्थ टिकाईआ। लोकमात वरभंडी विच्च होए मूल ना भंडी, भाण्डा भरम देणा भन्नाईआ। साचे नाम दी सति सतिवाद सुणौणी इक्क सुरंगी, सुर ताल दी लोड़ रहे ना राईआ। जन भगत आसा तेरा चरन भरवासा पुरख अबिनाशा सदा सदा सद रही मंगी, मांगत हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दे इक्क वर, हरि सन्त सुहेले गुर चेले ला आपणे अंगी, अंगीकार एकंकार निराकार आप अखवाईआ । (१७ जेठ श सं २ सेवा राम दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभ तेरा मेरा सांझा होवे रिश्ता, रिश्ता दुनी ना कोई वडयाईआ। नेड़ आए ना कोई फरिश्ता, जम दंड ना कोई लगाईआ। लहणा देणा पिछला मुक्क जाए आहिस्ता आहिस्ता, वेला वक्त गिआ आईआ। तेरे कोल आदि जुगादी सति फरिस्ता, हरिजन

आपणे लै जगाईआ। जिन्हां दे अंदर वड़ के साचा देवें निशचा, निहचल धाम देणा वखाईआ। इक्को पुरख अकाल हो के इष्टा, दृष्टी दा दीरघ रोग देणा मुकाईआ। मेहरवान हो के जन भगतां रहें दिसदा, लोचन नैण अक्ख बन्द ना कोई कराईआ। लहणा देणा देणा जिस जिस दा, दर घर जा के झोली पाईआ। हिसाब रक्खे पुरख अकाल इक्क इक्क दा, अभुल्ल भुल्ल विच्च कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उन्हां दा लेखा आप लिखदा, जिन्हां दी लिख्त अग्गे सके ना कोई मिटाईआ। (१७ जेठ श स २ धरमो देवी दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभ किरपा कर छेती, शहनशाह आपणी दया कमाईआ। भगत सुहेले बणा अन्तर आत्म दे भेती, पड़दा उहला दे चुकाईआ। अग्गे कोटन कोट तैनूं कह के गए नेती नेती, रसना जिह्वा ढोला सिफ्त सालाहीआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी बणया रिहों परदेशी, खोजयां हत्थ किसे ना आईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां नाल कर आपणी नेकी, निक्कयां तों वड्डे लै बणाईआ। तेरी याद करे ना कोई वेखा वेखी, सिध्धा आपणा रंग रंगाईआ। नाम संदेशा शब्द सुनेहड़ा धुर दा भेजीं, भजन बन्दगी इक्क समझाईआ। जलवा नूर देणा तेजी, तपदे हिरदे शांत कराईआ। प्रीती बणी रहे सच्चे नेंह दी, निहों अंदर इक्क जणाईआ। धार बरसे अमृत मेंह दी, अगनी अग्ग ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी बख्शणी इक्क सरनाईआ।

जन भगत कहे प्रभ झगढ़ा मुक्क जाए मोरा तोरा, तुरत पड़दा दे उठाईआ। शब्द अगम्मी भेज घोड़ा, आसण पलाणे, लोड़ रहे ना राईआ। नाद सुणा दे धुर दा दुहरा, सच सच जणाईआ । जन भगत बणा लै आपणा बांका छोहरा, स्त्री पुरुष वंड ना कोई वंडाईआ। आत्म परमात्म बणया रहे जोड़ा, जुग चौकड़ी होवे ना कदे जुदाईआ। सोहणा लगदा रहे तेरा सस्से उप्पर होड़ा, हाहे टिप्पी हरि हरि रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा आसा पूरी कर लोड़ा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, डोरी तेरे हत्थ नज़री आईआ। (१७ जेठ श सं २ देवा सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभू तूं आपणी कर दे रहमत, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। कूड़ी क्रिया अंदरों कढ्ढ दे ज़हिमत, जमां दा रोग चले ना राईआ। नाम भंडारा दे दे नयामत, निमख निमख तेरा ध्यान लगाईआ। गुरमुख कोई ना रहे अहिमक, मूढ़ां डेरा ढाईआ। आपणे शब्द इशारे दी दस्स अगम्मी सैनत, जगत नेत्र अक्ख ना कोई खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सरन देणा जणाईआ।

जन भगत कहे श्री भगवन्त बण धुर दा साथी, साथ आपणा दे निभाईआ। तेरी भेटा करना नहीं कोई ऐरापत, हाथी, असव भेट ना कोई चढ़ाईआ। सिमरन जोग ना पूजा पाठी, माला मणका ना कोई फिराईआ। जागया नहीं जांदा राती, जलधार सीस ना कोई गिराईआ। तीर्थां उत्ते मारी नहीं जांदी वाटी, वरका वरका ना कोई उलटाईआ। इक्को समझीए तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी इक्को जाती, दूजा नज़र कोई ना आईआ। तेरी सन्धया खेल प्रभाती, तेरा नूर नूर रुशनाईआ। दर्शन मंगीए इक्क इकांती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर देणी वडयाईआ।

जन भगत कहे प्रभ खोल्ह खलासा, खुशीआं दे वखाईआ। तेरा नूर होवे प्रकाशा, अन्ध अन्धेर दे मिटाईआ। साचे गृह साच मन्दर निरगुण सरगुण वेखे खेल तमाशा, शमां दीपक इक्को जोत होवे रुशनाईआ। जन भगतां पूरी कर आसा, असल आपणा आप समझाईआ। जन्म जन्म दा पूरा कर दे घाटा, घाट आपणे पार लंघाईआ। नैण उठा के साथों तक्कीआं नहीं जांदीआं वाटां, रातीं सुत्यां दिने जागदिआं सन्मुख हो के दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेले तेरीआं सच्चीआं शाखां, शनाखत तेरी रहीआं कराईआ। (१७ जेठ श सं २ लाल चन्द दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभ शब्दी धार गोबिन्द तेरा प्रगट, परगणे आपणे डेरा लाईआ। जिथ्थे कदे ना होवे मरघट, शमशान भूमी रूप ना कोई बणाईआ। इक्को इक्क साचा मिले अमृत रस, रस्ता रहबर हो के दे समझाईआ। आत्म परमात्म कर के वस, नाता कूड़ा दे छुडाईआ। निझ नेत्र खोल्ह के धुर दी अक्ख, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। धुर दवारा दस्स के इक्को सच, घर ठाकर स्वामी सज्जण लै मिलाईआ। सदा सुहेला रक्खणहारा पत, पतिपरमेशवर मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जन भगतां रहण ना देवीं कदे वक्ख, वक्खरे घर ना कोई टिकाईआ। मानस जन्म पंज तत्त काया चोला सभ ने जाणा छड्ड, हड्ड मास नाड़ी पिंजर कम्म किसे ना आईआ। सच दवारे हरिजन साचे जाणा वस, भगत भगवान मिल के इक्को रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, जन भगतां देवे अगम्मी वथ, अमृत आत्म रस लैणा चक्ख, चमका कूड़ रहे ना राईआ। (१७ जेठ श सं २ सेवा सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभ किरपा करीं आप, साड्डे विच्च ना कोई वडयाईआ। जन्म कर्म दा धोवीं पाप, काया माटी कर सफ़ाईआ। नाम भंडारा बख्श दात, सति सतिवादी झोली पाईआ। अंदर रहे ना अन्धेरी रात, कूड़ भरम देणा कढ्ढाईआ। सदा सदा सद

रहे तेरी याद, विछोड़े विच्च विछड़ कदे ना जाईआ। बिन तेरी किरपा होए ना कोई आबाद, घर साचा दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ।

जन भगत कहे आपणी आप कर किरपा, मैनूं दरसण दी लोड़ रहे ना राईआ। मेहरवान हो के कट्ट बिप्पता, दुखीआं दुःख दे गवाईआ। तूं आदि जुगादि सभ दा लेखा लिखदा, बिधना लेखा दे मिटाईआ। प्यार कर साचे हित दा, पिता पूत गोद उठाईआ। रूप दे दे साचे सिख दा, सिख्या धुर दी इक्क समझाईआ। अंदर झगड़ा रहे ना कोई कूड़ी विख दा, अमृत बूंद स्वांती मुख चवाईआ। जिध्धर वेखां ओधर सदा रहें दिसदा, चारों कुण्ट नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ।

जन भगत कहे प्रभ वेख मेरी हालत, आप आपणा ध्यान लगाईआ। बिन तेरी किरपा होवे ना सच इबादत, ढोला गीत ना कोई गाईआ। किरपा कर के बदल लै आपणी आदत, भगतां हो सच सहाईआ। माया ममता मेट जहालत, जहां तहां दे वडयाईआ। तेरा नाम पदार्थच मिले नयामत, रस खा खा खुशी मनाईआ। विकार रहे ना कोई अलामत, हँकार अंदरों देणा कढ्ढाईआ। लोकमात शब्दी धार दे ज़मानत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा दे वखाईआ।

जन भगत कहे प्रभ आ के वेख साड्डा हाल, हाल हाल कर दुहाईआ। जगत दुःखी होया वाल वाल, वलवले अंदरों ना कोई कढ्ढाईआ। पिता गोद उठाए ना कोई बाल, बचपन लेखे कोई ना पाईआ। अंदर बाहर गुप्त जाहर चले ना कोई नाल, सगला संग ना कोई मनाईआ। प्रेम प्यार दा वज्जे ना कोई ताल, दुक्खीआं दुःख रहे डराईआ। कूड़ी क्रिया विच्चों कर बाहल, अगला लहणा दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, जन भगत मंगे तेरी सरनाईआ।

जन भगत कहे मैं करां की, समझ समझ विच्च ना आईआ। जगत वासना नाता जुड़या पुत्तर धी, साक सम्बंध कुटम्ब गंढु पवाईआ। निर्मल होए ना अन्तर जीअ, पत्तत्त पवित पुनीत ना कोई कराईआ। झगड़ा रक्खे ना साढ्ढे तिन्न हत्थ सीं, सतिगुर सरन देवे ना कोई वडयाईआ। बिन तेरी किरपा अमृत बरखे कोई ना मींह, अगनी तत्त ना कोई बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद चरन बलिहारे जन भगतां मैं जावां थी, थान थनंतर इक्को दे वखाईआ। (१८ जेठ श सं २ महिंगा राम दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभ आ के वेख साड्डा रुक्खा सुखा टुक्कर, टुकड़िआं वाली वंड ना कोई वंडाईआ। जिस नूं खा के करीए तेरा शुकर, धन्न धन्न धन्न तेरी बेपरवाहीआ। मेहरवान निरगुण धारों आ उतर, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। कीता कौल इकरार ना जावीं मुकर, वेला वक्त दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ।

जन भगत कहे प्रभ आप आ के वेख साडा दलिद्दर, दलील सके ना कोई जणाईआ। भरमे फिरदे इधर उधर, साचा घर ना कोई बणाईआ। दे वड्डिआई वांग बिदर, कोझे कमले गले लगाईआ। निरगुण निरवैर हो जा मित्र, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। ग़रीब निमाणयां बणा मित्र, ममता आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ ।

जन भगत कहे प्रभ दरस करीए की पुकार, निउँ निउँ सीस नवाईआ। तूं सभ कुछ वेखणहार, अभुल्ल तेरी बेपरवाहीआ। जगत विच्च होए खुआर, घर घर पई दुहाईआ। सृष्टी ताअने रही मार, अणिआले तीर चलाईआ। छड्ड गए भैण भाई साक सज्जण यार, नाते कूड़े गए तुड़ाईआ। कर किरपा साचा दे अधार, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। कोटां विच्चों थोड़े तेरे नाम दा करन जैकार, नाअरा धुर दा इक्क लाईआ। कूड़ी क्रिया कलिजुग विच्चों कढ्ढ बाहर, बैरूनी लेखा दे मुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग तेरी करदे रहे इंतजार, उडीक विच्च ध्यान लगाईआ। अन्तम किरपा कर के मिलिउँ आण, आप आपणा फेरा पाईआ। नाउँ रक्ख के महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग साड्डा दे बदलाईआ। दुःख रहे ना विच्च जहान, दलिद्दर अंदरों दे तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे दवारिउँ जन भगत सुहेले मंगदे सच्चा दान, दानशमंदी आपणी प्रीती प्रीतम दे वरताईआ। (१८ जेठ श सम्मत २ सन्तो देवी दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभ नेड़े आ अग्गे, घर आ के वेख वखाईआ। साड्डे पाटे चीथड़ झग्गे, ओढ्ढण सीस ना कोई टिकाईआ । दुध्ध दहीं दे खाली मग्घे, अमृत रस ना कोई चखाईआ। दीपक सच कोई ना जगे, अन्ध अन्धेरा रिहा डराईआ। भुक्खे नंगे फिरदे भज्जे, नट्ठीए वाहो दाहीआ। साची वस्त कोई ना लभ्भे, दिवस रैण कुरलाईआ। इक्को तेरी सरन लग्गे, बाकी छड्डी सर्ब लोकाईआ। पढ़ने छड्डे कक्के खक्खे गग्गे घग्घे, सोहँ ढोला रहे गाईआ। दुःख दुनयावी सानूं दस्स वजह, क्यों मात रिहा तड़फाईआ। असीं छोटे नन्हे तेरे बच्चे, पिता पुरख अकाल हो सहाईआ। असीं बचन करदे सच्चे, दुःख आपणे रहे जणाईआ। बिन तेरी किरपा कदे ना होईए पक्के, कच्चे करे जगत लोकाईआ। इक्को आसा मनसा दर्शन करीए आपणी अक्खे, आखर मिल के खुशी मनाईआ। सुक्खां वाले खाईए भत्ते, भटकणा अवर रहे ना राईआ। कर्म माड़े जाण कट्टे, सुख मिले सभनी थाईंआ।

जगत मखौल करे ना ठड्डे, ठोकर सभ नूं दे लगाईआ। वैर रहे ना घड़े वट्टे, ठीकर कूड़ा भन्न दे सजाईआ। जो तेरा नाम रहे जपे, जामा उन्हां दा वेख वखाईआ। सरन सरनाई तेरी ढठ्ठे, सीस जगदीश हत्थ टिकाईआ। जन भगत कहण प्रभू सानूं चरनां विच्च कर लै इक्ठे, चार कुण्ट विछोड़े विच्च झल्ली ना जाए जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे दर दवार हरि भगत सुहेले सदा सदा सद आवण नट्ठे, अग्गे हो के ना कोई अटकाईआ। (१८ जेठ श सं २ प्रकाशो देवी)

* * * * *

जन भगत कहे क्यों भगत सुहेला मात औंदा, सचखण्ड निवासी आपणा फेरा पाईआ। क्यों निरगुण सरगुण वेस वटौंदा, जोती शब्दी धार बेपरवाहीआ। क्यों विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगौंदा, हुक्मे अंदर हुक्म लगाईआ। क्यों त्रैगुण माया पंज तत्त खेल खिलौंदा, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। क्यों लक्ख चुरासी वंड वंडौंदा, हुक्मे अंदर हुक्म वरताईआ। क्यों चारे खाणी रूप धरौंदा, अंडज़ जेरज उत्भुज सेहतज आपणा भेव जणाईआ। क्यों चारे बाणी शब्द अलौंदा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी गाईआ। क्यों चारे वेद जणौंदा, ब्रह्म वेता कर पढ़ाईआ। क्यों चारे कुण्ट सुहौंदा, उतर पूरब पच्छिम दक्खण कर रुशनाईआ। क्यों चारे वरन बणौंदा, शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश वंड वंडाईआ। क्यों ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पताल रचौंदा, क्यों धरनी धरत धवल जल विच्च समाईआ। क्यों समुंद सागर खेल खलौंदा, नदीआं नाले वंड वंडाईआ। क्यों टिल्ले परबत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उपजौंदा, पत्त टहणी क्यों लहराईआ। क्यों जीवण मरन बणौंदा, घड़िआ भन्न वखाईआ। क्यों निरगुण हो के सरगुण हुक्म वरतौंदा, शब्दी शब्द करें शनवाईआ। क्यों गुर अवतार पीर पैगम्बर वेस वटौंदा, नव सत फेरा पाईआ। क्यों भगत भगवान राग अलौंदा, अनहद नादी नाद वजाईआ। क्यों सन्त सुहेले मात प्रगटौंदा, साधना धुर दी दएं समझाईआ। क्यों गुरमुख गुर गुर हो के गोद उठौंदा, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। क्यों गुरसिख आपणे रंग रंगौंदा, रंग रतड़ा शहनशाहीआ। क्यों अठ्ठ सठ तीर्थ वंड वंडौंदा, हुक्में अंदर हुक्म भवाईआ। क्यों खाणी बाणी रचन रचौंदा, निरअक्खर अक्खरां विच्चों प्रगटाईआ। क्यों पंज तत्त मन्दर आप सुहौंदा, गृह बह के सोभा पाईआ। क्यों काम क्रोध लोभ मोह हँकार धार चलौंदा, सृष्टी दृष्टी नाल मिलाईआ। क्यों मन मत बुद्ध विचार वखौंदा, सोच समझ दा गेड़ा दित्ता भवाईआ। क्यों भूत भविख आपणी कार कमौंदा, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। क्यों दीन दुनी मिटौंदा, तत्त रहण ना कोई पाईआ। क्यों विद्या विद्यालिआं विच्च पढ़ौंदा, धुर संदेशा हुक्म सुणाईआ। जन भगत कहे प्रभ क्यों नहीं सरगुण आप वेस वटौंदा, मोहे भेव दे खुल्हाईआ। दोए जोड़ बेनन्ती सीस चरन निवौंदा, निउँ निउँ लागाँ पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा इक्क दृढ़ाईआ।

जन भगत कहे प्रभू क्यों बणिओ अगम्म अथाह, की तेरी बेपरवाहीआ। कोटन

कोट ब्रह्मण्ड खण्ड दित्ते रचा, रव सस करन रुशनाईआ। मण्डल मण्डप दित्ते सुहा, हुक्में अंदर हुक्म मनाईआ। वेस अनेकां लए वटा, रूप रंग ना किसे जणाईआ। खेलें खेल हरि घट थां, नूर नुराना कर रुशनाईआ। तेरा लेखा जाणे कोई ना, बेअन्त हो के बेअन्त विच्च डेरा लाईआ। क्यों सभ दा बणया पिता मां, क्यों गोद रिहा उठाईआ। क्यों हँस बणाए कां, क्यों कागों हँस उडाईआ। क्यों देवें ठंडी छाँ, क्यों सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। क्यों आवण जावण खेल दित्ता रचा, राए धर्म वंड वंडाईआ। क्यों लेखा लिखाएं थाउँ थां, चित्रगुप्त बैठा सेव कमाईआ। क्यों लाड़ी मौत लई उपजा जो घड़िआ भन्न वखाईआ। जन भगत कहे प्रभ मेरा पड़दा दे लाह, भेव अभेदा रहे ना राईआ। तूं मालक महिबूब मेरा खुदा, खुद इक्को नज़री आईआ। तेरा ढोला गीत रिहा गा, गहर गम्भीर तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी हुक्म अंदर दे समझा, बुद्धि दी लोड़ रहे ना राईआ। (१८ जेठ श सं २ गुरदित सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभू क्यों आवें जगत, सति सच दे दृढ़ाईआ। क्यों प्रगट करें आपणी शक्त, शक्ती आपणे विच्चों उपाईआ। क्यों उधारें साचे भगत, भगवन हो के वेख वखाईआ। क्यों इक्को ढोला दस्सें फ़कत, फ़िकरा सच पढ़ाईआ। क्यों सुहावें सच वक्त, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। क्यों जोधा सूरबीर मरदान बणया मरद, निरगुण हो के भज्जें वाहो दाहीआ। क्यों गरीब निमाणयां वंडें दर्द, दुखीआं दुःख आपणी झोली पाईआ। क्यों शरअ छुरी चलाई करद, कातल मकतूल आपणा खेल वखाईआ। क्यों बेनन्ती सुणें अर्ज़, क्यों चरनां उत्ते मस्तक रिहा रगढ़ाईआ। जन भगत कहे प्रभू पड़दा खोल्ह कर नापड़द, उहला काया चोला रहण कोई ना पाईआ। जन भगत कहे प्रभू क्यों आवें मात, मित्र प्यारे मैनूं दे समझाईआ। क्यों बणाए दिवस रात, घड़ी पल वंड वंडाईआ। क्यों खेलें खेल तमाश, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी रास रचाईआ। क्यों सुरती शब्दी करें नाच, नटूआ हो के सांग कराईआ। क्यों शब्द सुनेहड़े देवें साच, क्यों जूठ झूठ उपजाईआ। क्यों सेजा सोवें जगत खाट, क्यों अन्तर आत्म बह के खुशी मनाईआ। क्यों जुग चौकड़ी कट्टें वाट, निरगुण सरगुण बण के पान्धी राहीआ। क्यों भगतां देवें साथ, सच देणा समझाईआ । क्यों बणें त्रिलोकी नाथ, क्यों सलोकी ढोला गाईआ। क्यों कहें भविख्त वाक, हुक्म नाल हुक्म बदलाईआ। क्यों सेवक करें चाक, चाकर रूप धराईआ। जन भगत कहे मेरी पूरी करदे आस, तृष्ना तृखा दे गवाईआ। क्यों लोकमात निरगुण जोत करें प्रकाश, नूर नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल दस्स ख़ास, ख़सूसीअत ख़सम हो के दे जणाईआ। (१६ जेठ श सं २ संसार सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभ क्यों दित्ता ख़ाकी तन, नाता तत्तां नाल जुड़ाईआ। क्यों बख्शया बुद्धि मन, मेहर नज़र उठाईआ। क्यों जणाए सरवण कन्न, साची वंड वंडाईआ। क्यों बख्शया माल धन, खज़ीना बेपरवाहीआ। क्यों बणाया आपणा जन, जन्म कर्म दे दृढ़ाईआ। क्यों पड़दा रखवाया विच्च ब्रह्म, पारब्रह्म लेखा दे चुकाईआ। क्यों खुशी रक्खी ग़म, चिन्ता नाल मिलाईआ। क्यों पवण स्वास दिता दम, रसना जेहवा नाल वडयाईआ। क्यों हड्ड नाल जोड़िआ चम्म, रक्त बूंद वंड वंडाईआ। क्यों प्रकाश कीता साचा नूर जोत चन्न, सीतल धार क्यों प्रगटाईआ। क्यों बणाया मात कर्म, कांड क्यों झोली पाईआ। क्यों वंड वंडाई जात पात धरम, मज़्हब बणया रिहा नादान, जग वेखण कोई ना पाईआ। क्यों हुक्म हाकम बणाए विधान, क्यों हकूमत रिहा चलाईआ। जन भगत कहे प्रभू आपणा खोल् के दे बिआन, बेईमानी विच्च ना कोई रखवाईआ। क्यों होइउँ जाणी जाण, हर घट वेखे थाउँ थाईंआ। क्यों कलिजुग अन्त बणिउँ तरखाण, तिक्खी धार आप प्रगटाईआ। क्यों बदलिआ रूप महान, वेस जट्टां वाला वखाईआ । क्यों मारन आयो अफ़गान, फ़ैसला हक़ हक़ सुणाईआ। क्यों खाली करन आयो मैदान, मदद अवर ना कोई मंगाईआ। क्यों सृष्टी कीती हैरान, हिरदे हरि ना कोई ध्याईआ। क्यों शब्दी सुत लिआया नाल जवान, जोबनवन्ता नज़री आईआ। क्यों आपणे हत्थ फड़ी कमान, कामल मुशर्द फेरा पाईआ। क्यों दो जहान बणिउँ प्रधान, प्रधानगी आपणी रिहा वखाईआ। जन भगत कहे प्रभू जुग जुग क्यों नहीं बैठदा नाल आराम, झंजटा विच्च झंजट पा के झगढ़ा वेखें जगत लोकाईआ। अबिनाशी करता कहे जुग चौकड़ी छेड़ छेड़नी मेरा काम, सभ दी करनी करनी नाकाम, मन मत बुद्ध मेटणी तमाम, कूड़ा रहण ना देणा हराम, शरअ शरीअत मेट शैतान, इक्को रूप नज़री आए सभ नूं भगवान, भगवन्त हो के आपणी खेल खिलाईआ। (१६ जेठ श सं २ खेमो देवी दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभू क्यों बणाए लोक परलोक, क्यों परलों आपणे हुक्म विच्च रखवाईआ। क्यों हर घट थां प्रकाश कीती जोत, आपणे नूर नाल चमकाईआ। क्यों शब्द अगम्मी लावें चोट, सोए सर्ब उठाईआ। क्यों सहावें किला कोट, बंक दवारे दएं वडयाईआ। क्यों जणावें सच सलोक, आपणा नाम करें पढ़ाईआ। क्यों बख्शे मुक्ती मोख, क्यों मुफ्त आपणे विच्च समाईआ। क्यों निरगुण हो के सरगुण करें खोज, वेखें थाउँ थाईंआ। क्यों प्रीतम हो के प्यार दा करें चोज, चोले अंदर वज्जे वधाईआ। क्यों बिरहों विछोड़ा लाया रोग, याद रही सताईआ। क्यों बैरागी बख्शया जोग, जोगीशर दित्ते भटकाईआ। क्यों अमृत रस दी दे के चोग, सांतक सति दएं कराईआ। क्यों बख्शें दरस अमोघ, चिन्ता ग़म मिटाईआ। क्यों भोगें साचा भोग, आत्म सेजा डेरा लाईआ। क्यों मिलाएं सच संजोग, मेला सहज सुभाईआ। क्यों करें वियोग, दो जहानां सदा जुदाईआ। क्यों लक्ख चुरासी अंदर देवें झोक, जूनीआं विच्च भवाईआ। क्यों दुःख देण दा तैनूं शौंक, जन भगत कहे मैनूं दे समझाईआ। तैनूं कोई ना सके रोक, क्यों तेरी बेपरवाहीआ। जन भगत कहे प्रभू तेरा खेल वेख्या बहुत, गिणती विच्च ना कोई गिणाईआ। क्यों खुमारी अंदर

करें मदहोश, सुरती सुरत भुलाईआ। क्यों बैठा रहें खामोश, सुन समाध डेरा लाईआ। क्यों भाग लगावें काया माटी पोश, पुशत पनाह आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद दर्शन देवे रोज़, रजा आपणी विच्च मनाईआ। (१६ जेठ श सं २ पूरन चन्द)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभू क्यों कीता आपणा आप प्रकाश, क्यों नूर नूर रुशनाईआ। क्यों सच स्वामी हो के पावें रास, गोपी काहन रूप वटाईआ। क्यों वसें आपणे पास, आप आपा दे समझाईआ। क्यों प्रगट होइउँ ख़ास, ख़सम हो के हुक्म वरताईआ। क्यों सेवक बणिउँ दास, सेवक सेवा सच कमाईआ। क्यों तृष्ना रक्खी आस, क्यों ममता मोह जणाईआ। क्यों भुक्ख बणाई प्यास, सहजे दे समझाईआ। क्यों बणिउँ सर्ब गुणतास, गुणवन्ता नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणाए आपणी शाख, शरअ दित्ती प्रगटाईआ। क्यों कर के मातलोक उदास, अन्तम नाते लए तुड़ाईआ। क्यों भगतां पुछें बात, नित्त नवित्त फेरा पाईआ। क्यों सोहणा वेला बणाया परभात, क्यों संध्या ढोले गाईआ। क्यों लेखा लिखया पट्टी नाल कलम दवात, क्यों अक्खरां जोड़ जुड़ाईआ। क्यों सन्तां दएं शाबाश, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। क्यों पतण बणाया घाट, क्यों गुरमुखां पार लंघाईआ। क्यों नेरन नेरे रक्खी वाट, गुरसिखां दएं समझाईआ। क्यों झगढ़ा पाया जात पात, दीन मज़्ब रिहा टकराईआ। क्यों जीवण रक्खया वफ़ात, क्यों मुरदा मुरीद विच्च समाईआ। क्यों अंदरे अंदर धुन आत्मक जणाएं आपणी बात, बातन हो के करें शनवाईआ। क्यों भगतां सच सुनेहड़ा जाएं आख, आख़र आपणा हुक्म मनाईआ। क्यों झगड़ा पावण वाला इस विसाख, वसा के सभ नूं रिहा हलाईआ। क्यों खिड़की खोलें ताक, क्यों कुण्डे रिहा खड़काईआ। क्यों हो के पुरख अबिनाश, भगतां रिहा तड़पाईआ। क्यों दिन्दा नहीं आपणी दात, दातार हो के झोली पाईआ। जन भगत तैनूं कह बैठ्ठ इक्को बाप, पिता पुरख अकाल नज़री आईआ। पूरा कर गोबिन्द वाला वाक, वखत पए ते जगत विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। सभ दे वेख हालात, हालांकि बदली नहीं बदलण दा वेला रही तकाईआ। कलिजुग कूड़ी रहणी नहीं जमात, जमां ने घेरा लैणा पाईआ। जन भगत कहे प्रभू तूं उन्हां पुच्छणी बात, जेहड़े तेरा इक्को नाम ध्याईआ। क्यों कलिजुग अन्तम मुक्कणी वाट, वट्टा रहण कोई ना पाईआ। क्यों सूरबीर जोधा बणे राठ, हुक्मे अंदर हुक्म भवाईआ। क्यों शौह दरयाए लहर मारे ठाठ, अमृत धारा इक्क वहाईआ। क्यों बणे साचा घाट, पतण बहि के खुशी मनाईआ। क्यों भगतां होवें दास, दस्स के देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन कोई ना पुच्छे बात, वतन बेवतनां होए ना कोई सहाईआ। (१८ जेठ श सं २ अंगरेज़ सिँघ)

* * * * *

जन भगत कहे क्यों रचन रचाई, रचनहारे दे समझाईआ । क्यों त्रैगुण माया उपजाई, आपणा हुक्म वरताईआ। क्यों पंज तत्त करी कुड़माई, नाता जोड़या सहज सुभाईआ। क्यों प्रकृती विच्च टिकाई, दित्ती माण वडयाईआ। क्यों सुरती शब्द भुलाई, पड़दा दित्ता रखवाईआ। क्यों मूरत अकाल छुपाई, नज़र किसे ना आईआ। क्यों सुर ताल वजाई, नादी नाद शनवाईआ। क्यों घर मन्दर बणत बणाई, गृह आपणा रंग चढ़ाईआ। क्यों जोत निरञ्जण डगमगाई, आदि निरञ्जण वंड वंडाईआ। क्यों टेडी बंक सुहाई, भवर गुफा क्यों चतुराईआ। क्यों सहँस कँवल रिहा भवाई, दल आपणा नाल मिलाईआ। क्यों ईड़ा पिंगल करी कुड़माई, हुक्म इक्क वरताईआ। क्यों मारू डण्ड विच्च कीते शुदाई, बुद्धि चली ना कोई चतुराईआ। क्यों सवा गिठ वंड वंडाई, हिसा आपणा आपे पाईआ। क्यों नैणां पिच्छे नैण कीता रुशनाई, तीजी अक्ख खुल्हाईआ। क्यों बण के ब्रह्म गुसाईं, पारब्रह्म अखवाईआ। क्यों आत्म नूर रुशनाई, रूह बुत्त वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दे इक्क वर, वारता आपणी दे दृढ़ाईआ।

जन भगत कहे क्यों बणाया तत्त वजूद, हरि साचे दे समझाईआ। क्यों बणाया काया माटी कच्च कलबूत, कंचन गढ़ सुहाईआ। क्यों सुहाया अरूज, सच दवारे डेरा लाईआ। क्यों बणिउँ निर्मल महिबूब, मुहब्बत आपणा रंग रंगाईआ। क्यों ना देवें आपणा सच सबूत, सबर सबूरी विच्च समझाईआ। क्यों भज्जा फिरें चारे कूट, दह दिशा वाहो दाहीआ। क्यों उपजाया जूठ झूठ, माया ममता मोह हलकाईआ। क्यों अंदरों गिउँ रूठ, आपणा मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा नज़र आ मौजूद, घर साचे सोभा पाईआ।

जन भगत कहण क्यों रचन लिआ रच, रच रच वेख वखाईआ। क्यों भाण्डा बणाया काया माटी कच्च, तन माटी सोभा पाईआ। क्यों आत्म रक्खी सच, वज्जे सच वधाईआ। क्यों लूं लूं अंदर रिहा रच, आपणा आप छुपाईआ। क्यों लुकाया ब्रह्मत, पारब्रह्म दे दृढ़ाईआ। क्यों उपजाया धीरज जत, सति सन्तोख नाल मिलाईआ। क्यों उबले बहत्तर नाड़ी रत, तिन्न सौ सठ हाडी रही कुरलाईआ। जन भगत कहे प्रभू क्यों खेल खिलाया जगत, जग जीवण दाते दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, क्यों सृष्टी लाई अग्ग, तृखा तृष्ना विच्च तपाईआ। (१८ जेठ शी सं २ लछमण सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे क्यों मालक बणिउँ धुर, दरगाह साची सोभा पाईआ। क्यों प्रगट कीते पैगम्बर अवतार गुर, हुक्म संदेशे नाल सुणाईआ। क्यों खेल खलाया देवत सुर, करोड़ तेतीसा वज्जे वधाईआ। क्यों निरगुण सरगुण हो के रिहों जुड़, मेला मेलें थाउँ थाईंआ। क्यों लोकमात आवें मुड़, नित्त नवित्त फेरा पाईआ। क्यों चार कुण्ट दह दिशा रिहों

तुर, नव नौं भज्जें चाईं चाईंआ। क्यों फुरना हो के रिहों फुर, फुरने अंदर सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा दे उठाईआ।

जन भगत कहे क्यों उपजाए रिखी मुनी, मुनीशर क्यों वडयाईआ। क्यों बणाया दीन दुनी, दोहरी धार चलाईआ। क्यों विद्यावान कीते गुणी, गहर गम्भीर दे समझाईआ। क्यों भाग लगावें काया कुंनी, काअबा गृह गृह दएं प्रगटाईआ। क्यों वस्त अमोलक दएं अनमुली, अनमंगी दौलत झोली पाईआ। क्यों सृष्टी तैनूं भुल्ली, प्रभ सैहजे दे समझाईआ। क्यों जगत अन्धेरी झुल्ली, चारों कुण्ट धक्का रही लगाईआ। क्यों दृष्ट इष्ट किसे ना खुल्ही, नेत्र नैण ना कोई रुशनाईआ। क्यों अमृत धार सभ दी डुल्ल्ही, निझर रस ना कोई पिआईआ। जन भगत कहण प्रभू तेरी फुलवाड़ी किस बिध मात फुल्ली, सच सच दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां लेखे लाए सच प्रीती घोल घुली, घाल सभ दी झोली पाईआ। (१६ जेठ श सं २ वजीरो देवी दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे किरपा कर प्रभ गहर गम्भीर, गवर सबर आपणा दे बंधाईआ। अन्तर आत्म साचा अमृत बख्श सीर, सीर खार बच्चे सारे मंग मंगाईआ। तन मन रहे ना हउमें पीड़, दुखीआं दर्द दे गवाईआ। तेरे मिलण दी इक्को रहे रीझ, दूजा ध्यान ना कोई लगाईआ। तन माटी ठांडी होवे सीझ, अगनी अग्ग ना लागे राईआ। जुग चौकड़ी गए बीत, झल्ल झल्ल थक्के तेरी जुदाईआ। लभ्भदे रहे ठाकर मन्दर विच्चों मसीत, मसला हल ना कोई कराईआ। रसना जेहवा गौंदे रहे गीत, दिवस रैण कूक कूक सुणाईआ। मानस जन्म किसे ना लिआ जीत, नाता छुट्टया ना जगत लोकाईआ। पुरख अकाल तेरी करदे रहे उडीक, राह तक्कदे थाउँ थाईंआ। साड्डी पूरी कर उम्मीद, आसा तृष्ना दे गवाईआ। नाम भंडारा झोली पा भीख, भिख्खया आपणी इक्क वरताईआ। सिर हत्थ रक्ख जगदीश जगदीशर तेरी बेपरवाहीआ। कलिजुग माया ममता रही पीस, मेहर नज़र पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणे लैणा टिकाईआ।

जन भगत कहे प्रभ चुका दे झेड़े, झंजट रहण कोई ना पाईआ। उजड़े वसा दे खेड़े, घर साचे मिले वडयाईआ। असीं बालक बच्चे नंन्हे तेरे, दूजा पिता ना कोई बणाईआ। चुरासी कट्टदे अगले गेड़े, जन्म जन्म ना कोई भवाईआ। चार जुग धक्के खाधे बथेरे, भज्जे वाहो दाहीआ। बिन पुरख अकाल तेरे कोई ना आया नेड़े, संगी साथी सारे गए तजाईआ। चरन कँवला लवा डेरे, डेरा आपणा इक्क बणाईआ। शब्दी हुक्म कर घेरे, घिरना अंदर रहे ना राईआ। सदा बहा आपणे खुल्ले विहड़े, जिथ्थे दुःख दर्द ना लागे राईआ। जमदूत ना आवे नेड़े, फास गल ना कोई लटकाईआ। सच चढ़ा आपणे बेड़े, बाहों फड़ जगत उठाईआ। तूं सतिगुर हउँ बालक तेरे चेरे, तूं ही राग अलाईआ। क्यों मेहरवान हो के नखेड़े, विखरे आपणे नाल जुड़ाईआ। कुड़ी क्रिया जगत रहण ना झेड़े, मनुआ करे ना कोई लड़ाईआ। जगत वासना चिक्कड़ नाल लिबेड़े, दुरमत मैल दे धवाईआ। दूर दुराडे वस आ के नेड़े,

आपणा पन्ध मुकाईआ। कोटां विच्चों थोड़े भगत जेहड़े बैठे रक्ख के वड्डे जेरे, जेरज़ अंडज़ उत्भुज सेहतज विच्चों देणा बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान मेहर नज़र कर मेहरे, मेरा तेरा तेरा मेरा रहण कोई ना पाईआ। (१६ जेठ श सं २ चरन जीत सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे मैं सार ना जाणा तेरी, तेरा भेव कोई ना आईआ। बण सेवक घर दी चेरी, गोली हो सेव कमाईआ। शौह दरया डुब्बण ना देवीं बेड़ी, पार किनारे आप लगाईआ। कलिजुग अन्त करीं ना हेरा फेरी, बेपरवाह बेपरवाही विच्च समाईआ। सानूं नज़र औंदी गुरमुख कहे राम वेले एथे हुंदी सी इक्क बेरी, बेर कच्चे पक्के दोवें रंग वटाईआ। इक्क अयाली लाई ढेरी, तोड़ तोड़ के खुशी मनाईआ। अंदर आसा कीती वधेरी, बहु ममता लई प्रगटाईआ। साचा राम मारे फेरी, बण के पान्धी राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वरताईआ।

जन भगत कहे प्रभ फेरा पा, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। अयाली दासी जीउणा नां, मापे खुशीआं नाल सुणाईआ। अन्तर बैठा ध्यान लगा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जिन्हां चिर मेरा राम ना जावे आ, मैनूं सुरत रहे ना राईआ। मार के उच्ची धाह, कूक कूक दिता सुणाईआ। भीलणी दी ते मेरी मां दी इक्को मां, भणेवां ओसे दा नज़री आईआ। जिन्हां चिर ना दरश देवें आ, झल्ली ना जाए जुदाईआ। राम शब्दी रूप वटा, भज्जया वाहो दाहीआ। सहजे पहुंचया आ, फड़ बाहों दित्ता हिलाईआ। नैण लिआ खुल्हा, खुशी विच्च ताली दित्ती लगाईआ। वाह मेरे बेपरवाह, तेरे हत्थ वडयाईआ। राम ने विच्चों पंज बेर लए खा, अद्धा हिस्सा उस दे मूंह विच्च पाईआ। फिर सहजे सहजे दित्ता समझा, इशारे नाल दृढ़ाईआ। जिस वेले त्रेता द्वापर गिआ विहा, कलिजुग अन्ध अन्धेरा छाईआ। राम दा राम तेरा अगला लेखा दए चुका, बाकी तेरे हत्थ फड़ाईआ। निरगुण हो के देवे दरस दिखा, जोती जाता शहनशाहीआ। मेहर नज़र लए उठा, मेहरवान हो के वेख वखाईआ। अयाली निउँ के सीस दित्ता झुका, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। की उह इकल्ला आवे तेरे वांग आपणा आप लुका, पड़दा जगत रखाईआ। राम किहा नहीं, उह सन्त सुहेले नाल मिला, गुरमुख साचे संग लिआईआ। तेरे दवारे देवे भाग लगा, भगवान हो के होए सहाईआ। बच्चे किहा की मैनूं लवे पहचान, निरगुण पड़दा दए उठाईआ। राम किहा हां उह करे ध्यान, दाता बेपरवाहीआ। प्रेम प्यार दा खावे पकवान, कच्चयां तों पक्के दए बणाईआ। पूरब लेखा चुक्कया आण, पुरख अकाल दित्ती वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछला लहणा देवा सिँघ दा देणा दे के खुशी मनाईआ। (१६ जेठ श सं २ देवा सिँघ दे गृह)

* * * * *

* * * * *